



Ankush Dnyaneshwar palekar

02 Apr 1993

03:50 AM

Sinnar

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121391501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 1-02/04/1993
दिन _____: गुरु-शुक्रवार
जन्म समय _____: 03:50:00 घंटे
इष्ट _____: 53:24:28 घटी
स्थान _____: Sinnar
राज्य _____: Maharashtra
देश _____: India

अक्षांश _____: 19:50:52 उत्तर
रेखांश _____: 73:59:20 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:34:03 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 03:15:57 घंटे
वेलान्तर _____: -00:03:54 घंटे
साम्पातिक काल _____: 15:57:04 घंटे
सूर्योदय _____: 06:28:12 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:48:02 घंटे
दिनमान _____: 12:19:50 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 18:25:45 मीन
लग्न के अंश _____: 27:51:00 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर - शनि
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: पुष्य - 3
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: सुकर्मा
करण _____: तैतिल
गण _____: देव
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: हो-होशियार
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मेष

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1915	चैत्र	12
पंजाबी	संवत : 2049	चैत्र	20
बंगाली	सन् : 1399	चैत्र	19
तमिल	संवत : 2049	पंगुनी	20
केरल	कोल्लम : 1168	मीनम	19
नेपाली	संवत : 2049	चैत्र	20
चैत्रादि	संवत : 2050	चैत्र	शुक्ल 10
कार्तिकादि	संवत : 2050	चैत्र	शुक्ल 10

पंचांग

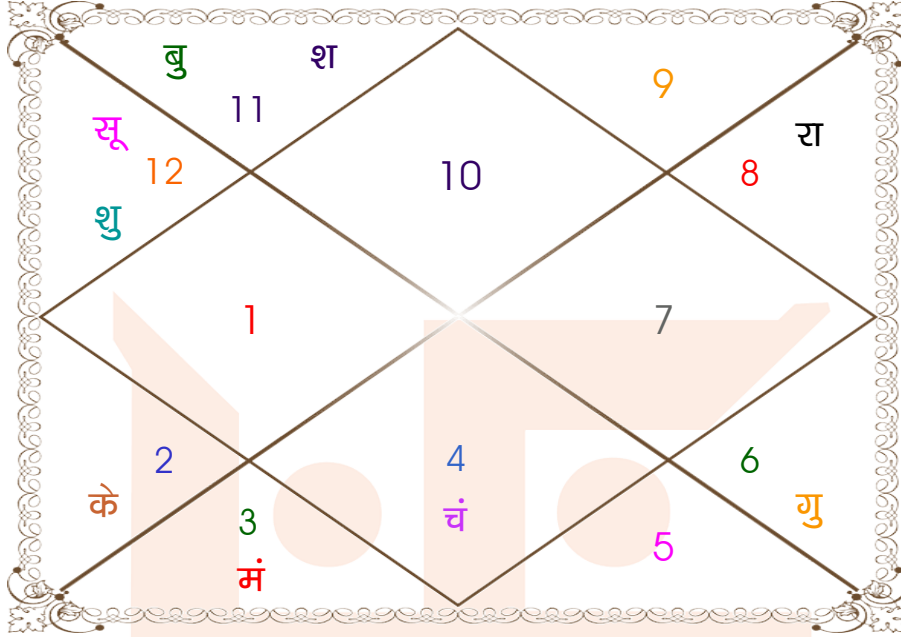
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 9
 तिथि समाप्ति काल _____ : 19:36:41
 जन्म तिथि _____ : 10
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुनर्वसु
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 14:52:24 घंटे
 जन्म योग _____ : पुष्य
 सूर्योदय कालीन योग _____ : अतिगण्ड
 योग समाप्ति काल _____ : 12:53:31 घंटे
 जन्म योग _____ : सुकर्मा
 सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
 करण समाप्ति काल _____ : 08:28:18 घंटे
 जन्म करण _____ : तैतिल
 भयात _____ : 32:24:01
 भभोग _____ : 56:36:24
 भोग्य दशा काल _____ : शनि 8 वर्ष 2 मा 9 दि

घात चक्र

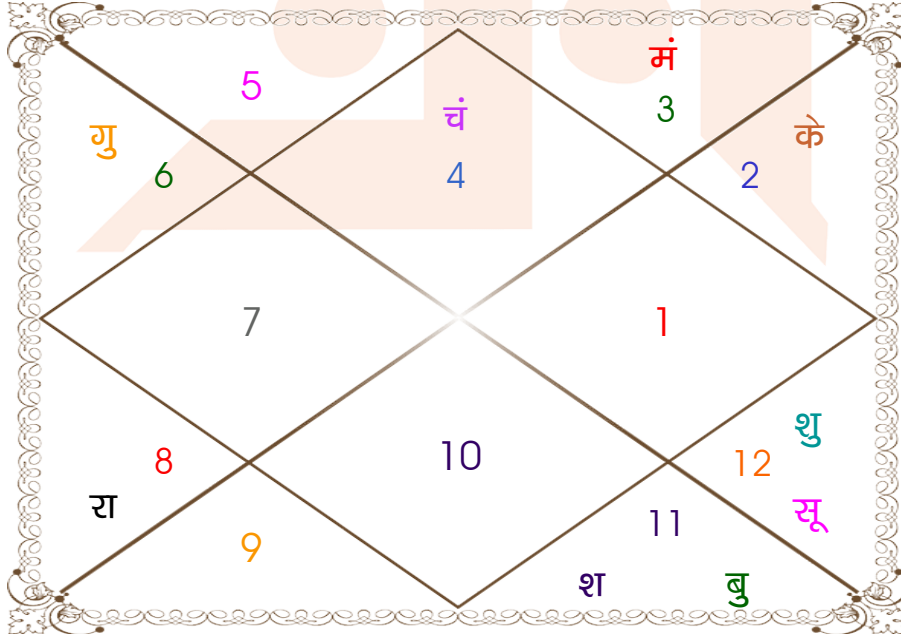
मास _____ : पौष
 तिथि _____ : 2-7-12
 दिन _____ : बुधवार
 नक्षत्र _____ : अनुराधा
 योग _____ : व्याघात
 करण _____ : नाग
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : श्वान
 लग्न _____ : तुला
 सूर्य _____ : सिंह
 चन्द्र _____ : सिंह
 मंगल _____ : कन्या
 बुध _____ : मिथुन
 गुरु _____ : तुला
 शुक्र _____ : वृश्चिक
 शनि _____ : कर्क
 राहु _____ : धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

शु सू		के	मं
श बु			चं
ल			
	रा		गु

लग्न कुंडली

के		शु सू	श बु
मं			ल
चं			रा
गु			

विंशोत्तरी
शनि 8वर्ष 2मा 9दि
शनि

02/04/1993

12/06/2102

शनि	11/06/2001
बुध	11/06/2018
केतु	11/06/2025
शुक्र	11/06/2045
सूर्य	11/06/2051
चन्द्र	11/06/2061
मंगल	11/06/2068
राहु	11/06/2086
गुरु	12/06/2102

योगिनी
धान्या 1वर्ष 3मा 15दि
पिंगला

18/07/2025

18/07/2027

पिंगला	27/08/2025
धान्या	27/10/2025
भामरी	16/01/2026
भद्रिका	28/04/2026
उल्का	28/08/2026
सिद्धा	17/01/2027
संकटा	28/06/2027
मंगला	18/07/2027



FUTUREPOINT
Astro Solutions



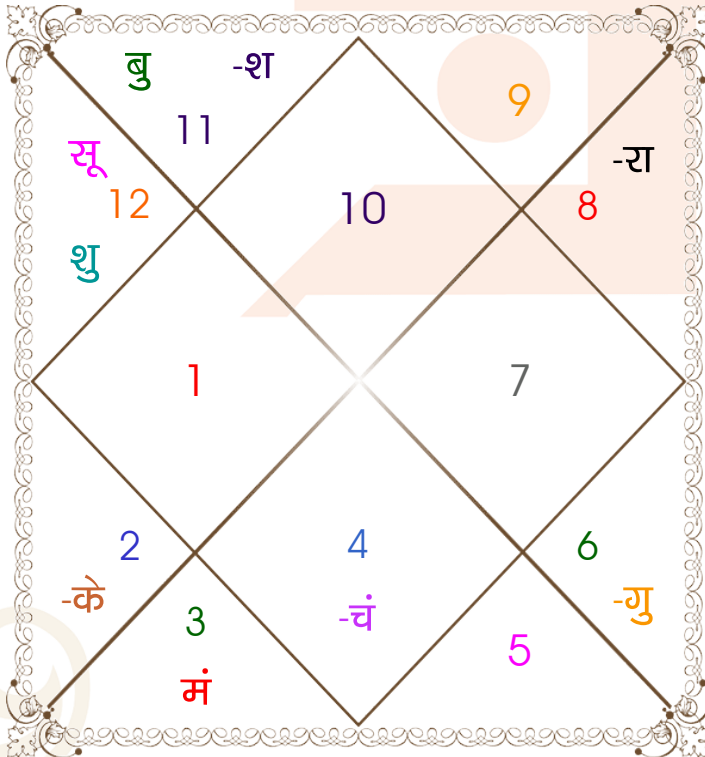
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	27:51:00	423:40:49	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	---
सूर्य			मीन	18:25:45	00:59:10	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	10:55:04	14:09:46	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	सूर्य	स्वराशि
मंगल			मिथु	24:58:16	00:22:50	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	शत्रु राशि
बुध			कुंभ	21:01:17	00:47:44	पूर्वाभाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	सम राशि
गुरु	व		कन्या	15:43:04	00:07:43	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	शत्रु राशि
शुक्र	व		मीन	17:48:47	00:37:52	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	उच्च राशि
शनि			कुंभ	02:55:32	00:05:46	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	शुक्र	मूलत्रिकोण
राहु	व		वृश्चि	20:32:34	00:03:06	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
केतु	व		वृष	20:32:34	00:03:06	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	सम राशि
हर्ष			धनु	28:10:18	00:01:14	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	चंद्र	---
नेप			धनु	27:15:49	00:00:42	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	---
प्लूटो	व		वृश्चि	01:25:44	00:01:05	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	---
दशम भाव			वृश्चि	07:37:40	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	केतु	--

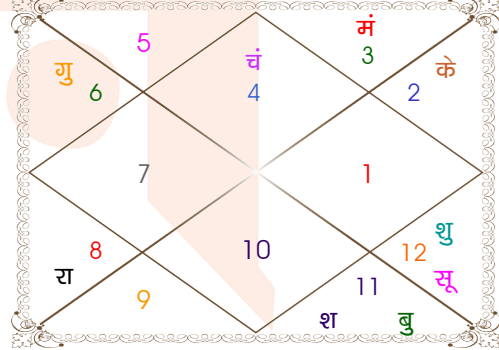
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:46:02

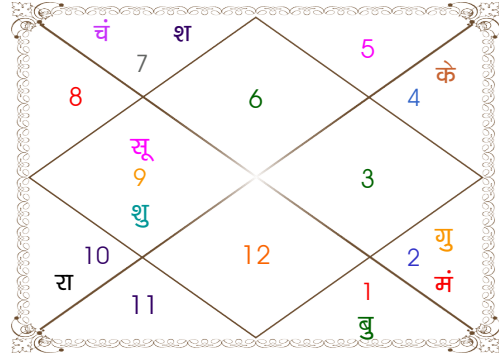
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मकर 14:28:46	मकर 27:51:00
2	कुम्भ 14:28:46	मीन 01:06:33
3	मीन 17:44:20	मेष 04:22:06
4	मेष 20:59:53	वृष 07:37:40
5	वृष 20:59:53	मिथुन 04:22:06
6	मिथुन 17:44:20	कर्क 01:06:33
7	कर्क 14:28:46	कर्क 27:51:00
8	सिंह 14:28:46	कन्या 01:06:33
9	कन्या 17:44:20	तुला 04:22:06
10	तुला 20:59:53	वृश्चिक 07:37:40
11	वृश्चिक 20:59:53	धनु 04:22:06
12	धनु 17:44:20	मकर 01:06:33

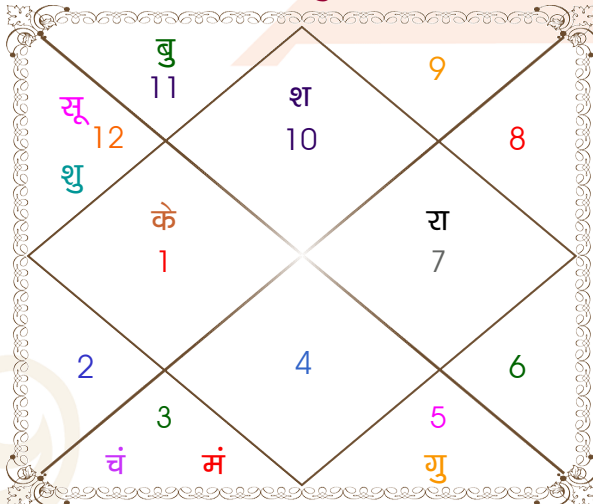
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	27:51:00
2	मीन	05:20:51
3	मेष	09:15:09
4	वृष	07:37:40
5	मिथुन	02:49:04
6	मिथुन	28:14:52
7	कर्क	27:51:00
8	कन्या	05:20:51
9	तुला	09:15:09
10	वृश्चिक	07:37:40
11	धनु	02:49:04
12	धनु	28:14:52

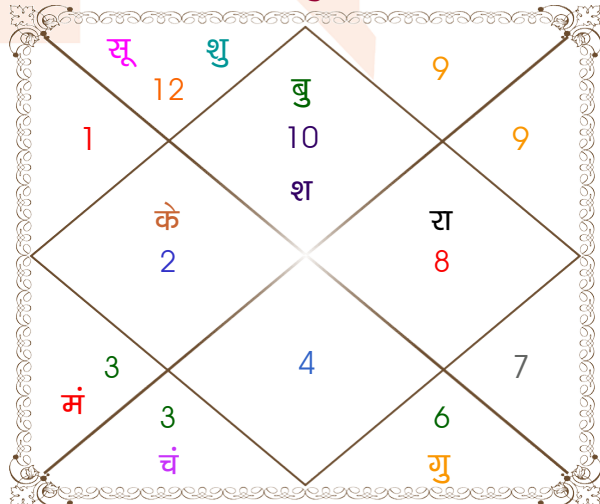
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



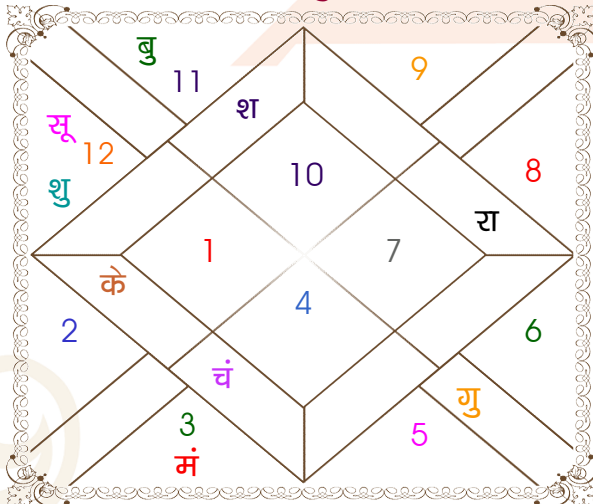
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	कुमार मुदित गमन 8.80 63 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	वृद्ध स्वस्थ नेत्रपाणि 8.41 40 %
मंगल	आत्मा	भ्रातृ	मृत खल कौतुक 0.37 43 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	वृद्ध शान्त नेत्रपाणि 0.33 56 %
गुरु	पुत्र	धन	युवा खल निद्रा 1.70 40 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	युवा दीप्त कौतुक 22.78 72 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल स्वस्थ प्रकाश 4.28 53 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार खल कौतुक 0.00 3 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार शक्त कौतुक 0.00 3 %
कुल			46.66

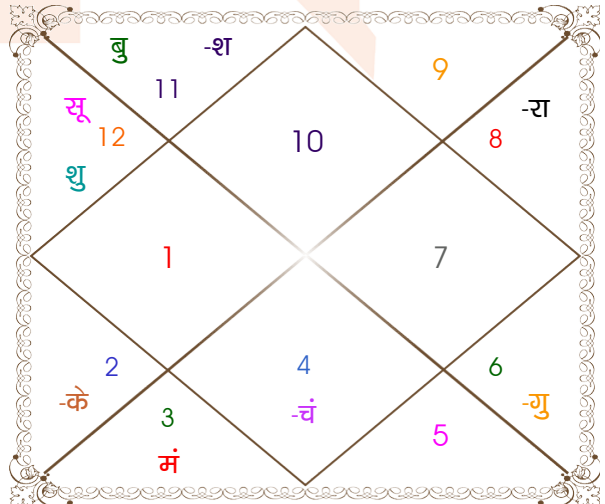
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



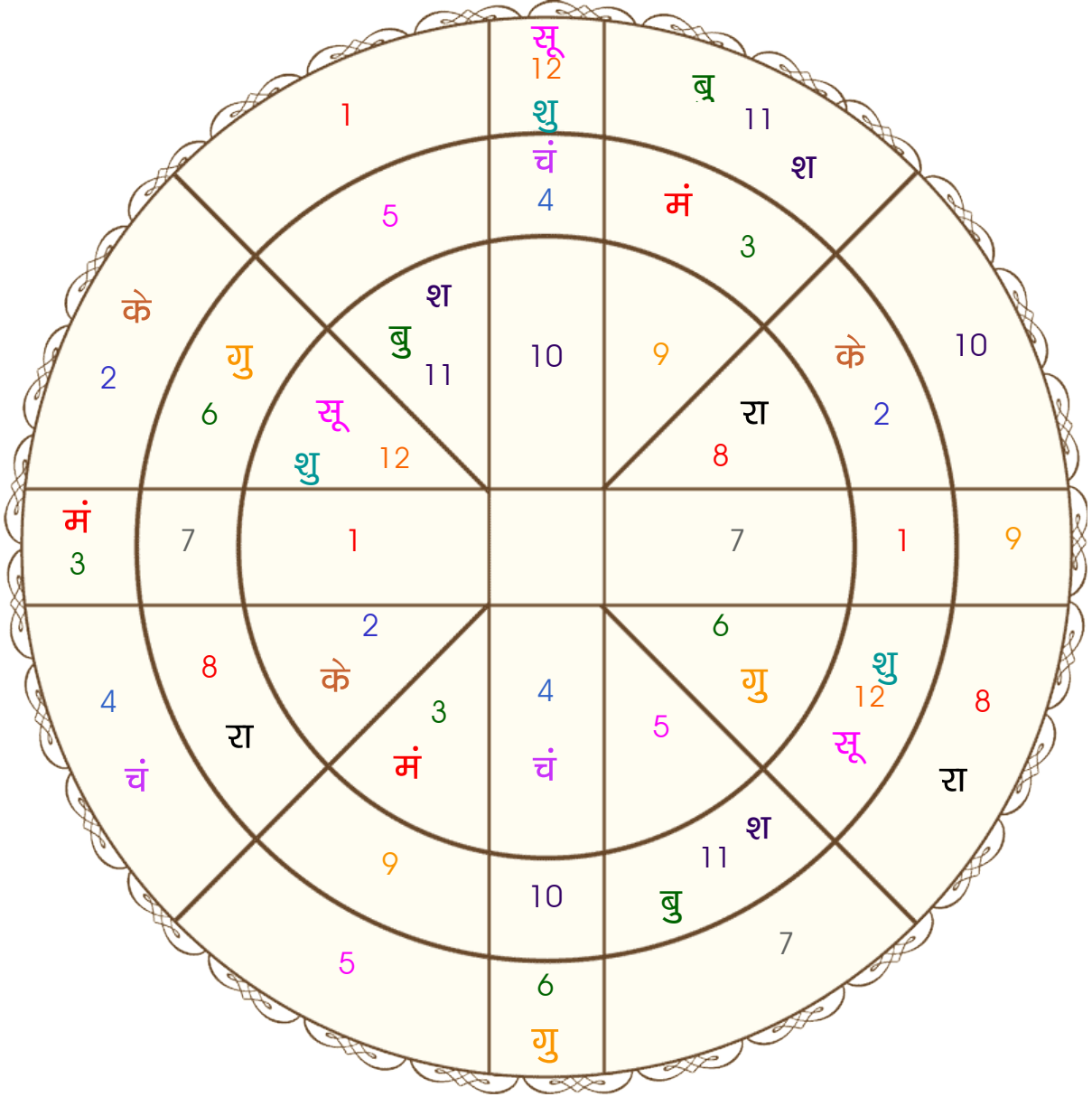
लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

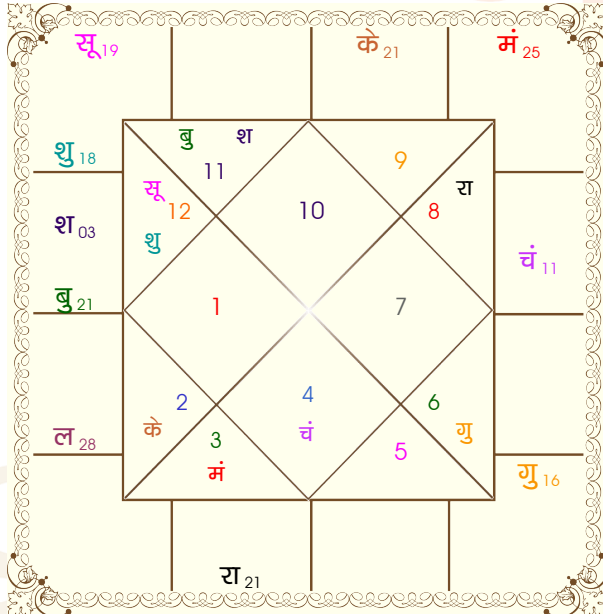
भोग्य दशा काल : शनि 8 वर्ष 0 मास 13 दिन

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	18:32:15	गुरु	बुध	बुध	शनि	1	मक	27:57:29	शनि	मंगल	शनि	शनि
चंद्र		कर्क	11:01:34	चंद्र	शनि	चंद्र	चंद्र	2	मीन	05:27:21	गुरु	शनि	बुध	बुध
मंगल		मिथु	25:04:46	बुध	गुरु	बुध	राहु	3	मेष	09:21:39	मंगल	केतु	शनि	शनि
बुध		कुंभ	21:07:47	शनि	गुरु	गुरु	शुक्र	4	वृष	07:44:09	शुक्र	सूर्य	केतु	बुध
गुरु	व	कन्या	15:49:34	बुध	चंद्र	शनि	शनि	5	मिथु	02:55:33	बुध	मंगल	शुक्र	शुक्र
शुक्र	व	मीन	17:55:17	गुरु	बुध	बुध	राहु	6	मिथु	28:21:21	बुध	गुरु	शुक्र	बुध
शनि		कुंभ	03:02:02	शनि	मंगल	शुक्र	शुक्र	7	कर्क	27:57:29	चंद्र	बुध	शनि	शनि
राहु	व	वृश्चि	20:39:04	मंगल	बुध	शुक्र	गुरु	8	कन्या	05:27:21	बुध	सूर्य	बुध	केतु
केतु	व	वृष	20:39:04	शुक्र	चंद्र	शुक्र	शुक्र	9	तुला	09:21:39	शुक्र	राहु	गुरु	बुध
हर्ष		धनु	28:16:48	गुरु	सूर्य	चंद्र	शुक्र	10	वृश्चि	07:44:09	मंगल	शनि	केतु	राहु
नेप		धनु	27:22:19	गुरु	सूर्य	चंद्र	चंद्र	11	धनु	02:55:33	गुरु	केतु	शुक्र	केतु
प्लूटो	व	वृश्चि	01:32:14	मंगल	गुरु	राहु	राहु	12	धनु	28:21:21	गुरु	सूर्य	चंद्र	शुक्र

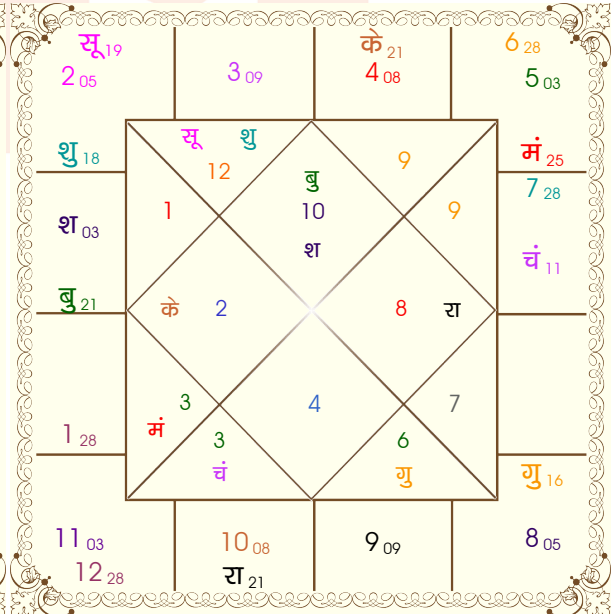
के.पी. अयनांश : 23:39:33

फॉरच्युना : वृष 20:26:48

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, चंद्र+ बुध, शुक्र, शनि, राहु,
2	सूर्य, मंगल- बुध- गुरु- शुक्र,
3	मंगल- शनि-
4	शुक्र- केतु,
5	सूर्य- मंगल, बुध- शुक्र- शनि, राहु-
6	सूर्य- चंद्र, बुध- गुरु, शुक्र- राहु- केतु,
7	चंद्र- गुरु- केतु-
8	सूर्य- मंगल, बुध+ गुरु, शुक्र- राहु-
9	शुक्र-
10	मंगल- शनि- राहु,
11	मंगल- बुध- गुरु-
12	मंगल- बुध- गुरु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 2, 5- 6- 8-
चंद्र	1+ 6, 7-
मंगल	2- 3- 5, 8, 10- 11- 12-
बुध	1, 2- 5- 6- 8+ 11- 12-
गुरु	2- 6, 7- 8, 11- 12-
शुक्र	1, 2, 4- 5- 6- 8- 9-
शनि	1, 3- 5, 10-
राहु	1, 5- 6- 8- 10,
केतु	4, 6, 7-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	शुक्र
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	सू चं शु रा	बु श	चं	श
2	--	सू शु	मं बु	गु
3	--	--	श	मं
4	--	के	--	शु
5	श	मं	सू शु रा	बु
6	गु के	चं	सू शु रा	बु
7	--	--	गु के	चं
8	मं बु	गु	सू शु रा	बु
9	--	--	--	शु
10	--	रा	श	मं
11	--	--	मं बु	गु
12	--	--	मं बु	गु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	---	4,8,12	मीन	2
चंद्र	7	---	कर्क	6
मंगल	3,10	1,5	मिथुन	5
बुध	5,6,8	7	कुम्भ	1
गुरु	2,11,12	6	कन्या	8
शुक्र	4,9	---	मीन	2
शनि	1	2,10	कुम्भ	1
राहु	---	9	वृश्चिक	10
केतु	---	3,11	वृष	4

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	5,6,8	7	1	5,6,8	7	1
चंद्र	1	2,10	1	7	---	6
मंगल	2,11,12	6	8	5,6,8	7	1
बुध	2,11,12	6	8	2,11,12	6	8
गुरु	7	---	6	1	2,10	1
शुक्र	5,6,8	7	1	5,6,8	7	1
शनि	3,10	1,5	5	4,9	---	2
राहु	5,6,8	7	1	4,9	---	2
केतु	7	---	6	4,9	---	2



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह दृष्टि विचार

दृश्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	348.43	100.92	84.97	321.02	165.72	347.81	302.93	230.54	50.54	268.17	267.26	211.43
सूर्य	--	--	--	--	सप्त	युति	--	--	तृती	--	--	--
348.43	0.00	0.00	0.00	0.00	9.60	9.98	0.00	0.00	2.55	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	तृती	--	--	--	--	सप्त	सप्त	--
100.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.93	0.00	0.00	0.00	0.00	2.34	1.40	0.00
मंगल	--	--	--	--	4था	--	8वां	--	--	सप्त	सप्त	--
84.97	0.00	0.00	0.00	0.00	5.66	0.00	6.73	0.00	0.00	9.44	9.71	0.00
बुध	--	--	पंच	--	--	--	--	--	चतु	--	--	--
321.02	0.00	0.00	1.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.98	0.00	0.00	0.00
गुरु	सप्त	--	--	--	--	सप्त	--	तृती	9वां	--	--	अष्ट
165.72	9.60	0.00	0.00	0.00	0.00	9.76	0.00	0.91	8.75	0.00	0.00	0.44
शुक्र	युति	--	--	--	सप्त	--	--	--	तृती	--	--	--
347.81	9.98	0.00	0.00	0.00	9.76	0.00	0.00	0.00	2.27	0.00	0.00	0.00
शनि	3रा	--	--	--	--	अष्ट	--	--	--	--	--	10वा
302.93	0.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.88
राहु	पंच	--	--	चतु	--	पंच	पंचा	--	सप्त	--	--	--
230.54	2.55	0.00	0.00	2.98	0.00	2.27	0.82	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	--	--	--	पंच	--	--	सप्त	--	--	--	--
50.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.91	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	युति	--
268.17	0.00	2.34	9.44	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00
नेप	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	--	--	युति	--	--
267.26	0.00	1.40	9.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	चतु	--	--	तृती	तृती	--
211.43	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.77	0.00	0.00	1.97	1.39	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्ट्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	297.85	331.11	4.37	37.63	64.37	91.11	117.85	151.11	184.37	217.63	244.37	271.11
सूर्य	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
348.43	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त
100.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.17	0.00	0.00	0.00	1.95	0.00	5.17
मंगल	8वां	--	--	--	--	युति	--	--	4था	--	--	सप्त
84.97	9.55	0.00	0.00	0.00	0.00	8.00	0.00	0.00	5.54	0.00	0.00	8.00
बुध	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
321.02	0.00	4.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.92	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	5वां	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	--	--	5वां
165.72	2.96	0.41	0.00	6.62	0.00	0.00	0.00	0.41	0.00	0.00	0.00	0.41
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
347.81	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	युति	--	3रा	चतु	पंच	--	--	--	--	10वा	--	--
302.93	8.62	0.00	9.89	1.00	2.79	0.00	0.00	0.00	0.00	8.81	0.00	0.00
राहु	--	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	नवां
230.54	0.00	0.00	0.00	2.17	1.23	0.00	0.00	0.00	0.00	2.17	1.23	0.63
केतु	--	--	--	युति	युति	नवां	--	--	--	सप्त	सप्त	--
50.54	0.00	0.00	0.00	2.17	1.23	0.63	0.00	0.00	0.00	2.17	1.23	0.00
हर्ष	--	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
268.17	0.00	2.16	0.00	0.00	0.00	9.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.53
नेप	--	तृती	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
267.26	0.00	1.60	0.00	0.00	0.00	9.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.20
प्लूटो	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
211.43	1.78	2.99	0.00	7.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.97	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



भाव दृष्टि विचार

दृश्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	297.85	335.35	9.25	37.63	62.82	88.25	117.85	155.35	189.25	217.63	242.82	268.25
सूर्य	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
348.43	0.00	2.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त
100.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.42	0.00	0.34	2.72	1.95	0.00	2.42
मंगल	8वां	--	--	--	--	युति	--	--	4था	--	--	सप्त
84.97	9.55	0.00	0.00	0.00	0.00	9.42	0.00	0.00	0.75	0.00	0.00	9.42
बुध	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
321.02	0.00	0.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.71	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	5वां	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	--	--	--
165.72	2.96	4.66	0.00	6.62	0.00	0.00	0.00	4.66	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--
347.81	0.00	2.62	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.62	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	युति	--	3रा	चतु	पंच	--	--	--	--	10वा	--	--
302.93	8.62	0.00	7.88	1.00	3.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.81	0.00	0.00
राहु	--	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	--
230.54	0.00	0.00	0.00	2.17	2.82	0.00	0.00	0.00	0.00	2.17	2.82	0.00
केतु	--	--	--	युति	युति	--	--	--	--	सप्त	सप्त	--
50.54	0.00	0.00	0.00	2.17	2.82	0.00	0.00	0.00	0.00	2.17	2.82	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
268.17	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00
नेप	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
267.26	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.95
प्लूटो	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
211.43	1.78	1.55	0.00	7.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.97	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

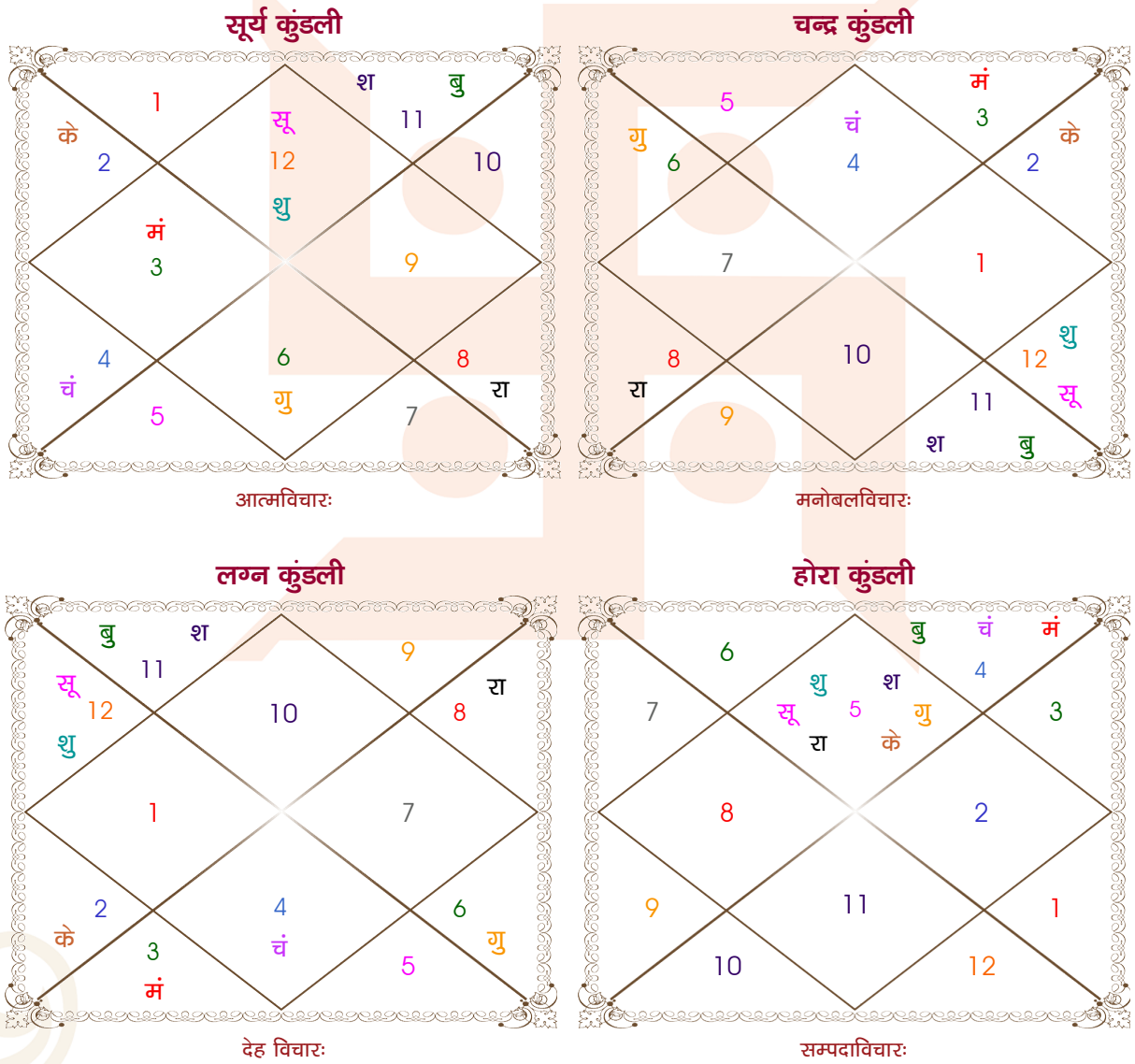
संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

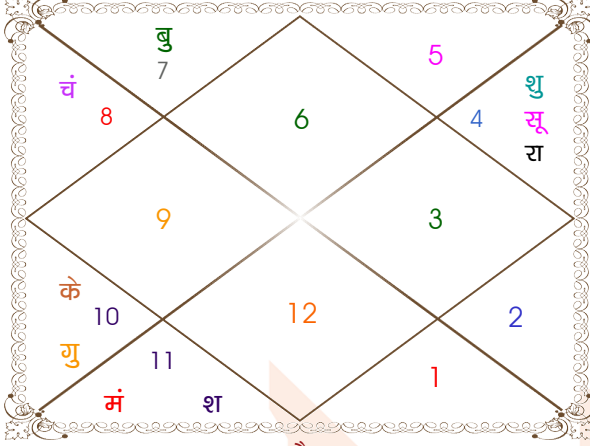
षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।



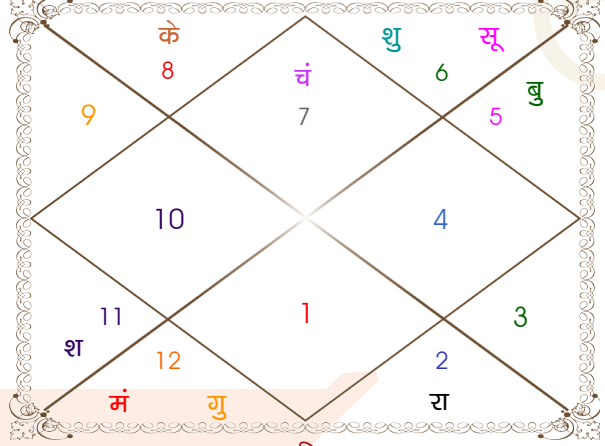
षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली



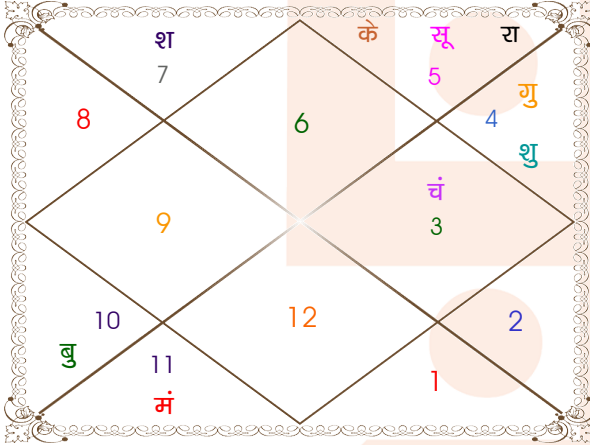
भातृसौख्यम्

चतुर्थाश कुंडली



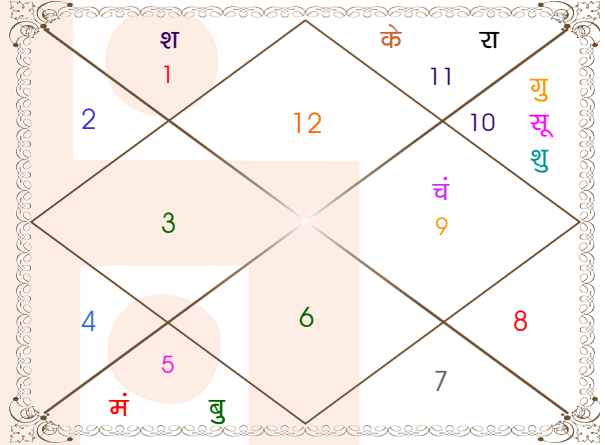
भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली



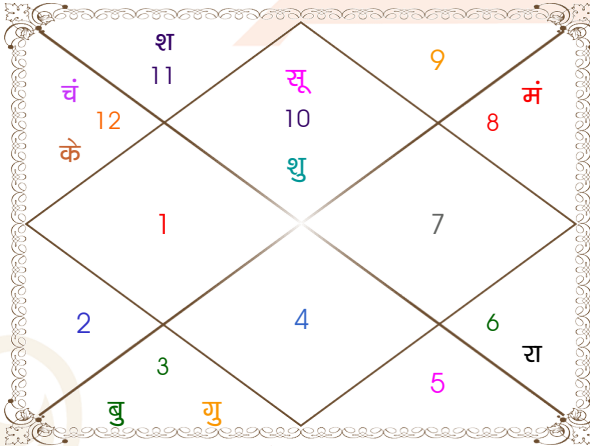
ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली



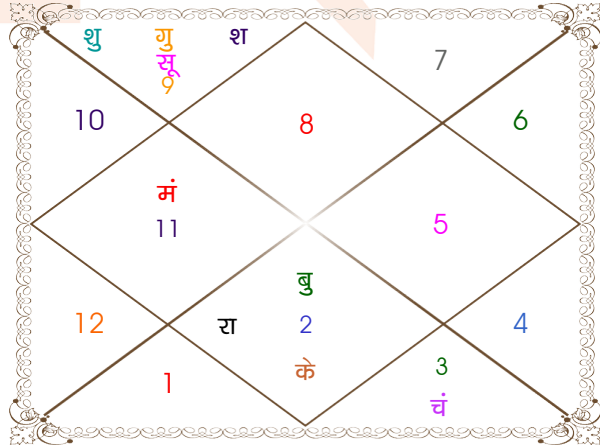
रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली



पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली



आयुविचारः

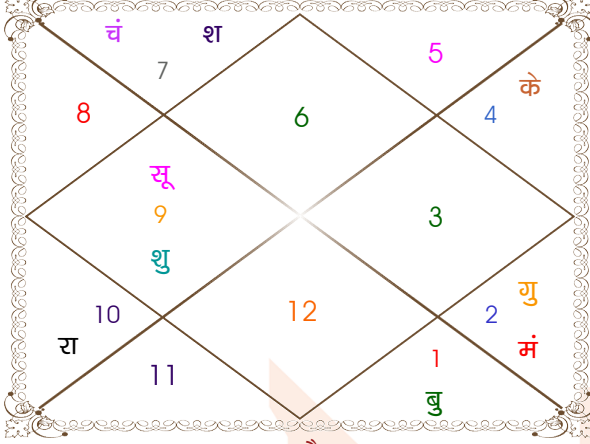


FUTUREPOINT
Astro Solutions



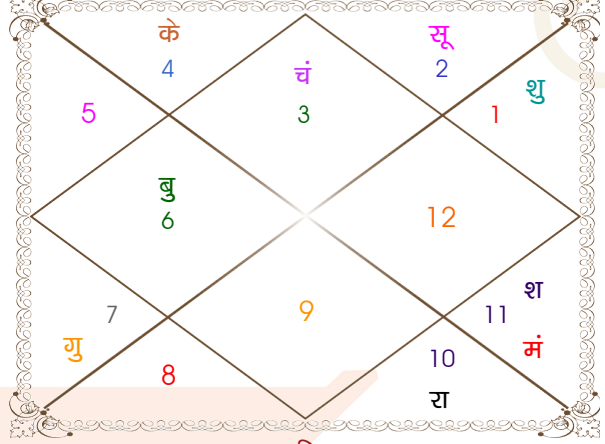
षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली



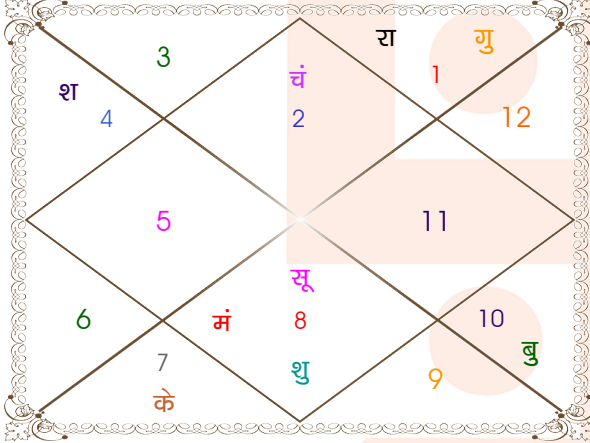
कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली



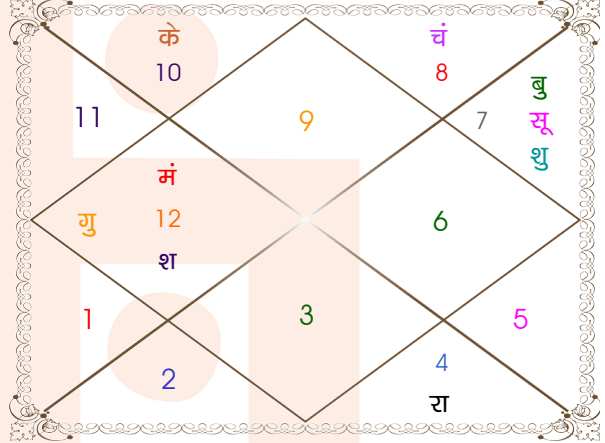
राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली



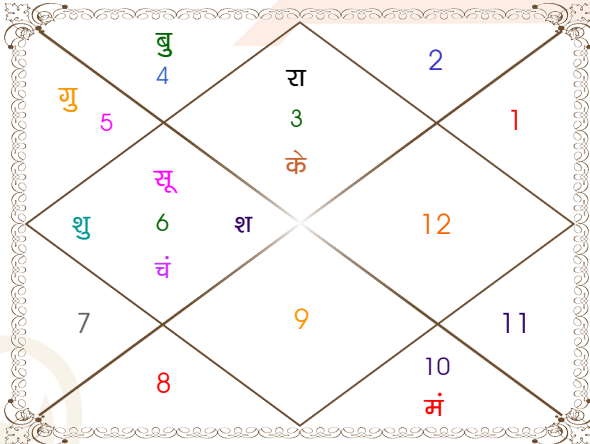
लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली



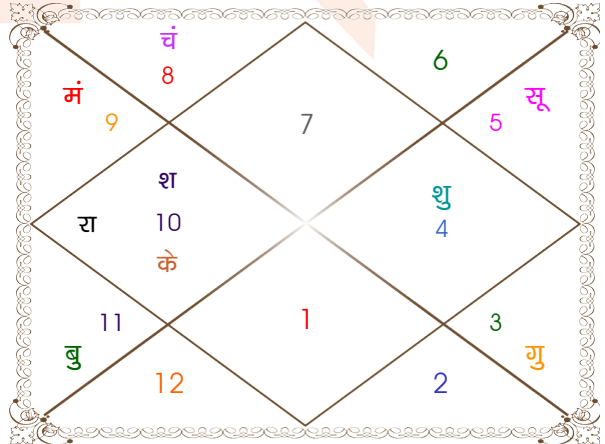
पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली



वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्

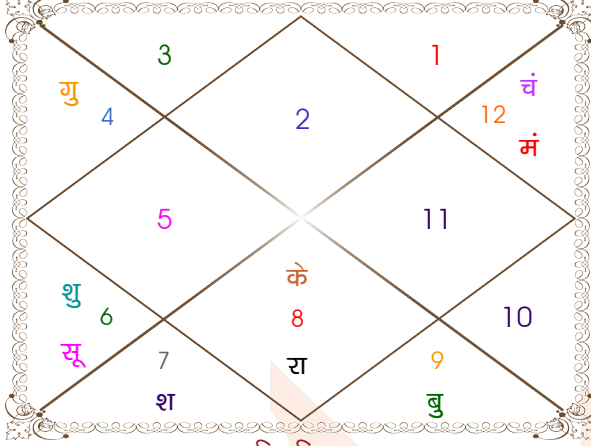


FUTUREPOINT
Astro Solutions



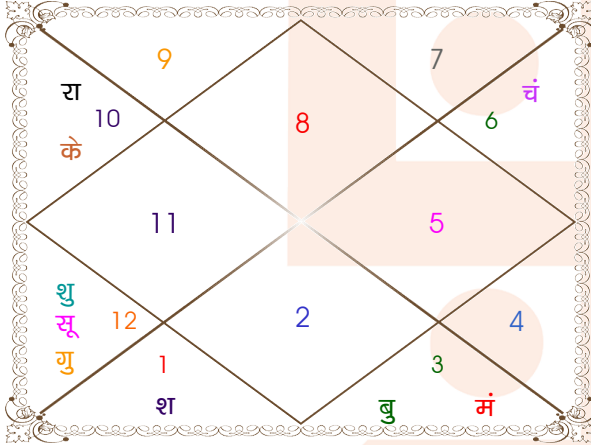
षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशश कुंडली



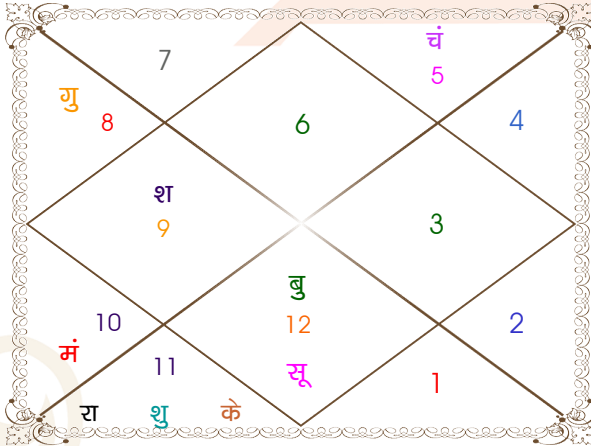
विद्याविचारः

त्रिंशश कुंडली



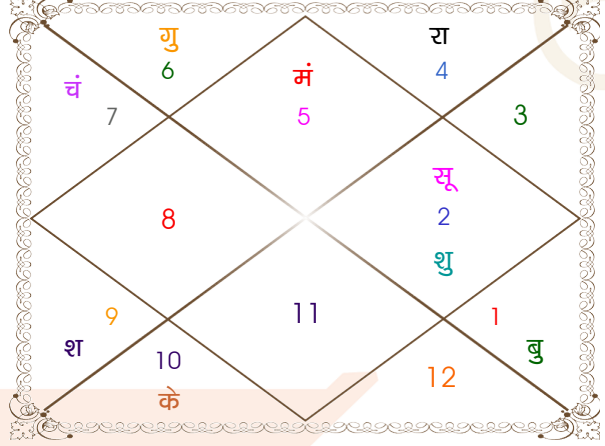
अरिष्टज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली



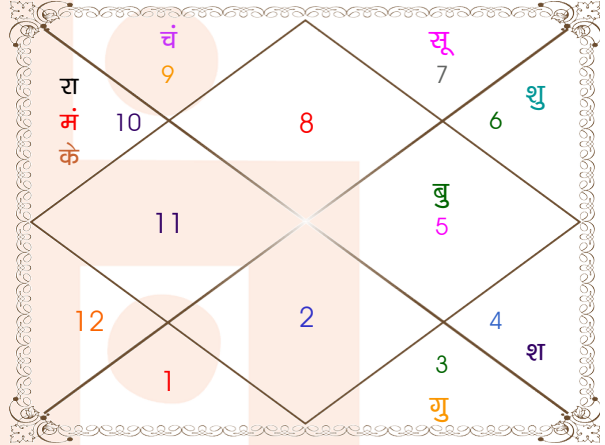
सर्वास्थितिविचारः

सप्तविंशश कुंडली



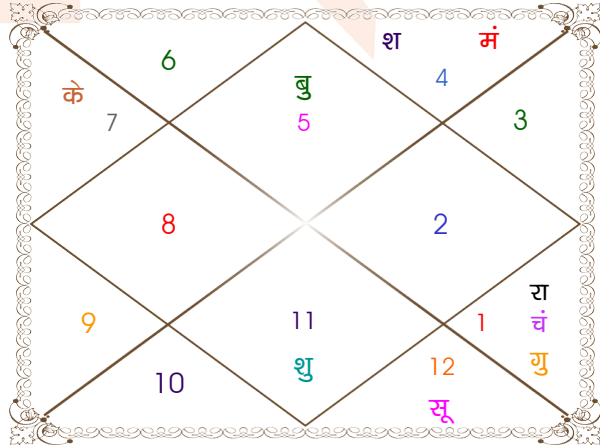
बलाबलज्ञानम्

खवेदांश कुंडली



शुभाशुभज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मक	मीन	कर्क	मिथु	कुंभ	कन्या	मीन	कुंभ	वृश्चि	वृष
होरा	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	कन्या	कर्क	वृश्चि	कुंभ	तुला	मक	कर्क	कुंभ	कर्क	मक
चतुर्थांश	तुला	कन्या	तुला	मीन	सिंह	मीन	कन्या	कुंभ	वृष	वृश्चि
सप्तमांश	मक	मक	मीन	वृश्चि	मिथु	मिथु	मक	कुंभ	कन्या	मीन
नवमांश	कन्या	धनु	तुला	वृष	मेष	वृष	धनु	तुला	मक	कर्क
दशमांश	मिथु	वृष	मिथु	कुंभ	कन्या	तुला	मेष	कुंभ	मक	कर्क
द्वादशांश	धनु	तुला	वृश्चि	मीन	तुला	मीन	तुला	मीन	कर्क	मक
षोडशांश	मिथु	कन्या	कन्या	मक	कर्क	सिंह	कन्या	कन्या	मिथु	मिथु
विंशांश	तुला	सिंह	वृश्चि	धनु	कुंभ	मिथु	कर्क	मक	मक	मक
चतुर्विंशांश	वृष	कन्या	मीन	मीन	धनु	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चि	वृश्चि
सप्तविंशांश	सिंह	वृष	तुला	सिंह	मेष	कन्या	वृष	धनु	कर्क	मक
त्रिंशांश	वृश्चि	मीन	कन्या	मिथु	मिथु	मीन	मीन	मेष	मक	मक
खवेदांश	वृश्चि	तुला	धनु	मक	सिंह	मिथु	कन्या	कर्क	मक	मक
अक्षवेदांश	कन्या	मीन	सिंह	मक	मीन	वृश्चि	कुंभ	धनु	कुंभ	कुंभ
षष्ठ्यंश	सिंह	मीन	मेष	कर्क	सिंह	मेष	कुंभ	कर्क	मेष	तुला

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
मंगल	0 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
बुध	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
शुक्र	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प
शनि	3 व्यंजन	4 चामर	5 सिंहान	8 चन्दनवन
राहु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
केतु	0 ---	1 ---	1 ---	1 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	10.50	14.75	10.50	10.75	8.15	7.70	16.45	8.90	12.40
सप्तवर्ग	10.50	14.70	12.03	11.83	8.05	9.18	16.50	9.83	11.63
दशवर्ग	10.38	14.40	12.53	14.03	11.40	12.68	12.50	9.43	13.35
षोडशवर्ग	11.00	13.53	12.20	11.58	10.60	12.28	13.05	10.28	13.83



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	सम
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	53	37	11	8	36	57	26
सप्तवर्गज बल	69	116	98	114	77	68	141
ओजयुग्मक बल	15	15	15	30	0	15	30
केन्द्र बल	15	60	15	30	15	15	30
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	152	229	139	182	128	154	226
कुल दिग्बल	16	39	16	52	16	43	2
नतोन्नत बल	16	44	44	60	16	16	44
पक्ष बल	23	75	23	23	37	37	23
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	73	5	58	38	25	36	46
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	111	124	185	135	274	90	113
कुल चेष्टाबल	0	0	38	34	60	59	15
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	15	-6	-6	1	-25	15	9
कुल षट्बल	354	437	389	430	487	404	373
रूप षट्बल	5.9	7.3	6.5	7.2	8.1	6.7	6.2
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.2	1.2	1.3	1.0	1.2	1.2	1.2
संबंधित पद	6	5	1	7	2	4	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	42.41	37.43	20.51	16.42	46.70	57.95	19.59
कष्ट फल	13.66	22.57	32.69	36.95	1.75	1.76	39.32

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	373	487	389	404	430	437	437	430	404	389	487	373
भावदिग्बल	30	40	10	0	20	40	30	10	20	30	40	40
भावदृष्टि बल	46	33	44	55	82	27	1	41	27	22	39	33
कुल भाव बल	450	559	443	460	532	504	468	481	451	440	566	447
रूप भाव बल	7.5	9.3	7.4	7.7	8.9	8.4	7.8	8.0	7.5	7.3	9.4	7.4
संबंधित पद	9	2	11	7	3	4	6	5	8	12	1	10

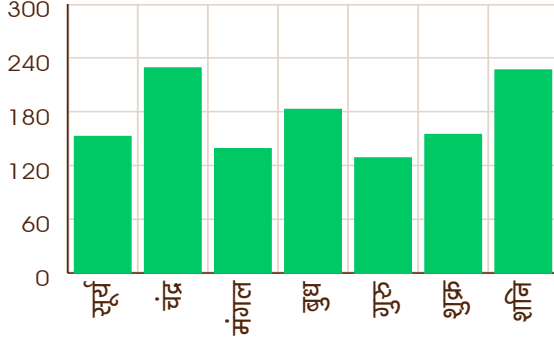


FUTUREPOINT
Astro Solutions

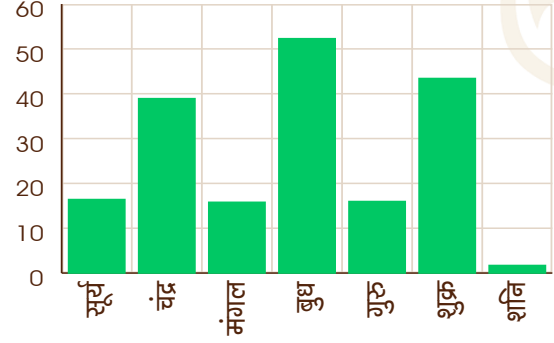


षट्बल ग्राफ

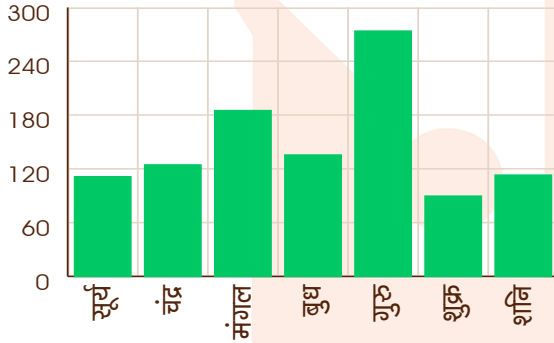
स्थान बल



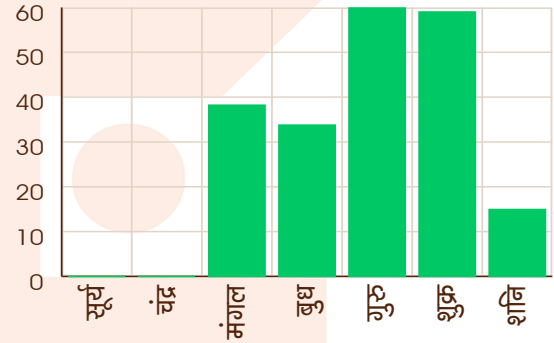
दिग्बल



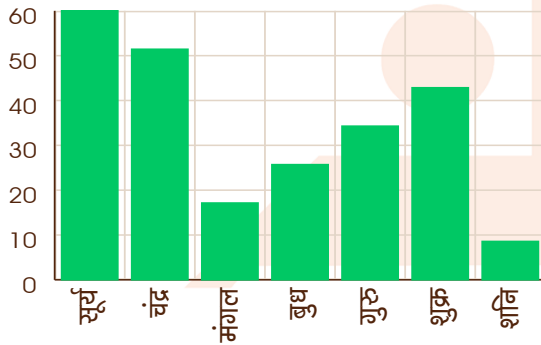
कालबल



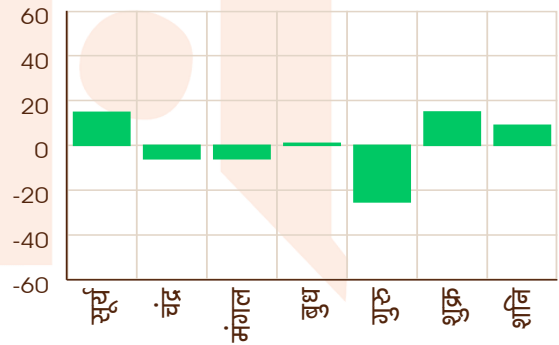
चेष्टाबल



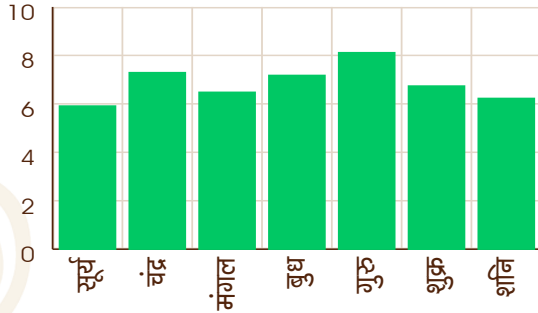
नैसर्गिक बल



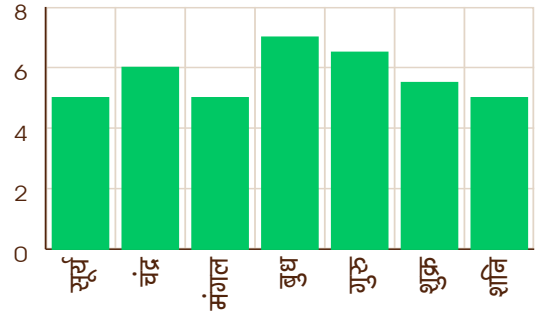
दृग्बल



रूप षट्बल



न्यूनतम षट्बल

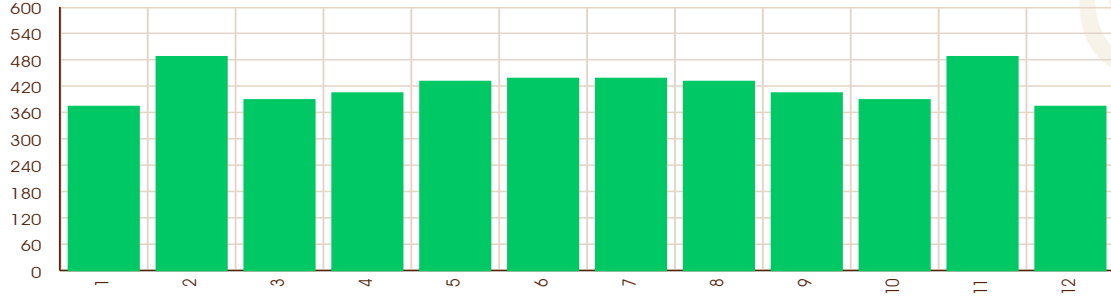


FUTUREPOINT
Astro Solutions

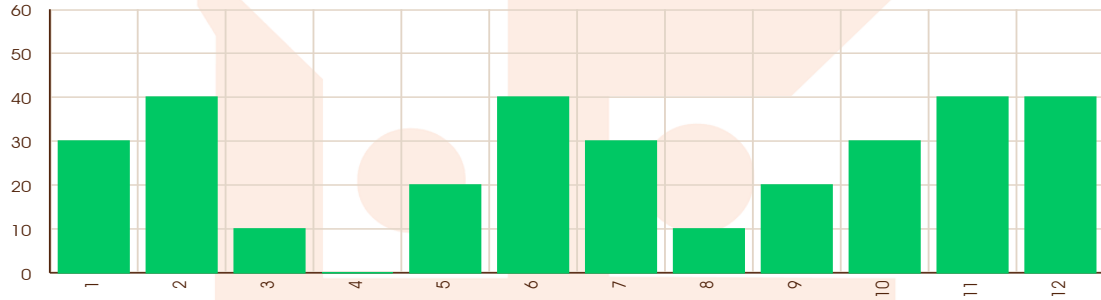


भाव बल ग्राफ

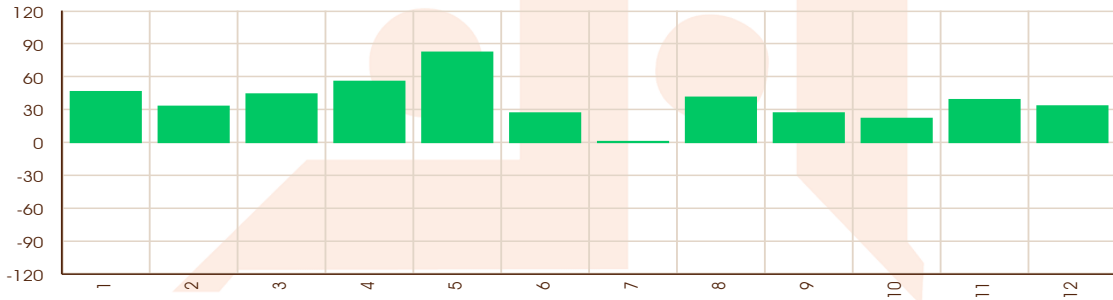
भावाधिपति बल



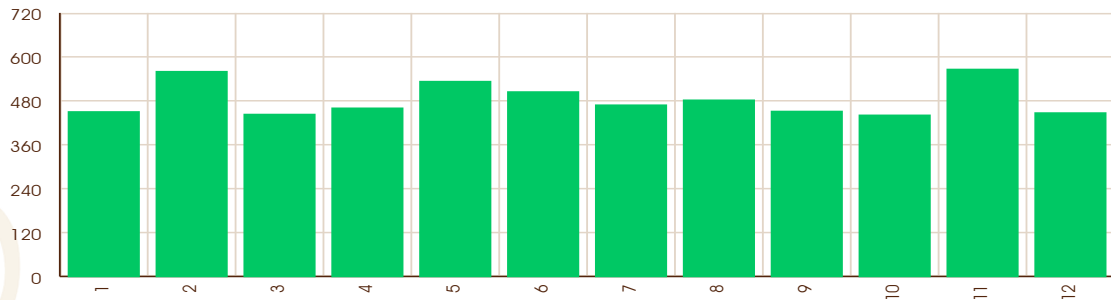
भावदिग्बल



भावदृष्टि बल



भाव बल

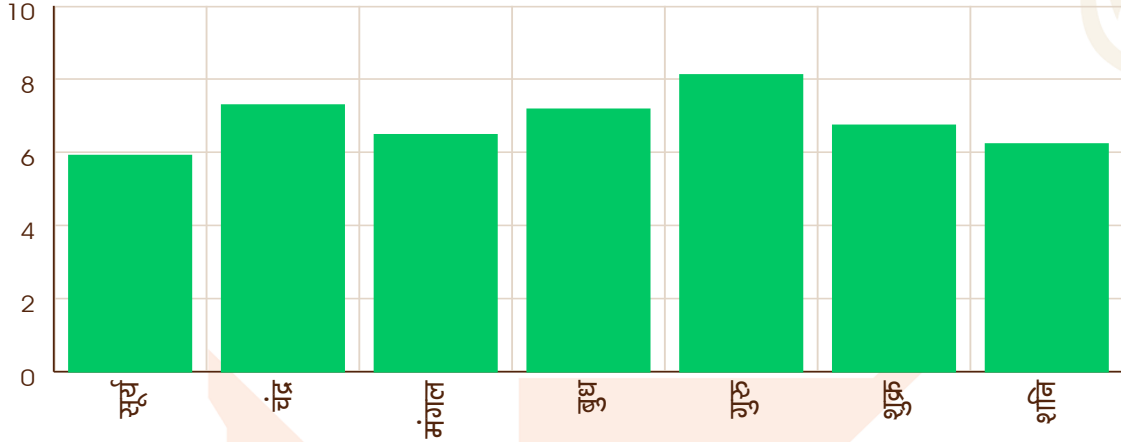


FUTUREPOINT
Astro Solutions

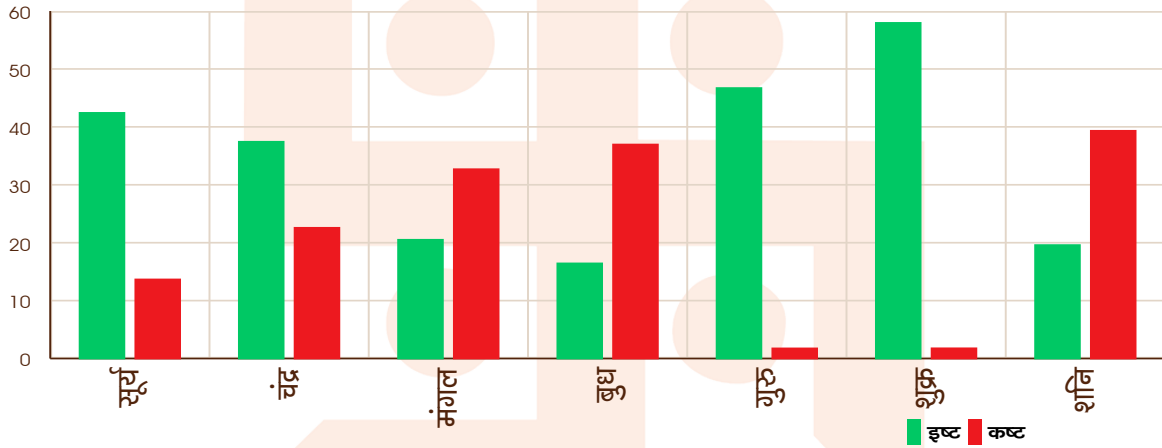


षट्बल तथा भावबल ग्राफ

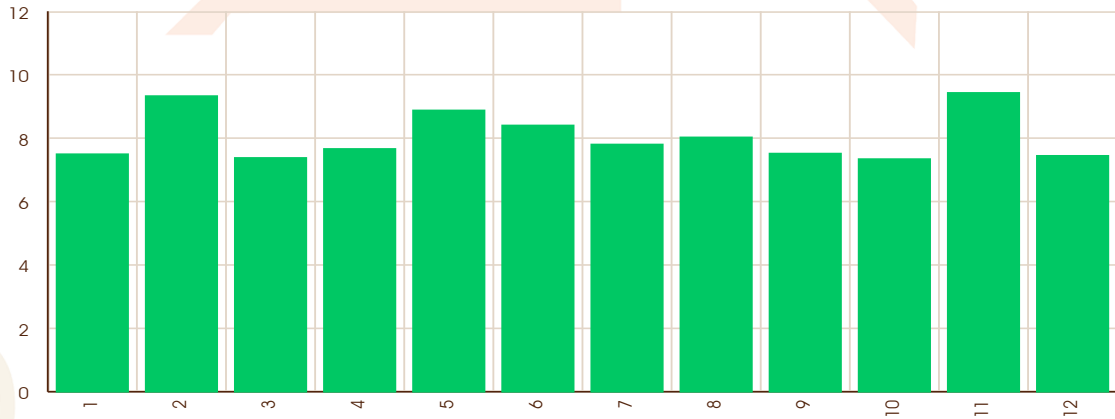
रूप षट्बल



इष्ट - कष्ट फल



रूप भाव बल



FUTUREPOINT
Astro Solutions

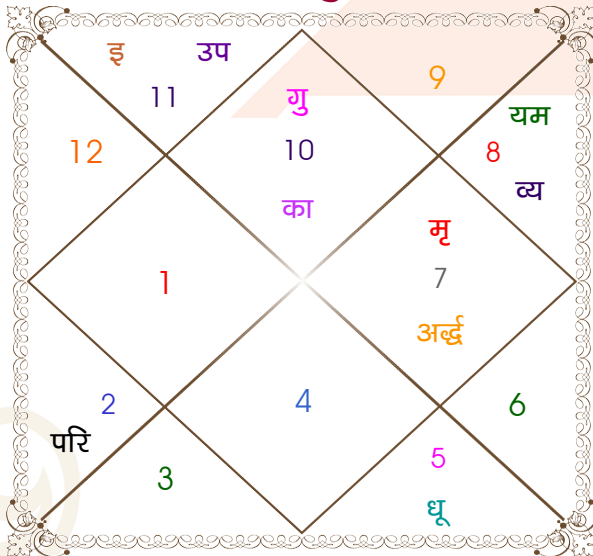


उपग्रह एवं आरुढ़

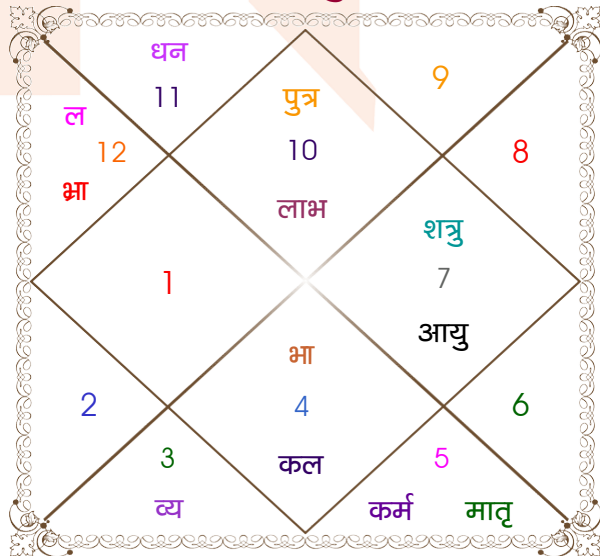
उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मक	27:51:00	--	--	धनिष्ठा	2	23
गुलिक	गु	मक	00:36:29	--	--	उत्तराषाढ़ा	2	21
काल	का	मक	24:05:29	--	मूल	धनिष्ठा	1	23
मृत्यु	मृ	तुला	10:20:11	--	--	स्वाति	2	15
यमघंटक	यम	वृश्चि	19:33:01	--	--	ज्येष्ठा	1	18
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	तुला	29:52:52	--	--	विशाखा	3	16
धूम	धू	सिंह	01:45:45	उच्च	--	मघा	1	10
व्यतिपात	व्य	वृश्चि	28:14:15	उच्च	--	ज्येष्ठा	4	18
परिवेश	परि	वृष	28:14:15	--	--	मृगशिरा	2	5
इन्द्रचाप	इ	कुंभ	01:45:45	--	--	धनिष्ठा	3	23
उपकेतु	उप	कुंभ	18:25:45	उच्च	--	शतभिषा	4	24

प्राणपद	:	वृष	07:20:49	कारकांश लग्न	:	वृष	14:44:22
भाव लग्न	:	धनु	18:17:45	होरा लग्न	:	वृश्चि	08:44:30
घटी लग्न	:	कन्या	00:39:31	वर्णद लग्न	:	तुला	23:24:30

उपग्रह कुंडली



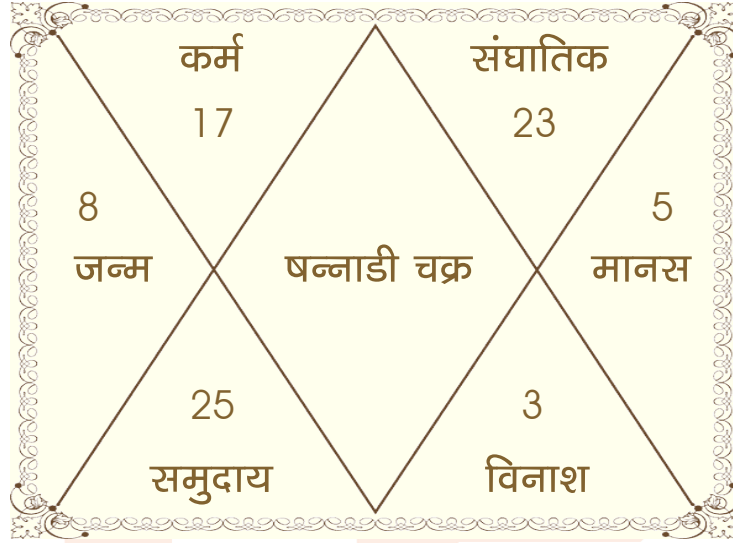
आरुढ़ कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षन्नाडी चक्र



त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु
प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु
प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
कुल	4	5	3	4	3	2	5	4	4	6	4	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
कुल	5	3	5	4	4	6	3	1	4	5	4	5	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
कुल	4	4	4	3	3	2	5	4	3	2	2	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
कुल	7	3	6	3	4	5	5	2	5	5	4	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	9
शुक्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	6
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	5
लग्न	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	9
कुल	4	4	6	5	6	2	5	6	4	6	6	2	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	9
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
कुल	3	6	6	5	4	3	4	5	5	3	4	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
कुल	2	3	4	2	3	3	3	3	4	3	4	5	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
गुरु	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
सूर्य	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
शुक्र	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	7
बुध	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
चंद्र	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	2	4	5	4	6	6	4	2	3	3	5	5	49



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	2	3	3	3	3	4	3	4	5	2	3	39
गुरु	6	4	6	6	2	4	4	6	5	6	2	5	56
मंगल	2	3	4	4	4	3	3	2	5	4	3	2	39
सूर्य	5	3	4	3	2	5	4	4	6	4	4	4	48
शुक्र	6	6	5	4	3	4	5	5	3	4	4	3	52
बुध	6	3	4	5	5	2	5	5	4	5	7	3	54
चंद्र	5	4	5	5	3	5	4	4	6	3	1	4	49
बिन्दु	34	25	31	30	22	26	29	29	33	31	23	24	337
रेखा	22	31	25	26	34	30	27	27	23	25	33	32	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	2	0	1	3	0	0	9
गुरु	4	0	4	1	0	0	2	1	3	2	0	0	17
मंगल	0	0	1	2	2	0	0	0	3	1	0	0	9
सूर्य	3	0	0	0	0	2	0	1	4	1	0	1	12
शुक्र	3	2	1	1	0	0	1	2	0	0	0	0	10
बुध	2	1	0	2	1	0	1	2	0	3	3	0	15
चंद्र	2	1	4	1	0	2	3	0	3	0	0	0	16
रेखा	15	4	11	7	3	5	9	6	14	10	3	1	88

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	2	0	1	3	0	0	9
गुरु	3	0	4	1	0	0	2	1	3	2	0	0	16
मंगल	0	0	1	2	2	0	0	0	3	1	0	0	9
सूर्य	2	0	0	0	0	2	0	1	3	1	0	1	10
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	2	0	0	0	0	7
बुध	0	0	0	2	1	0	0	0	0	0	3	0	6
चंद्र	2	1	4	1	0	2	2	0	3	0	0	0	15
रेखा	9	2	11	7	3	5	7	4	13	7	3	1	72

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	76	111	68	51	116	52	58
ग्रह पिंड	32	57	18	40	37	13	18
शोध्य पिंड	108	168	86	91	153	65	76



FUTUREPOINT
Astro Solutions

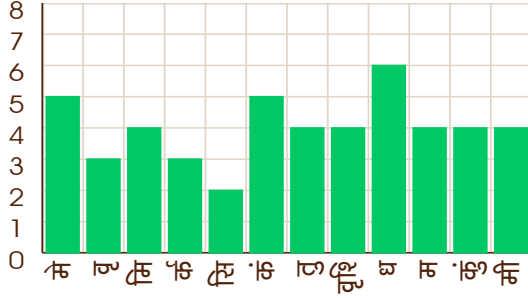


अष्टकवर्ग सारिणी

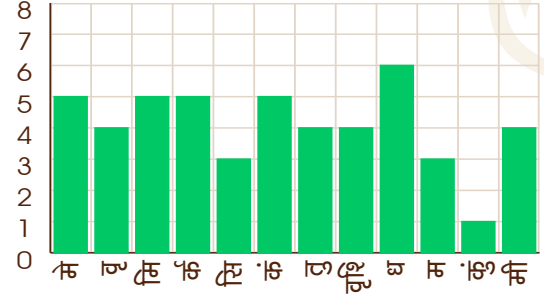
सूर्य का अष्टकवर्ग	सर्वाष्टकवर्ग	चंद्र का अष्टकवर्ग
मंगल का अष्टकवर्ग	बुध का अष्टकवर्ग	गुरु का अष्टकवर्ग
शुक्र का अष्टकवर्ग	शनि का अष्टकवर्ग	लग्न का अष्टकवर्ग

भिन्नाष्टक ग्राफ

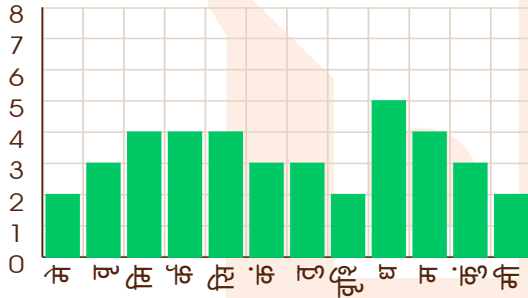
सूर्य



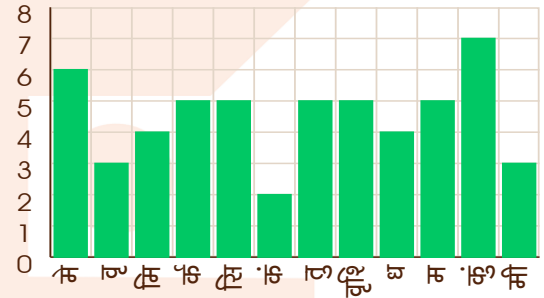
चन्द्र



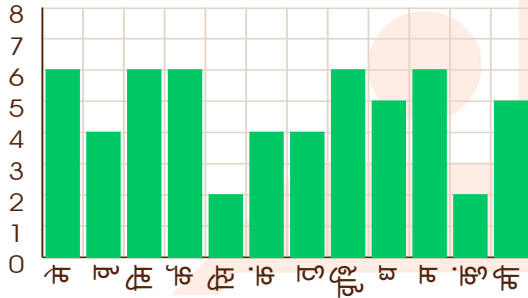
मंगल



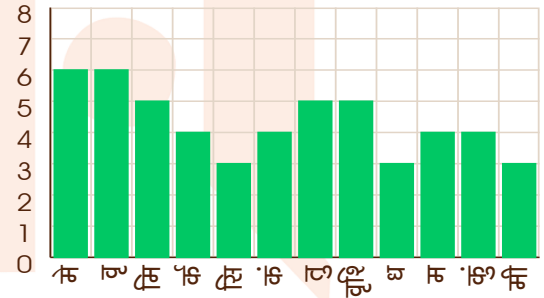
बुध



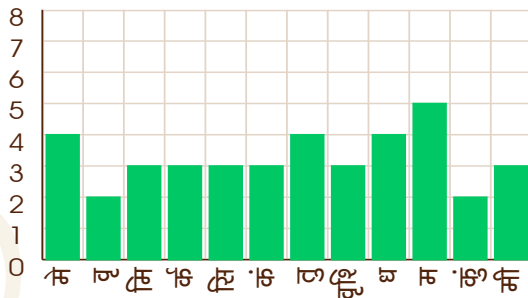
गुरु



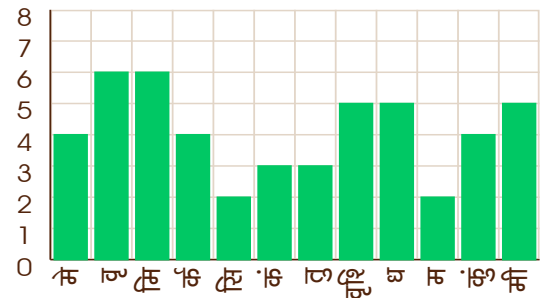
शुक्र



शनि



लग्न



FUTUREPOINT
Astro Solutions

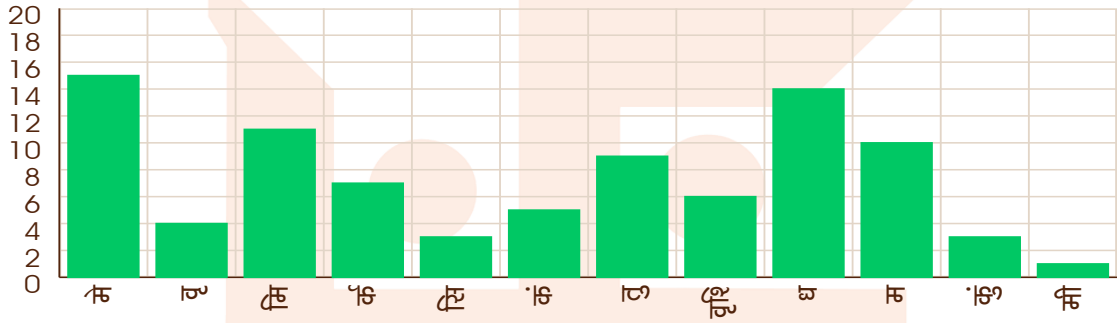


अष्टकवर्ग ग्राफ

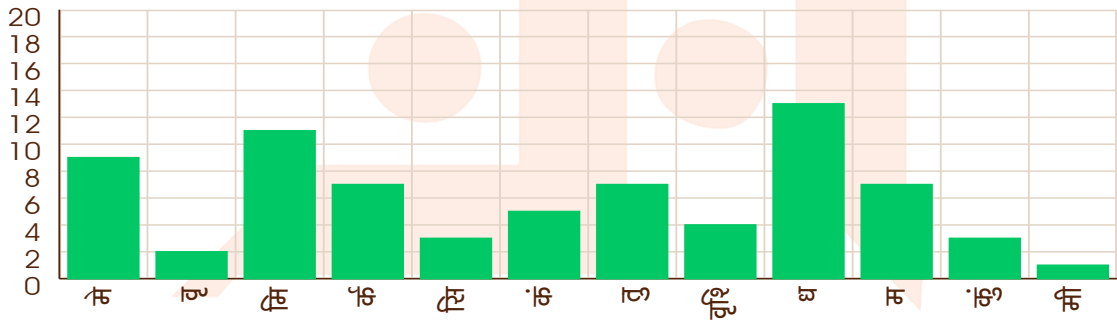
सर्वाष्टकवर्ग



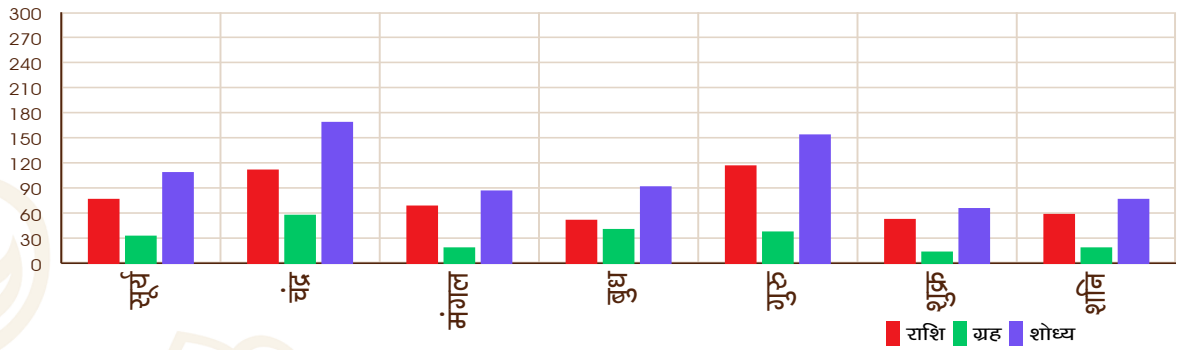
त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग



एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग



शोध्य पिंड



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 8 वर्ष 2 मास 9 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
02/04/1993	11/06/2001	11/06/2018	11/06/2025	11/06/2045
11/06/2001	11/06/2018	11/06/2025	11/06/2045	11/06/2051
00/00/0000	बुध 07/11/2003	केतु 07/11/2018	शुक्र 10/10/2028	सूर्य 28/09/2045
00/00/0000	केतु 04/11/2004	शुक्र 07/01/2020	सूर्य 11/10/2029	चंद्र 30/03/2046
00/00/0000	शुक्र 05/09/2007	सूर्य 14/05/2020	चंद्र 11/06/2031	मंगल 05/08/2046
02/04/1993	सूर्य 11/07/2008	चंद्र 13/12/2020	मंगल 10/08/2032	राहु 30/06/2047
सूर्य 14/05/1993	चंद्र 10/12/2009	मंगल 11/05/2021	राहु 11/08/2035	गुरु 17/04/2048
चंद्र 14/12/1994	मंगल 08/12/2010	राहु 30/05/2022	गुरु 11/04/2038	शनि 30/03/2049
मंगल 23/01/1996	राहु 26/06/2013	गुरु 06/05/2023	शनि 11/06/2041	बुध 03/02/2050
राहु 29/11/1998	गुरु 02/10/2015	शनि 14/06/2024	बुध 11/04/2044	केतु 11/06/2050
गुरु 11/06/2001	शनि 11/06/2018	बुध 11/06/2025	केतु 11/06/2045	शुक्र 11/06/2051
चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
11/06/2051	11/06/2061	11/06/2068	11/06/2086	12/06/2102
11/06/2061	11/06/2068	11/06/2086	12/06/2102	00/00/0000
चंद्र 11/04/2052	मंगल 07/11/2061	राहु 22/02/2071	गुरु 29/07/2088	शनि 15/06/2105
मंगल 10/11/2052	राहु 25/11/2062	गुरु 17/07/2073	शनि 10/02/2091	बुध 23/02/2108
राहु 12/05/2054	गुरु 01/11/2063	शनि 23/05/2076	बुध 17/05/2093	केतु 03/04/2109
गुरु 11/09/2055	शनि 10/12/2064	बुध 11/12/2078	केतु 23/04/2094	शुक्र 02/06/2112
शनि 11/04/2057	बुध 07/12/2065	केतु 29/12/2079	शुक्र 22/12/2096	सूर्य 03/04/2113
बुध 10/09/2058	केतु 06/05/2066	शुक्र 29/12/2082	सूर्य 11/10/2097	00/00/0000
केतु 11/04/2059	शुक्र 06/07/2067	सूर्य 23/11/2083	चंद्र 10/02/2099	00/00/0000
शुक्र 10/12/2060	सूर्य 10/11/2067	चंद्र 24/05/2085	मंगल 16/01/2100	00/00/0000
सूर्य 11/06/2061	चंद्र 11/06/2068	मंगल 11/06/2086	राहु 12/06/2102	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 8 वर्ष 1 मा 15 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य 02/04/1993 14/05/1993	शनि - चंद्र 14/05/1993 14/12/1994	शनि - मंगल 14/12/1994 23/01/1996	शनि - राहु 23/01/1996 29/11/1998	शनि - गुरु 29/11/1998 11/06/2001
00/00/0000	चंद्र 02/07/1993	मंगल 06/01/1995	राहु 27/06/1996	गुरु 01/04/1999
00/00/0000	मंगल 04/08/1993	राहु 08/03/1995	गुरु 12/11/1996	शनि 25/08/1999
00/00/0000	राहु 30/10/1993	गुरु 01/05/1995	शनि 26/04/1997	बुध 03/01/2000
00/00/0000	गुरु 15/01/1994	शनि 04/07/1995	बुध 21/09/1997	केतु 26/02/2000
00/00/0000	शनि 17/04/1994	बुध 30/08/1995	केतु 20/11/1997	शुक्र 30/07/2000
00/00/0000	बुध 08/07/1994	केतु 23/09/1995	शुक्र 13/05/1998	सूर्य 14/09/2000
00/00/0000	केतु 10/08/1994	शुक्र 30/11/1995	सूर्य 04/07/1998	चंद्र 30/11/2000
02/04/1993	शुक्र 15/11/1994	सूर्य 20/12/1995	चंद्र 29/09/1998	मंगल 23/01/2001
शुक्र 14/05/1993	सूर्य 14/12/1994	चंद्र 23/01/1996	मंगल 29/11/1998	राहु 11/06/2001
बुध - बुध 11/06/2001 07/11/2003	बुध - केतु 07/11/2003 04/11/2004	बुध - शुक्र 04/11/2004 05/09/2007	बुध - सूर्य 05/09/2007 11/07/2008	बुध - चंद्र 11/07/2008 10/12/2009
बुध 13/10/2001	केतु 29/11/2003	शुक्र 25/04/2005	सूर्य 20/09/2007	चंद्र 23/08/2008
केतु 04/12/2001	शुक्र 28/01/2004	सूर्य 16/06/2005	चंद्र 16/10/2007	मंगल 22/09/2008
शुक्र 29/04/2002	सूर्य 15/02/2004	चंद्र 10/09/2005	मंगल 03/11/2007	राहु 09/12/2008
सूर्य 12/06/2002	चंद्र 16/03/2004	मंगल 09/11/2005	राहु 20/12/2007	गुरु 16/02/2009
चंद्र 25/08/2002	मंगल 06/04/2004	राहु 14/04/2006	गुरु 30/01/2008	शनि 09/05/2009
मंगल 15/10/2002	राहु 31/05/2004	गुरु 30/08/2006	शनि 19/03/2008	बुध 21/07/2009
राहु 24/02/2003	गुरु 18/07/2004	शनि 10/02/2007	बुध 02/05/2008	केतु 20/08/2009
गुरु 21/06/2003	शनि 13/09/2004	बुध 06/07/2007	केतु 20/05/2008	शुक्र 15/11/2009
शनि 07/11/2003	बुध 04/11/2004	केतु 05/09/2007	शुक्र 11/07/2008	सूर्य 10/12/2009
बुध - मंगल 10/12/2009 08/12/2010	बुध - राहु 08/12/2010 26/06/2013	बुध - गुरु 26/06/2013 02/10/2015	बुध - शनि 02/10/2015 11/06/2018	केतु - केतु 11/06/2018 07/11/2018
मंगल 01/01/2010	राहु 26/04/2011	गुरु 14/10/2013	शनि 06/03/2016	केतु 20/06/2018
राहु 24/02/2010	गुरु 29/08/2011	शनि 22/02/2014	बुध 23/07/2016	शुक्र 15/07/2018
गुरु 13/04/2010	शनि 23/01/2012	बुध 20/06/2014	केतु 18/09/2016	सूर्य 22/07/2018
शनि 10/06/2010	बुध 03/06/2012	केतु 07/08/2014	शुक्र 01/03/2017	चंद्र 03/08/2018
बुध 31/07/2010	केतु 27/07/2012	शुक्र 23/12/2014	सूर्य 19/04/2017	मंगल 12/08/2018
केतु 21/08/2010	शुक्र 30/12/2012	सूर्य 02/02/2015	चंद्र 10/07/2017	राहु 04/09/2018
शुक्र 20/10/2010	सूर्य 14/02/2013	चंद्र 12/04/2015	मंगल 05/09/2017	गुरु 23/09/2018
सूर्य 07/11/2010	चंद्र 03/05/2013	मंगल 31/05/2015	राहु 31/01/2018	शनि 17/10/2018
चंद्र 08/12/2010	मंगल 26/06/2013	राहु 02/10/2015	गुरु 11/06/2018	बुध 07/11/2018



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र 07/11/2018 07/01/2020	केतु - सूर्य 07/01/2020 14/05/2020	केतु - चंद्र 14/05/2020 13/12/2020	केतु - मंगल 13/12/2020 11/05/2021	केतु - राहु 11/05/2021 30/05/2022
शुक्र 17/01/2019 सूर्य 08/02/2019 चंद्र 15/03/2019 मंगल 09/04/2019 राहु 12/06/2019 गुरु 08/08/2019 शनि 14/10/2019 बुध 13/12/2019 केतु 07/01/2020	सूर्य 14/01/2020 चंद्र 24/01/2020 मंगल 01/02/2020 राहु 20/02/2020 गुरु 08/03/2020 शनि 28/03/2020 बुध 15/04/2020 केतु 23/04/2020 शुक्र 14/05/2020	चंद्र 01/06/2020 मंगल 13/06/2020 राहु 15/07/2020 गुरु 13/08/2020 शनि 15/09/2020 बुध 16/10/2020 केतु 28/10/2020 शुक्र 03/12/2020 सूर्य 13/12/2020	मंगल 22/12/2020 राहु 13/01/2021 गुरु 02/02/2021 शनि 26/02/2021 बुध 19/03/2021 केतु 28/03/2021 शुक्र 21/04/2021 सूर्य 29/04/2021 चंद्र 11/05/2021	राहु 08/07/2021 गुरु 28/08/2021 शनि 28/10/2021 बुध 21/12/2021 केतु 12/01/2022 शुक्र 17/03/2022 सूर्य 06/04/2022 चंद्र 08/05/2022 मंगल 30/05/2022
केतु - गुरु 30/05/2022 06/05/2023	केतु - शनि 06/05/2023 14/06/2024	केतु - बुध 14/06/2024 11/06/2025	शुक्र - शुक्र 11/06/2025 10/10/2028	शुक्र - सूर्य 10/10/2028 11/10/2029
गुरु 14/07/2022 शनि 06/09/2022 बुध 25/10/2022 केतु 13/11/2022 शुक्र 09/01/2023 सूर्य 26/01/2023 चंद्र 24/02/2023 मंगल 16/03/2023 राहु 06/05/2023	शनि 09/07/2023 बुध 04/09/2023 केतु 28/09/2023 शुक्र 04/12/2023 सूर्य 25/12/2023 चंद्र 27/01/2024 मंगल 20/02/2024 राहु 21/04/2024 गुरु 14/06/2024	बुध 04/08/2024 केतु 25/08/2024 शुक्र 24/10/2024 सूर्य 12/11/2024 चंद्र 12/12/2024 मंगल 02/01/2025 राहु 25/02/2025 गुरु 14/04/2025 शनि 11/06/2025	शुक्र 31/12/2025 सूर्य 02/03/2026 चंद्र 11/06/2026 मंगल 21/08/2026 राहु 20/02/2027 गुरु 01/08/2027 शनि 10/02/2028 बुध 31/07/2028 केतु 10/10/2028	सूर्य 29/10/2028 चंद्र 28/11/2028 मंगल 19/12/2028 राहु 12/02/2029 गुरु 02/04/2029 शनि 30/05/2029 बुध 20/07/2029 केतु 11/08/2029 शुक्र 11/10/2029
शुक्र - चंद्र 11/10/2029 11/06/2031	शुक्र - मंगल 11/06/2031 10/08/2032	शुक्र - राहु 10/08/2032 11/08/2035	शुक्र - गुरु 11/08/2035 11/04/2038	शुक्र - शनि 11/04/2038 11/06/2041
चंद्र 30/11/2029 मंगल 05/01/2030 राहु 06/04/2030 गुरु 26/06/2030 शनि 01/10/2030 बुध 26/12/2030 केतु 30/01/2031 शुक्र 12/05/2031 सूर्य 11/06/2031	मंगल 06/07/2031 राहु 08/09/2031 गुरु 04/11/2031 शनि 10/01/2032 बुध 11/03/2032 केतु 05/04/2032 शुक्र 15/06/2032 सूर्य 06/07/2032 चंद्र 10/08/2032	राहु 22/01/2033 गुरु 17/06/2033 शनि 07/12/2033 बुध 12/05/2034 केतु 15/07/2034 शुक्र 13/01/2035 सूर्य 09/03/2035 चंद्र 08/06/2035 मंगल 11/08/2035	गुरु 19/12/2035 शनि 21/05/2036 बुध 06/10/2036 केतु 02/12/2036 शुक्र 13/05/2037 सूर्य 01/07/2037 चंद्र 20/09/2037 मंगल 16/11/2037 राहु 11/04/2038	शनि 11/10/2038 बुध 24/03/2039 केतु 31/05/2039 शुक्र 09/12/2039 सूर्य 05/02/2040 चंद्र 12/05/2040 मंगल 18/07/2040 राहु 08/01/2041 गुरु 11/06/2041



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध 11/06/2041 11/04/2044	शुक्र - केतु 11/04/2044 11/06/2045	सूर्य - सूर्य 11/06/2045 28/09/2045	सूर्य - चंद्र 28/09/2045 30/03/2046	सूर्य - मंगल 30/03/2046 05/08/2046
बुध 04/11/2041 केतु 04/01/2042 शुक्र 25/06/2042 सूर्य 16/08/2042 चंद्र 10/11/2042 मंगल 10/01/2043 राहु 14/06/2043 गुरु 30/10/2043 शनि 11/04/2044	केतु 06/05/2044 शुक्र 16/07/2044 सूर्य 06/08/2044 चंद्र 10/09/2044 मंगल 05/10/2044 राहु 08/12/2044 गुरु 03/02/2045 शनि 11/04/2045 बुध 11/06/2045	सूर्य 16/06/2045 चंद्र 25/06/2045 मंगल 02/07/2045 राहु 18/07/2045 गुरु 02/08/2045 शनि 19/08/2045 बुध 04/09/2045 केतु 10/09/2045 शुक्र 28/09/2045	चंद्र 14/10/2045 मंगल 24/10/2045 राहु 21/11/2045 गुरु 15/12/2045 शनि 13/01/2046 बुध 08/02/2046 केतु 18/02/2046 शुक्र 21/03/2046 सूर्य 30/03/2046	मंगल 06/04/2046 राहु 26/04/2046 गुरु 13/05/2046 शनि 02/06/2046 बुध 20/06/2046 केतु 27/06/2046 शुक्र 19/07/2046 सूर्य 25/07/2046 चंद्र 05/08/2046
सूर्य - राहु 05/08/2046 30/06/2047	सूर्य - गुरु 30/06/2047 17/04/2048	सूर्य - शनि 17/04/2048 30/03/2049	सूर्य - बुध 30/03/2049 03/02/2050	सूर्य - केतु 03/02/2050 11/06/2050
राहु 23/09/2046 गुरु 06/11/2046 शनि 28/12/2046 बुध 13/02/2047 केतु 04/03/2047 शुक्र 28/04/2047 सूर्य 14/05/2047 चंद्र 10/06/2047 मंगल 30/06/2047	गुरु 08/08/2047 शनि 23/09/2047 बुध 03/11/2047 केतु 20/11/2047 शुक्र 08/01/2048 सूर्य 23/01/2048 चंद्र 16/02/2048 मंगल 04/03/2048 राहु 17/04/2048	शनि 11/06/2048 बुध 30/07/2048 केतु 19/08/2048 शुक्र 16/10/2048 सूर्य 02/11/2048 चंद्र 01/12/2048 मंगल 21/12/2048 राहु 11/02/2049 गुरु 30/03/2049	बुध 13/05/2049 केतु 31/05/2049 शुक्र 22/07/2049 सूर्य 06/08/2049 चंद्र 01/09/2049 मंगल 19/09/2049 राहु 05/11/2049 गुरु 16/12/2049 शनि 03/02/2050	केतु 11/02/2050 शुक्र 04/03/2050 सूर्य 10/03/2050 चंद्र 21/03/2050 मंगल 28/03/2050 राहु 17/04/2050 गुरु 04/05/2050 शनि 24/05/2050 बुध 11/06/2050
सूर्य - शुक्र 11/06/2050 11/06/2051	चंद्र - चंद्र 11/06/2051 11/04/2052	चंद्र - मंगल 11/04/2052 10/11/2052	चंद्र - राहु 10/11/2052 12/05/2054	चंद्र - गुरु 12/05/2054 11/09/2055
शुक्र 11/08/2050 सूर्य 29/08/2050 चंद्र 29/09/2050 मंगल 20/10/2050 राहु 14/12/2050 गुरु 31/01/2051 शनि 30/03/2051 बुध 21/05/2051 केतु 11/06/2051	चंद्र 07/07/2051 मंगल 24/07/2051 राहु 08/09/2051 गुरु 19/10/2051 शनि 06/12/2051 बुध 18/01/2052 केतु 05/02/2052 शुक्र 26/03/2052 सूर्य 11/04/2052	मंगल 23/04/2052 राहु 25/05/2052 गुरु 22/06/2052 शनि 26/07/2052 बुध 25/08/2052 केतु 07/09/2052 शुक्र 12/10/2052 सूर्य 23/10/2052 चंद्र 10/11/2052	राहु 31/01/2053 गुरु 14/04/2053 शनि 10/07/2053 बुध 25/09/2053 केतु 27/10/2053 शुक्र 27/01/2054 सूर्य 23/02/2054 चंद्र 10/04/2054 मंगल 12/05/2054	गुरु 16/07/2054 शनि 01/10/2054 बुध 09/12/2054 केतु 06/01/2055 शुक्र 28/03/2055 सूर्य 22/04/2055 चंद्र 01/06/2055 मंगल 30/06/2055 राहु 11/09/2055

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य
11/09/2055	11/04/2057	10/09/2058	11/04/2059	10/12/2060
11/04/2057	10/09/2058	11/04/2059	10/12/2060	11/06/2061
शनि 11/12/2055	बुध 23/06/2057	केतु 23/09/2058	शुक्र 22/07/2059	सूर्य 19/12/2060
बुध 02/03/2056	केतु 23/07/2057	शुक्र 28/10/2058	सूर्य 21/08/2059	चंद्र 04/01/2061
केतु 05/04/2056	शुक्र 18/10/2057	सूर्य 08/11/2058	चंद्र 11/10/2059	मंगल 14/01/2061
शुक्र 10/07/2056	सूर्य 13/11/2057	चंद्र 26/11/2058	मंगल 16/11/2059	राहु 11/02/2061
सूर्य 08/08/2056	चंद्र 26/12/2057	मंगल 08/12/2058	राहु 15/02/2060	गुरु 07/03/2061
चंद्र 25/09/2056	मंगल 25/01/2058	राहु 09/01/2059	गुरु 06/05/2060	शनि 05/04/2061
मंगल 29/10/2056	राहु 12/04/2058	गुरु 07/02/2059	शनि 10/08/2060	बुध 01/05/2061
राहु 24/01/2057	गुरु 20/06/2058	शनि 12/03/2059	बुध 05/11/2060	केतु 11/05/2061
गुरु 11/04/2057	शनि 10/09/2058	बुध 11/04/2059	केतु 10/12/2060	शुक्र 11/06/2061
मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु	मंगल - शनि	मंगल - बुध
11/06/2061	07/11/2061	25/11/2062	01/11/2063	10/12/2064
07/11/2061	25/11/2062	01/11/2063	10/12/2064	07/12/2065
मंगल 20/06/2061	राहु 03/01/2062	गुरु 10/01/2063	शनि 04/01/2064	बुध 30/01/2065
राहु 12/07/2061	गुरु 24/02/2062	शनि 05/03/2063	बुध 02/03/2064	केतु 21/02/2065
गुरु 01/08/2061	शनि 25/04/2062	बुध 22/04/2063	केतु 25/03/2064	शुक्र 22/04/2065
शनि 24/08/2061	बुध 19/06/2062	केतु 12/05/2063	शुक्र 01/06/2064	सूर्य 10/05/2065
बुध 15/09/2061	केतु 11/07/2062	शुक्र 08/07/2063	सूर्य 21/06/2064	चंद्र 09/06/2065
केतु 23/09/2061	शुक्र 13/09/2062	सूर्य 25/07/2063	चंद्र 25/07/2064	मंगल 30/06/2065
शुक्र 18/10/2061	सूर्य 02/10/2062	चंद्र 22/08/2063	मंगल 17/08/2064	राहु 24/08/2065
सूर्य 26/10/2061	चंद्र 03/11/2062	मंगल 11/09/2063	राहु 17/10/2064	गुरु 11/10/2065
चंद्र 07/11/2061	मंगल 25/11/2062	राहु 01/11/2063	गुरु 10/12/2064	शनि 07/12/2065
मंगल - केतु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र	राहु - राहु
07/12/2065	06/05/2066	06/07/2067	10/11/2067	11/06/2068
06/05/2066	06/07/2067	10/11/2067	11/06/2068	22/02/2071
केतु 16/12/2065	शुक्र 16/07/2066	सूर्य 12/07/2067	चंद्र 28/11/2067	राहु 05/11/2068
शुक्र 10/01/2066	सूर्य 06/08/2066	चंद्र 23/07/2067	मंगल 11/12/2067	गुरु 17/03/2069
सूर्य 17/01/2066	चंद्र 10/09/2066	मंगल 30/07/2067	राहु 12/01/2068	शनि 20/08/2069
चंद्र 30/01/2066	मंगल 05/10/2066	राहु 18/08/2067	गुरु 09/02/2068	बुध 07/01/2070
मंगल 08/02/2066	राहु 08/12/2066	गुरु 04/09/2067	शनि 14/03/2068	केतु 05/03/2070
राहु 02/03/2066	गुरु 03/02/2067	शनि 25/09/2067	बुध 13/04/2068	शुक्र 17/08/2070
गुरु 22/03/2066	शनि 11/04/2067	बुध 13/10/2067	केतु 25/04/2068	सूर्य 05/10/2070
शनि 14/04/2066	बुध 11/06/2067	केतु 20/10/2067	शुक्र 31/05/2068	चंद्र 26/12/2070
बुध 06/05/2066	केतु 06/07/2067	शुक्र 10/11/2067	सूर्य 11/06/2068	मंगल 22/02/2071

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु 22/02/2071 17/07/2073	राहु - शनि 17/07/2073 23/05/2076	राहु - बुध 23/05/2076 11/12/2078	राहु - केतु 11/12/2078 29/12/2079	राहु - शुक्र 29/12/2079 29/12/2082
गुरु 19/06/2071 शनि 04/11/2071 बुध 08/03/2072 केतु 28/04/2072 शुक्र 21/09/2072 सूर्य 04/11/2072 चंद्र 16/01/2073 मंगल 08/03/2073 राहु 17/07/2073	शनि 29/12/2073 बुध 26/05/2074 केतु 25/07/2074 शुक्र 15/01/2075 सूर्य 08/03/2075 चंद्र 03/06/2075 मंगल 02/08/2075 राहु 05/01/2076 गुरु 23/05/2076	बुध 02/10/2076 केतु 26/11/2076 शुक्र 30/04/2077 सूर्य 15/06/2077 चंद्र 01/09/2077 मंगल 25/10/2077 राहु 14/03/2078 गुरु 16/07/2078 शनि 11/12/2078	केतु 02/01/2079 शुक्र 07/03/2079 सूर्य 26/03/2079 चंद्र 27/04/2079 मंगल 19/05/2079 राहु 16/07/2079 गुरु 05/09/2079 शनि 05/11/2079 बुध 29/12/2079	शुक्र 29/06/2080 सूर्य 23/08/2080 चंद्र 22/11/2080 मंगल 25/01/2081 राहु 08/07/2081 गुरु 01/12/2081 शनि 24/05/2082 बुध 26/10/2082 केतु 29/12/2082
राहु - सूर्य 29/12/2082 23/11/2083	राहु - चंद्र 23/11/2083 24/05/2085	राहु - मंगल 24/05/2085 11/06/2086	गुरु - गुरु 11/06/2086 29/07/2088	गुरु - शनि 29/07/2088 10/02/2091
सूर्य 14/01/2083 चंद्र 11/02/2083 मंगल 02/03/2083 राहु 20/04/2083 गुरु 03/06/2083 शनि 25/07/2083 बुध 10/09/2083 केतु 29/09/2083 शुक्र 23/11/2083	चंद्र 07/01/2084 मंगल 08/02/2084 राहु 30/04/2084 गुरु 13/07/2084 शनि 07/10/2084 बुध 24/12/2084 केतु 25/01/2085 शुक्र 26/04/2085 सूर्य 24/05/2085	मंगल 15/06/2085 राहु 11/08/2085 गुरु 02/10/2085 शनि 01/12/2085 बुध 25/01/2086 केतु 16/02/2086 शुक्र 21/04/2086 सूर्य 10/05/2086 चंद्र 11/06/2086	गुरु 23/09/2086 शनि 24/01/2087 बुध 15/05/2087 केतु 29/06/2087 शुक्र 06/11/2087 सूर्य 15/12/2087 चंद्र 18/02/2088 मंगल 03/04/2088 राहु 29/07/2088	शनि 23/12/2088 बुध 03/05/2089 केतु 26/06/2089 शुक्र 27/11/2089 सूर्य 12/01/2090 चंद्र 30/03/2090 मंगल 23/05/2090 राहु 09/10/2090 गुरु 10/02/2091
गुरु - बुध 10/02/2091 17/05/2093	गुरु - केतु 17/05/2093 23/04/2094	गुरु - शुक्र 23/04/2094 22/12/2096	गुरु - सूर्य 22/12/2096 11/10/2097	गुरु - चंद्र 11/10/2097 10/02/2099
बुध 07/06/2091 केतु 25/07/2091 शुक्र 10/12/2091 सूर्य 21/01/2092 चंद्र 30/03/2092 मंगल 17/05/2092 राहु 18/09/2092 गुरु 06/01/2093 शनि 17/05/2093	केतु 06/06/2093 शुक्र 02/08/2093 सूर्य 19/08/2093 चंद्र 17/09/2093 मंगल 06/10/2093 राहु 27/11/2093 गुरु 11/01/2094 शनि 06/03/2094 बुध 23/04/2094	शुक्र 03/10/2094 सूर्य 20/11/2094 चंद्र 10/02/2095 मंगल 07/04/2095 राहु 31/08/2095 गुरु 08/01/2096 शनि 11/06/2096 बुध 27/10/2096 केतु 22/12/2096	सूर्य 06/01/2097 चंद्र 30/01/2097 मंगल 16/02/2097 राहु 01/04/2097 गुरु 10/05/2097 शनि 25/06/2097 बुध 06/08/2097 केतु 23/08/2097 शुक्र 11/10/2097	चंद्र 20/11/2097 मंगल 19/12/2097 राहु 02/03/2098 गुरु 06/05/2098 शनि 22/07/2098 बुध 29/09/2098 केतु 27/10/2098 शुक्र 16/01/2099 सूर्य 10/02/2099

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - शुक्र - सूर्य	शुक्र - शुक्र - चंद्र	शुक्र - शुक्र - मंगल	शुक्र - शुक्र - राहु
31/12/2025 05:16	02/03/2026 02:16	11/06/2026 13:16	21/08/2026 13:46
02/03/2026 02:16	11/06/2026 13:16	21/08/2026 13:46	20/02/2027 04:46
सूर्य 03/01/2026 06:19	चंद्र 10/03/2026 13:11	मंगल 15/06/2026 16:41	राहु 17/09/2026 23:13
चंद्र 08/01/2026 08:04	मंगल 16/03/2026 11:13	राहु 26/06/2026 08:22	गुरु 12/10/2026 07:37
मंगल 11/01/2026 21:17	राहु 31/03/2026 16:28	गुरु 05/07/2026 19:38	शनि 10/11/2026 05:35
राहु 21/01/2026 00:26	गुरु 14/04/2026 05:08	शनि 17/07/2026 01:31	बुध 06/12/2026 02:31
गुरु 29/01/2026 03:14	शनि 30/04/2026 06:41	बुध 27/07/2026 02:59	केतु 16/12/2026 18:11
शनि 07/02/2026 18:34	बुध 14/05/2026 15:38	केतु 31/07/2026 06:25	शुक्र 16/01/2027 04:41
बुध 16/02/2026 09:32	केतु 20/05/2026 13:41	शुक्र 12/08/2026 02:30	सूर्य 25/01/2027 07:50
केतु 19/02/2026 22:46	शुक्र 06/06/2026 11:31	सूर्य 15/08/2026 15:43	चंद्र 09/02/2027 13:05
शुक्र 02/03/2026 02:16	सूर्य 11/06/2026 13:16	चंद्र 21/08/2026 13:46	मंगल 20/02/2027 04:46
शुक्र - शुक्र - गुरु	शुक्र - शुक्र - शनि	शुक्र - शुक्र - बुध	शुक्र - शुक्र - केतु
20/02/2027 04:46	01/08/2027 12:46	10/02/2028 07:16	31/07/2028 18:46
01/08/2027 12:46	10/02/2028 07:16	31/07/2028 18:46	10/10/2028 19:16
गुरु 13/03/2027 20:14	शनि 01/09/2027 01:17	बुध 05/03/2028 17:41	केतु 04/08/2028 22:11
शनि 08/04/2027 13:06	बुध 28/09/2027 08:43	केतु 15/03/2028 19:10	शुक्र 16/08/2028 18:16
बुध 01/05/2027 13:02	केतु 09/10/2027 14:35	शुक्र 13/04/2028 13:05	सूर्य 20/08/2028 07:30
केतु 11/05/2027 00:18	शुक्र 10/11/2027 17:40	सूर्य 22/04/2028 04:03	चंद्र 26/08/2028 05:32
शुक्र 07/06/2027 01:38	सूर्य 20/11/2027 09:00	चंद्र 06/05/2028 13:01	मंगल 30/08/2028 08:58
सूर्य 15/06/2027 04:26	चंद्र 06/12/2027 10:32	मंगल 16/05/2028 14:29	राहु 10/09/2028 00:39
चंद्र 28/06/2027 17:06	मंगल 17/12/2027 16:25	राहु 11/06/2028 11:24	गुरु 19/09/2028 11:55
मंगल 08/07/2027 04:22	राहु 15/01/2028 14:24	गुरु 04/07/2028 11:20	शनि 30/09/2028 17:47
राहु 01/08/2027 12:46	गुरु 10/02/2028 07:16	शनि 31/07/2028 18:46	बुध 10/10/2028 19:16
शुक्र - सूर्य - सूर्य	शुक्र - सूर्य - चंद्र	शुक्र - सूर्य - मंगल	शुक्र - सूर्य - राहु
10/10/2028 19:16	29/10/2028 01:34	28/11/2028 12:04	19/12/2028 19:25
29/10/2028 01:34	28/11/2028 12:04	19/12/2028 19:25	12/02/2029 14:19
सूर्य 11/10/2028 17:11	चंद्र 31/10/2028 14:26	मंगल 29/11/2028 17:53	राहु 28/12/2028 00:39
चंद्र 13/10/2028 05:42	मंगल 02/11/2028 09:03	राहु 02/12/2028 22:36	गुरु 04/01/2029 07:58
मंगल 14/10/2028 07:16	राहु 06/11/2028 22:37	गुरु 05/12/2028 18:46	शनि 13/01/2029 00:10
राहु 17/10/2028 01:01	गुरु 11/11/2028 00:01	शनि 09/12/2028 03:44	बुध 20/01/2029 18:26
गुरु 19/10/2028 11:27	शनि 15/11/2028 19:41	बुध 12/12/2028 04:11	केतु 23/01/2029 23:08
शनि 22/10/2028 08:51	बुध 20/11/2028 03:10	केतु 13/12/2028 10:00	शुक्र 02/02/2029 02:17
बुध 24/10/2028 22:57	केतु 21/11/2028 21:47	शुक्र 16/12/2028 23:14	सूर्य 04/02/2029 20:02
केतु 26/10/2028 00:31	शुक्र 26/11/2028 23:32	सूर्य 18/12/2028 00:48	चंद्र 09/02/2029 09:37
शुक्र 29/10/2028 01:34	सूर्य 28/11/2028 12:04	चंद्र 19/12/2028 19:25	मंगल 12/02/2029 14:19

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - सूर्य - गुरु	शुक्र - सूर्य - शनि	शुक्र - सूर्य - बुध	शुक्र - सूर्य - केतु
12/02/2029 14:19	02/04/2029 07:07	30/05/2029 03:04	20/07/2029 20:55
02/04/2029 07:07	30/05/2029 03:04	20/07/2029 20:55	11/08/2029 04:16
गुरु 19/02/2029 02:09	शनि 11/04/2029 10:52	बुध 06/06/2029 10:59	केतु 22/07/2029 02:44
शनि 26/02/2029 19:13	बुध 19/04/2029 15:30	केतु 09/06/2029 11:26	शुक्र 25/07/2029 15:58
बुध 05/03/2029 16:47	केतु 23/04/2029 00:28	शुक्र 18/06/2029 02:24	सूर्य 26/07/2029 17:32
केतु 08/03/2029 12:58	शुक्र 02/05/2029 15:47	सूर्य 20/06/2029 16:30	चंद्र 28/07/2029 12:09
शुक्र 16/03/2029 15:46	सूर्य 05/05/2029 13:11	चंद्र 24/06/2029 23:59	मंगल 29/07/2029 17:58
सूर्य 19/03/2029 02:13	चंद्र 10/05/2029 08:51	मंगल 28/06/2029 00:26	राहु 01/08/2029 22:41
चंद्र 23/03/2029 03:37	मंगल 13/05/2029 17:49	राहु 05/07/2029 18:42	गुरु 04/08/2029 18:51
मंगल 25/03/2029 23:47	राहु 22/05/2029 10:00	गुरु 12/07/2029 16:17	शनि 08/08/2029 03:49
राहु 02/04/2029 07:07	गुरु 30/05/2029 03:04	शनि 20/07/2029 20:55	बुध 11/08/2029 04:16
शुक्र - सूर्य - शुक्र	शुक्र - चंद्र - चंद्र	शुक्र - चंद्र - मंगल	शुक्र - चंद्र - राहु
11/08/2029 04:16	11/10/2029 01:16	30/11/2029 18:46	05/01/2030 07:01
11/10/2029 01:16	30/11/2029 18:46	05/01/2030 07:01	06/04/2030 14:31
शुक्र 21/08/2029 07:46	चंद्र 15/10/2029 06:43	मंगल 02/12/2029 20:29	राहु 18/01/2030 23:44
सूर्य 24/08/2029 08:49	मंगल 18/10/2029 05:44	राहु 08/12/2029 04:19	गुरु 31/01/2030 03:56
चंद्र 29/08/2029 10:34	राहु 25/10/2029 20:22	गुरु 12/12/2029 21:57	शनि 14/02/2030 14:55
मंगल 01/09/2029 23:47	गुरु 01/11/2029 14:42	शनि 18/12/2029 12:53	बुध 27/02/2030 13:23
राहु 11/09/2029 02:56	शनि 09/11/2029 15:28	बुध 23/12/2029 13:37	केतु 04/03/2030 21:13
गुरु 19/09/2029 05:44	बुध 16/11/2029 19:57	केतु 25/12/2029 15:20	शुक्र 20/03/2030 02:28
शनि 28/09/2029 21:04	केतु 19/11/2029 18:58	शुक्र 31/12/2029 13:23	सूर्य 24/03/2030 16:03
बुध 07/10/2029 12:02	शुक्र 28/11/2029 05:53	सूर्य 02/01/2030 07:59	चंद्र 01/04/2030 06:40
केतु 11/10/2029 01:16	सूर्य 30/11/2029 18:46	चंद्र 05/01/2030 07:01	मंगल 06/04/2030 14:31
शुक्र - चंद्र - गुरु	शुक्र - चंद्र - शनि	शुक्र - चंद्र - बुध	शुक्र - चंद्र - केतु
06/04/2030 14:31	26/06/2030 18:31	01/10/2030 03:46	26/12/2030 09:31
26/06/2030 18:31	01/10/2030 03:46	26/12/2030 09:31	30/01/2031 21:46
गुरु 17/04/2030 10:15	शनि 12/07/2030 00:47	बुध 13/10/2030 08:59	केतु 28/12/2030 11:14
शनि 30/04/2030 06:41	बुध 25/07/2030 16:29	केतु 18/10/2030 09:43	शुक्र 03/01/2031 09:16
बुध 11/05/2030 18:39	केतु 31/07/2030 07:26	शुक्र 01/11/2030 18:40	सूर्य 05/01/2031 03:53
केतु 16/05/2030 12:17	शुक्र 16/08/2030 08:58	सूर्य 06/11/2030 02:09	चंद्र 08/01/2031 02:54
शुक्र 30/05/2030 00:57	सूर्य 21/08/2030 04:38	चंद्र 13/11/2030 06:38	मंगल 10/01/2031 04:37
सूर्य 03/06/2030 02:21	चंद्र 29/08/2030 05:24	मंगल 18/11/2030 07:22	राहु 15/01/2031 12:27
चंद्र 09/06/2030 20:41	मंगल 03/09/2030 20:20	राहु 01/12/2030 05:50	गुरु 20/01/2031 06:05
मंगल 14/06/2030 14:19	राहु 18/09/2030 07:20	गुरु 12/12/2030 17:48	शनि 25/01/2031 21:02
राहु 26/06/2030 18:31	गुरु 01/10/2030 03:46	शनि 26/12/2030 09:31	बुध 30/01/2031 21:46

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - चंद्र - शुक्र 30/01/2031 21:46 12/05/2031 08:46	शुक्र - चंद्र - सूर्य 12/05/2031 08:46 11/06/2031 19:16	शुक्र - मंगल - मंगल 11/06/2031 19:16 06/07/2031 15:50	शुक्र - मंगल - राहु 06/07/2031 15:50 08/09/2031 13:53
शुक्र 16/02/2031 19:36 सूर्य 21/02/2031 21:21 चंद्र 02/03/2031 08:16 मंगल 08/03/2031 06:18 राहु 23/03/2031 11:33 गुरु 06/04/2031 00:13 शनि 22/04/2031 01:46 बुध 06/05/2031 10:43 केतु 12/05/2031 08:46	सूर्य 13/05/2031 21:17 चंद्र 16/05/2031 10:10 मंगल 18/05/2031 04:46 राहु 22/05/2031 18:21 गुरु 26/05/2031 19:45 शनि 31/05/2031 15:25 बुध 04/06/2031 22:54 केतु 06/06/2031 17:31 शुक्र 11/06/2031 19:16	मंगल 13/06/2031 06:04 राहु 16/06/2031 23:33 गुरु 20/06/2031 07:05 शनि 24/06/2031 05:33 बुध 27/06/2031 18:04 केतु 29/06/2031 04:52 शुक्र 03/07/2031 08:18 सूर्य 04/07/2031 14:07 चंद्र 06/07/2031 15:50	राहु 16/07/2031 05:57 गुरु 24/07/2031 18:29 शनि 03/08/2031 21:22 बुध 12/08/2031 22:42 केतु 16/08/2031 16:11 शुक्र 27/08/2031 07:52 सूर्य 30/08/2031 12:34 चंद्र 04/09/2031 20:24 मंगल 08/09/2031 13:53
शुक्र - मंगल - गुरु 08/09/2031 13:53 04/11/2031 09:29	शुक्र - मंगल - शनि 04/11/2031 09:29 10/01/2032 20:46	शुक्र - मंगल - बुध 10/01/2032 20:46 11/03/2032 05:35	शुक्र - मंगल - केतु 11/03/2032 05:35 05/04/2032 02:10
गुरु 16/09/2031 03:42 शनि 25/09/2031 03:36 बुध 03/10/2031 04:47 केतु 06/10/2031 12:19 शुक्र 15/10/2031 23:35 सूर्य 18/10/2031 19:46 चंद्र 23/10/2031 13:24 मंगल 26/10/2031 20:57 राहु 04/11/2031 09:29	शनि 15/11/2031 01:52 बुध 24/11/2031 15:16 केतु 28/11/2031 13:44 शुक्र 09/12/2031 19:36 सूर्य 13/12/2031 04:34 चंद्र 18/12/2031 19:31 मंगल 22/12/2031 17:58 राहु 01/01/2032 20:51 गुरु 10/01/2032 20:46	बुध 19/01/2032 10:01 केतु 22/01/2032 22:32 शुक्र 01/02/2032 24:00 सूर्य 05/02/2032 00:26 चंद्र 10/02/2032 01:10 मंगल 13/02/2032 13:41 राहु 22/02/2032 15:01 गुरु 01/03/2032 16:11 शनि 11/03/2032 05:35	केतु 12/03/2032 16:23 शुक्र 16/03/2032 19:49 सूर्य 18/03/2032 01:39 चंद्र 20/03/2032 03:22 मंगल 21/03/2032 14:10 राहु 25/03/2032 07:39 गुरु 28/03/2032 15:11 शनि 01/04/2032 13:39 बुध 05/04/2032 02:10
शुक्र - मंगल - शुक्र 05/04/2032 02:10 15/06/2032 02:40	शुक्र - मंगल - सूर्य 15/06/2032 02:40 06/07/2032 10:01	शुक्र - मंगल - चंद्र 06/07/2032 10:01 10/08/2032 22:16	शुक्र - राहु - राहु 10/08/2032 22:16 22/01/2033 06:58
शुक्र 16/04/2032 22:15 सूर्य 20/04/2032 11:28 चंद्र 26/04/2032 09:31 मंगल 30/04/2032 12:56 राहु 11/05/2032 04:37 गुरु 20/05/2032 15:53 शनि 31/05/2032 21:46 बुध 10/06/2032 23:14 केतु 15/06/2032 02:40	सूर्य 16/06/2032 04:14 चंद्र 17/06/2032 22:50 मंगल 19/06/2032 04:40 राहु 22/06/2032 09:22 गुरु 25/06/2032 05:33 शनि 28/06/2032 14:31 बुध 01/07/2032 14:57 केतु 02/07/2032 20:47 शुक्र 06/07/2032 10:01	चंद्र 09/07/2032 09:02 मंगल 11/07/2032 10:45 राहु 16/07/2032 18:35 गुरु 21/07/2032 12:13 शनि 27/07/2032 03:09 बुध 01/08/2032 03:54 केतु 03/08/2032 05:36 शुक्र 09/08/2032 03:39 सूर्य 10/08/2032 22:16	राहु 04/09/2032 13:58 गुरु 26/09/2032 11:56 शनि 22/10/2032 12:30 बुध 14/11/2032 19:20 केतु 24/11/2032 09:27 शुक्र 21/12/2032 18:54 सूर्य 30/12/2032 00:08 चंद्र 12/01/2033 16:51 मंगल 22/01/2033 06:58

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - राहु - गुरु	शुक्र - राहु - शनि	शुक्र - राहु - बुध	शुक्र - राहु - केतु
22/01/2033 06:58	17/06/2033 09:22	07/12/2033 21:13	12/05/2034 02:46
17/06/2033 09:22	07/12/2033 21:13	12/05/2034 02:46	15/07/2034 00:49
गुरु 10/02/2033 18:29	शनि 14/07/2033 20:38	बुध 29/12/2033 21:00	केतु 15/05/2034 20:15
शनि 05/03/2033 21:40	बुध 08/08/2033 10:31	केतु 07/01/2034 22:19	शुक्र 26/05/2034 11:55
बुध 26/03/2033 14:24	केतु 18/08/2033 13:24	शुक्र 02/02/2034 19:15	सूर्य 29/05/2034 16:37
केतु 04/04/2033 02:56	शुक्र 16/09/2033 11:23	सूर्य 10/02/2034 13:31	चंद्र 04/06/2034 00:28
शुक्र 28/04/2033 11:20	सूर्य 25/09/2033 03:34	चंद्र 23/02/2034 11:59	मंगल 07/06/2034 17:57
सूर्य 05/05/2033 18:40	चंद्र 09/10/2033 14:34	मंगल 04/03/2034 13:19	राहु 17/06/2034 08:03
चंद्र 17/05/2033 22:52	मंगल 19/10/2033 17:27	राहु 27/03/2034 20:09	गुरु 25/06/2034 20:36
मंगल 26/05/2033 11:24	राहु 14/11/2033 18:02	गुरु 17/04/2034 12:53	शनि 05/07/2034 23:29
राहु 17/06/2033 09:22	गुरु 07/12/2033 21:13	शनि 12/05/2034 02:46	बुध 15/07/2034 00:49
शुक्र - राहु - शुक्र	शुक्र - राहु - सूर्य	शुक्र - राहु - चंद्र	शुक्र - राहु - मंगल
15/07/2034 00:49	13/01/2035 15:49	09/03/2035 10:43	08/06/2035 18:13
13/01/2035 15:49	09/03/2035 10:43	08/06/2035 18:13	11/08/2035 16:16
शुक्र 14/08/2034 11:19	सूर्य 16/01/2035 09:33	चंद्र 17/03/2035 01:20	मंगल 12/06/2035 11:42
सूर्य 23/08/2034 14:28	चंद्र 20/01/2035 23:08	मंगल 22/03/2035 09:10	राहु 22/06/2035 01:48
चंद्र 07/09/2034 19:43	मंगल 24/01/2035 03:50	राहु 05/04/2035 01:54	गुरु 30/06/2035 14:21
मंगल 18/09/2034 11:23	राहु 01/02/2035 09:04	गुरु 17/04/2035 06:06	शनि 10/07/2035 17:14
राहु 15/10/2034 20:50	गुरु 08/02/2035 16:23	शनि 01/05/2035 17:05	बुध 19/07/2035 18:34
गुरु 09/11/2034 05:14	शनि 17/02/2035 08:35	बुध 14/05/2035 15:33	केतु 23/07/2035 12:03
शनि 08/12/2034 03:13	बुध 25/02/2035 02:52	केतु 19/05/2035 23:23	शुक्र 03/08/2035 03:43
बुध 03/01/2035 00:08	केतु 28/02/2035 07:34	शुक्र 04/06/2035 04:38	सूर्य 06/08/2035 08:25
केतु 13/01/2035 15:49	शुक्र 09/03/2035 10:43	सूर्य 08/06/2035 18:13	चंद्र 11/08/2035 16:16
शुक्र - गुरु - गुरु	शुक्र - गुरु - शनि	शुक्र - गुरु - बुध	शुक्र - गुरु - केतु
11/08/2035 16:16	19/12/2035 13:04	21/05/2036 18:16	06/10/2036 17:52
19/12/2035 13:04	21/05/2036 18:16	06/10/2036 17:52	02/12/2036 13:28
गुरु 28/08/2035 23:50	शनि 12/01/2036 23:05	बुध 10/06/2036 07:24	केतु 10/10/2036 01:24
शनि 18/09/2035 13:20	बुध 03/02/2036 19:25	केतु 18/06/2036 08:35	शुक्र 19/10/2036 12:40
बुध 06/10/2035 22:52	केतु 12/02/2036 19:19	शुक्र 11/07/2036 08:31	सूर्य 22/10/2036 08:51
केतु 14/10/2035 12:41	शुक्र 09/03/2036 12:11	सूर्य 18/07/2036 06:06	चंद्र 27/10/2036 02:29
शुक्र 05/11/2035 04:09	सूर्य 17/03/2036 05:15	चंद्र 29/07/2036 18:04	मंगल 30/10/2036 10:02
सूर्य 11/11/2035 16:00	चंद्र 30/03/2036 01:41	मंगल 06/08/2036 19:14	राहु 07/11/2036 22:34
चंद्र 22/11/2035 11:44	मंगल 08/04/2036 01:35	राहु 27/08/2036 11:59	गुरु 15/11/2036 12:23
मंगल 30/11/2035 01:32	राहु 01/05/2036 04:46	गुरु 14/09/2036 21:31	शनि 24/11/2036 12:17
राहु 19/12/2035 13:04	गुरु 21/05/2036 18:16	शनि 06/10/2036 17:52	बुध 02/12/2036 13:28

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - शुक्र - सूर्य - शुक्र		शुक्र - शुक्र - चंद्र - चंद्र		शुक्र - शुक्र - चंद्र - मंगल		शुक्र - शुक्र - चंद्र - राहु	
19/02/2026 22:46		02/03/2026 02:16		10/03/2026 13:11		16/03/2026 11:13	
02/03/2026 02:16		10/03/2026 13:11		16/03/2026 11:13		31/03/2026 16:28	
शुक्र	21/02/2026 15:21	चंद्र	02/03/2026 19:10	मंगल	10/03/2026 21:28	राहु	18/03/2026 18:00
सूर्य	22/02/2026 03:31	मंगल	03/03/2026 07:00	राहु	11/03/2026 18:46	गुरु	20/03/2026 18:42
चंद्र	22/02/2026 23:49	राहु	04/03/2026 13:27	गुरु	12/03/2026 13:43	शनि	23/03/2026 04:32
मंगल	23/02/2026 14:01	गुरु	05/03/2026 16:30	शनि	13/03/2026 12:12	बुध	25/03/2026 08:17
राहु	25/02/2026 02:32	शनि	07/03/2026 00:38	बुध	14/03/2026 08:19	केतु	26/03/2026 05:35
गुरु	26/02/2026 11:00	बुध	08/03/2026 05:23	केतु	14/03/2026 16:36	शुक्र	28/03/2026 18:28
शनि	28/02/2026 01:34	केतु	08/03/2026 17:13	शुक्र	15/03/2026 16:17	सूर्य	29/03/2026 12:44
बुध	01/03/2026 12:03	शुक्र	10/03/2026 03:02	सूर्य	15/03/2026 23:23	चंद्र	30/03/2026 19:10
केतु	02/03/2026 02:16	सूर्य	10/03/2026 13:11	चंद्र	16/03/2026 11:13	मंगल	31/03/2026 16:28
शुक्र - शुक्र - चंद्र - गुरु		शुक्र - शुक्र - चंद्र - शनि		शुक्र - शुक्र - चंद्र - बुध		शुक्र - शुक्र - चंद्र - केतु	
31/03/2026 16:28		14/04/2026 05:08		30/04/2026 06:41		14/05/2026 15:38	
14/04/2026 05:08		30/04/2026 06:41		14/05/2026 15:38		20/05/2026 13:41	
गुरु	02/04/2026 11:45	शनि	16/04/2026 18:11	बुध	02/05/2026 07:33	केतु	14/05/2026 23:55
शनि	04/04/2026 15:10	बुध	19/04/2026 00:48	केतु	03/05/2026 03:40	शुक्र	15/05/2026 23:36
बुध	06/04/2026 13:09	केतु	19/04/2026 23:17	शुक्र	05/05/2026 13:10	सूर्य	16/05/2026 06:42
केतु	07/04/2026 08:06	शुक्र	22/04/2026 15:33	सूर्य	06/05/2026 06:25	चंद्र	16/05/2026 18:32
शुक्र	09/04/2026 14:12	सूर्य	23/04/2026 10:49	चंद्र	07/05/2026 11:09	मंगल	17/05/2026 02:49
सूर्य	10/04/2026 06:26	चंद्र	24/04/2026 18:57	मंगल	08/05/2026 07:17	राहु	18/05/2026 00:08
चंद्र	11/04/2026 09:30	मंगल	25/04/2026 17:26	राहु	10/05/2026 11:01	गुरु	18/05/2026 19:04
मंगल	12/04/2026 04:26	राहु	28/04/2026 03:16	गुरु	12/05/2026 09:01	शनि	19/05/2026 17:33
राहु	14/04/2026 05:08	गुरु	30/04/2026 06:41	शनि	14/05/2026 15:38	बुध	20/05/2026 13:41
शुक्र - शुक्र - चंद्र - शुक्र		शुक्र - शुक्र - चंद्र - सूर्य		शुक्र - शुक्र - मंगल - मंगल		शुक्र - शुक्र - मंगल - राहु	
20/05/2026 13:41		06/06/2026 11:31		11/06/2026 13:16		15/06/2026 16:41	
06/06/2026 11:31		11/06/2026 13:16		15/06/2026 16:41		26/06/2026 08:22	
शुक्र	23/05/2026 09:19	सूर्य	06/06/2026 17:36	मंगल	11/06/2026 19:04	राहु	17/06/2026 07:02
सूर्य	24/05/2026 05:36	चंद्र	07/06/2026 03:45	राहु	12/06/2026 09:59	गुरु	18/06/2026 17:08
चंद्र	25/05/2026 15:26	मंगल	07/06/2026 10:51	गुरु	12/06/2026 23:14	शनि	20/06/2026 09:37
मंगल	26/05/2026 15:06	राहु	08/06/2026 05:07	शनि	13/06/2026 14:59	बुध	21/06/2026 21:50
राहु	29/05/2026 03:59	गुरु	08/06/2026 21:21	बुध	14/06/2026 05:04	केतु	22/06/2026 12:45
गुरु	31/05/2026 10:05	शनि	09/06/2026 16:37	केतु	14/06/2026 10:52	शुक्र	24/06/2026 07:22
शनि	03/06/2026 02:21	बुध	10/06/2026 09:52	शुक्र	15/06/2026 03:26	सूर्य	24/06/2026 20:09
बुध	05/06/2026 11:50	केतु	10/06/2026 16:58	सूर्य	15/06/2026 08:24	चंद्र	25/06/2026 17:27
केतु	06/06/2026 11:31	शुक्र	11/06/2026 13:16	चंद्र	15/06/2026 16:41	मंगल	26/06/2026 08:22



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - शुक्र - मंगल - गुरु		शुक्र - शुक्र - मंगल - शनि		शुक्र - शुक्र - मंगल - बुध		शुक्र - शुक्र - मंगल - केतु	
26/06/2026 08:22		05/07/2026 19:38		17/07/2026 01:31		27/07/2026 02:59	
05/07/2026 19:38		17/07/2026 01:31		27/07/2026 02:59		31/07/2026 06:25	
गुरु	27/06/2026 14:40	शनि	07/07/2026 14:22	बुध	18/07/2026 11:43	केतु	27/07/2026 08:47
शनि	29/06/2026 02:39	बुध	09/07/2026 04:36	केतु	19/07/2026 01:48	शुक्र	28/07/2026 01:21
बुध	30/06/2026 10:51	केतु	09/07/2026 20:20	शुक्र	20/07/2026 18:03	सूर्य	28/07/2026 06:19
केतु	01/07/2026 00:06	शुक्र	11/07/2026 17:19	सूर्य	21/07/2026 06:07	चंद्र	28/07/2026 14:37
शुक्र	02/07/2026 13:59	सूर्य	12/07/2026 06:49	चंद्र	22/07/2026 02:15	मंगल	28/07/2026 20:25
सूर्य	03/07/2026 01:21	चंद्र	13/07/2026 05:18	मंगल	22/07/2026 16:20	राहु	29/07/2026 11:20
चंद्र	03/07/2026 20:17	मंगल	13/07/2026 21:03	राहु	24/07/2026 04:33	गुरु	30/07/2026 00:35
मंगल	04/07/2026 09:33	राहु	15/07/2026 13:32	गुरु	25/07/2026 12:45	शनि	30/07/2026 16:20
राहु	05/07/2026 19:38	गुरु	17/07/2026 01:31	शनि	27/07/2026 02:59	बुध	31/07/2026 06:25
शुक्र - शुक्र - मंगल - शुक्र		शुक्र - शुक्र - मंगल - सूर्य		शुक्र - शुक्र - मंगल - चंद्र		शुक्र - शुक्र - राहु - राहु	
31/07/2026 06:25		12/08/2026 02:30		15/08/2026 15:43		21/08/2026 13:46	
12/08/2026 02:30		15/08/2026 15:43		21/08/2026 13:46		17/09/2026 23:13	
शुक्र	02/08/2026 05:45	सूर्य	12/08/2026 06:45	चंद्र	16/08/2026 03:33	राहु	25/08/2026 16:23
सूर्य	02/08/2026 19:58	चंद्र	12/08/2026 13:51	मंगल	16/08/2026 11:51	गुरु	29/08/2026 08:02
चंद्र	03/08/2026 19:38	मंगल	12/08/2026 18:50	राहु	17/08/2026 09:09	शनि	02/09/2026 16:08
मंगल	04/08/2026 12:12	राहु	13/08/2026 07:37	गुरु	18/08/2026 04:05	बुध	06/09/2026 13:16
राहु	06/08/2026 06:49	गुरु	13/08/2026 18:59	शनि	19/08/2026 02:35	केतु	08/09/2026 03:37
गुरु	07/08/2026 20:42	शनि	14/08/2026 08:28	बुध	19/08/2026 22:42	शुक्र	12/09/2026 17:12
शनि	09/08/2026 17:41	बुध	14/08/2026 20:33	केतु	20/08/2026 06:59	सूर्य	14/09/2026 02:04
बुध	11/08/2026 09:55	केतु	15/08/2026 01:31	शुक्र	21/08/2026 06:40	चंद्र	16/09/2026 08:52
केतु	12/08/2026 02:30	शुक्र	15/08/2026 15:43	सूर्य	21/08/2026 13:46	मंगल	17/09/2026 23:13
शुक्र - शुक्र - राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र - राहु - शनि		शुक्र - शुक्र - राहु - बुध		शुक्र - शुक्र - राहु - केतु	
17/09/2026 23:13		12/10/2026 07:37		10/11/2026 05:35		06/12/2026 02:31	
12/10/2026 07:37		10/11/2026 05:35		06/12/2026 02:31		16/12/2026 18:11	
गुरु	21/09/2026 05:08	शनि	16/10/2026 21:29	बुध	13/11/2026 21:33	केतु	06/12/2026 17:26
शनि	25/09/2026 01:40	बुध	20/10/2026 23:48	केतु	15/11/2026 09:46	शुक्र	08/12/2026 12:02
बुध	28/09/2026 12:27	केतु	22/10/2026 16:17	शुक्र	19/11/2026 17:16	सूर्य	09/12/2026 00:49
केतु	29/09/2026 22:32	शुक्र	27/10/2026 11:57	सूर्य	21/11/2026 00:18	चंद्र	09/12/2026 22:08
शुक्र	03/10/2026 23:56	सूर्य	28/10/2026 22:39	चंद्र	23/11/2026 04:03	मंगल	10/12/2026 13:03
सूर्य	05/10/2026 05:10	चंद्र	31/10/2026 08:29	मंगल	24/11/2026 16:16	राहु	12/12/2026 03:24
चंद्र	07/10/2026 05:52	मंगल	02/11/2026 00:58	राहु	28/11/2026 13:24	गुरु	13/12/2026 13:29
मंगल	08/10/2026 15:57	राहु	06/11/2026 09:03	गुरु	02/12/2026 00:12	शनि	15/12/2026 05:58
राहु	12/10/2026 07:37	गुरु	10/11/2026 05:35	शनि	06/12/2026 02:31	बुध	16/12/2026 18:11



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 4 वर्ष 8 मास 27 दिन

सूर्य 11 वर्ष	मंगल 12 वर्ष	गुरु 13 वर्ष	शनि 14 वर्ष	केतु 15 वर्ष
02/04/1993	29/12/1997	29/12/2009	29/12/2022	29/12/2036
29/12/1997	29/12/2009	29/12/2022	29/12/2036	29/12/2051
00/00/0000	मंगल 27/03/1999	गुरु 14/06/2011	शनि 06/09/2024	केतु 07/12/2038
00/00/0000	गुरु 31/07/2000	शनि 07/01/2013	केतु 30/06/2026	चंद्र 01/01/2041
00/00/0000	शनि 11/01/2002	केतु 13/09/2014	चंद्र 04/06/2028	बुध 15/03/2043
00/00/0000	केतु 31/07/2003	चंद्र 29/06/2016	बुध 23/06/2030	शुक्र 12/07/2045
02/04/1993	चंद्र 27/03/2005	बुध 26/05/2018	शुक्र 25/08/2032	सूर्य 13/12/2046
चंद्र 04/09/1994	बुध 29/12/2006	शुक्र 01/06/2020	सूर्य 23/12/2033	मंगल 02/07/2048
बुध 15/04/1996	शुक्र 08/11/2008	सूर्य 25/08/2021	मंगल 05/06/2035	गुरु 08/03/2050
शुक्र 29/12/1997	सूर्य 29/12/2009	मंगल 29/12/2022	गुरु 29/12/2036	शनि 29/12/2051

चंद्र 16 वर्ष	बुध 17 वर्ष	शुक्र 18 वर्ष	सूर्य 11 वर्ष
29/12/2051	29/12/2067	29/12/2084	30/12/2102
29/12/2067	29/12/2084	30/12/2102	00/00/0000
चंद्र 15/03/2054	बुध 26/06/2070	शुक्र 15/10/2087	सूर्य 15/01/2104
बुध 18/07/2056	शुक्र 14/02/2073	सूर्य 29/06/2089	मंगल 06/03/2105
शुक्र 11/01/2059	सूर्य 26/09/2074	मंगल 10/05/2091	गुरु 30/05/2106
सूर्य 18/07/2060	मंगल 29/06/2076	गुरु 16/05/2093	शनि 27/09/2107
मंगल 15/03/2062	गुरु 26/05/2078	शनि 19/07/2095	केतु 28/02/2109
गुरु 29/12/2063	शनि 13/06/2080	केतु 15/11/2097	चंद्र 03/04/2109
शनि 04/12/2065	केतु 25/08/2082	चंद्र 11/05/2100	00/00/0000
केतु 29/12/2067	चंद्र 29/12/2084	बुध 30/12/2102	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र 02/04/1993 04/09/1994	सूर्य - बुध 04/09/1994 15/04/1996	सूर्य - शुक्र 15/04/1996 29/12/1997	मंगल - मंगल 29/12/1997 27/03/1999	मंगल - गुरु 27/03/1999 31/07/2000
चंद्र 14/05/1993	बुध 29/11/1994	शुक्र 20/07/1996	मंगल 14/02/1998	गुरु 21/05/1999
बुध 03/08/1993	शुक्र 28/02/1995	सूर्य 17/09/1996	गुरु 06/04/1998	शनि 20/07/1999
शुक्र 28/10/1993	सूर्य 25/04/1995	मंगल 21/11/1996	शनि 30/05/1998	केतु 21/09/1999
सूर्य 20/12/1993	मंगल 25/06/1995	गुरु 30/01/1997	केतु 28/07/1998	चंद्र 28/11/1999
मंगल 15/02/1994	गुरु 30/08/1995	शनि 15/04/1997	चंद्र 29/09/1998	बुध 08/02/2000
गुरु 18/04/1994	शनि 09/11/1995	केतु 05/07/1997	बुध 04/12/1998	शुक्र 24/04/2000
शनि 24/06/1994	केतु 24/01/1996	चंद्र 29/09/1997	शुक्र 12/02/1999	सूर्य 10/06/2000
केतु 04/09/1994	चंद्र 15/04/1996	बुध 29/12/1997	सूर्य 27/03/1999	मंगल 31/07/2000
मंगल - शनि 31/07/2000 11/01/2002	मंगल - केतु 11/01/2002 31/07/2003	मंगल - चंद्र 31/07/2003 27/03/2005	मंगल - बुध 27/03/2005 29/12/2006	मंगल - शुक्र 29/12/2006 08/11/2008
शनि 02/10/2000	केतु 25/03/2002	चंद्र 23/10/2003	बुध 29/06/2005	शुक्र 14/04/2007
केतु 10/12/2000	चंद्र 11/06/2002	बुध 19/01/2004	शुक्र 07/10/2005	सूर्य 17/06/2007
चंद्र 21/02/2001	बुध 02/09/2002	शुक्र 22/04/2004	सूर्य 07/12/2005	मंगल 27/08/2007
बुध 09/05/2001	शुक्र 29/11/2002	सूर्य 18/06/2004	मंगल 11/02/2006	गुरु 11/11/2007
शुक्र 30/07/2001	सूर्य 22/01/2003	मंगल 20/08/2004	गुरु 24/04/2006	शनि 01/02/2008
सूर्य 19/09/2001	मंगल 21/03/2003	गुरु 27/10/2004	शनि 11/07/2006	केतु 29/04/2008
मंगल 12/11/2001	गुरु 24/05/2003	शनि 08/01/2005	केतु 02/10/2006	चंद्र 01/08/2008
गुरु 11/01/2002	शनि 31/07/2003	केतु 27/03/2005	चंद्र 29/12/2006	बुध 08/11/2008
मंगल - सूर्य 08/11/2008 29/12/2009	गुरु - गुरु 29/12/2009 14/06/2011	गुरु - शनि 14/06/2011 07/01/2013	गुरु - केतु 07/01/2013 13/09/2014	गुरु - चंद्र 13/09/2014 29/06/2016
सूर्य 18/12/2008	गुरु 27/02/2010	शनि 22/08/2011	केतु 28/03/2013	चंद्र 12/12/2014
मंगल 30/01/2009	शनि 02/05/2010	केतु 04/11/2011	चंद्र 20/06/2013	बुध 18/03/2015
गुरु 17/03/2009	केतु 10/07/2010	चंद्र 22/01/2012	बुध 18/09/2013	शुक्र 28/06/2015
शनि 06/05/2009	चंद्र 21/09/2010	बुध 15/04/2012	शुक्र 22/12/2013	सूर्य 29/08/2015
केतु 29/06/2009	बुध 08/12/2010	शुक्र 13/07/2012	सूर्य 19/02/2014	मंगल 05/11/2015
चंद्र 26/08/2009	शुक्र 01/03/2011	सूर्य 06/09/2012	मंगल 23/04/2014	गुरु 17/01/2016
बुध 25/10/2009	सूर्य 20/04/2011	मंगल 04/11/2012	गुरु 01/07/2014	शनि 05/04/2016
शुक्र 29/12/2009	मंगल 14/06/2011	गुरु 07/01/2013	शनि 13/09/2014	केतु 29/06/2016



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध 29/06/2016 26/05/2018	गुरु - शुक्र 26/05/2018 01/06/2020	गुरु - सूर्य 01/06/2020 25/08/2021	गुरु - मंगल 25/08/2021 29/12/2022	शनि - शनि 29/12/2022 06/09/2024
बुध 09/10/2016 शुक्र 25/01/2017 सूर्य 01/04/2017 मंगल 12/06/2017 गुरु 29/08/2017 शनि 21/11/2017 केतु 19/02/2018 चंद्र 26/05/2018	शुक्र 17/09/2018 सूर्य 26/11/2018 मंगल 10/02/2019 गुरु 04/05/2019 शनि 01/08/2019 केतु 04/11/2019 चंद्र 14/02/2020 बुध 01/06/2020	सूर्य 13/07/2020 मंगल 29/08/2020 गुरु 18/10/2020 शनि 12/12/2020 केतु 08/02/2021 चंद्र 11/04/2021 बुध 16/06/2021 शुक्र 25/08/2021	मंगल 15/10/2021 गुरु 09/12/2021 शनि 06/02/2022 केतु 11/04/2022 चंद्र 17/06/2022 बुध 28/08/2022 शुक्र 13/11/2022 सूर्य 29/12/2022	शनि 14/03/2023 केतु 01/06/2023 चंद्र 26/08/2023 बुध 24/11/2023 शुक्र 28/02/2024 सूर्य 26/04/2024 मंगल 29/06/2024 गुरु 06/09/2024
शनि - केतु 06/09/2024 30/06/2026	शनि - चंद्र 30/06/2026 04/06/2028	शनि - बुध 04/06/2028 23/06/2030	शनि - शुक्र 23/06/2030 25/08/2032	शनि - सूर्य 25/08/2032 23/12/2033
केतु 01/12/2024 चंद्र 02/03/2025 बुध 07/06/2025 शुक्र 18/09/2025 सूर्य 19/11/2025 मंगल 27/01/2026 गुरु 11/04/2026 शनि 30/06/2026	चंद्र 05/10/2026 बुध 16/01/2027 शुक्र 06/05/2027 सूर्य 12/07/2027 मंगल 23/09/2027 गुरु 11/12/2027 शनि 05/03/2028 केतु 04/06/2028	बुध 22/09/2028 शुक्र 16/01/2029 सूर्य 28/03/2029 मंगल 14/06/2029 गुरु 06/09/2029 शनि 05/12/2029 केतु 12/03/2030 चंद्र 23/06/2030	शुक्र 24/10/2030 सूर्य 08/01/2031 मंगल 31/03/2031 गुरु 28/06/2031 शनि 01/10/2031 केतु 12/01/2032 चंद्र 30/04/2032 बुध 25/08/2032	सूर्य 10/10/2032 मंगल 29/11/2032 गुरु 22/01/2033 शनि 22/03/2033 केतु 23/05/2033 चंद्र 29/07/2033 बुध 08/10/2033 शुक्र 23/12/2033
शनि - मंगल 23/12/2033 05/06/2035	शनि - गुरु 05/06/2035 29/12/2036	केतु - केतु 29/12/2036 07/12/2038	केतु - चंद्र 07/12/2038 01/01/2041	केतु - बुध 01/01/2041 15/03/2043
मंगल 15/02/2034 गुरु 16/04/2034 शनि 19/06/2034 केतु 26/08/2034 चंद्र 07/11/2034 बुध 23/01/2035 शुक्र 15/04/2035 सूर्य 05/06/2035	गुरु 08/08/2035 शनि 16/10/2035 केतु 29/12/2035 चंद्र 17/03/2036 बुध 09/06/2036 शुक्र 06/09/2036 सूर्य 30/10/2036 मंगल 29/12/2036	केतु 30/03/2037 चंद्र 06/07/2037 बुध 18/10/2037 शुक्र 05/02/2038 सूर्य 13/04/2038 मंगल 25/06/2038 गुरु 13/09/2038 शनि 07/12/2038	चंद्र 21/03/2039 बुध 10/07/2039 शुक्र 04/11/2039 सूर्य 15/01/2040 मंगल 02/04/2040 गुरु 26/06/2040 शनि 25/09/2040 केतु 01/01/2041	बुध 29/04/2041 शुक्र 31/08/2041 सूर्य 15/11/2041 मंगल 06/02/2042 गुरु 07/05/2042 शनि 12/08/2042 केतु 24/11/2042 चंद्र 15/03/2043

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - मंगल	केतु - गुरु	केतु - शनि
15/03/2043	12/07/2045	13/12/2046	02/07/2048	08/03/2050
12/07/2045	13/12/2046	02/07/2048	08/03/2050	29/12/2051
शुक्र 25/07/2043	सूर्य 30/08/2045	मंगल 10/02/2047	गुरु 09/09/2048	शनि 27/05/2050
सूर्य 13/10/2043	मंगल 23/10/2045	गुरु 15/04/2047	शनि 22/11/2048	केतु 21/08/2050
मंगल 09/01/2044	गुरु 20/12/2045	शनि 22/06/2047	केतु 10/02/2049	चंद्र 20/11/2050
गुरु 14/04/2044	शनि 21/02/2046	केतु 03/09/2047	चंद्र 05/05/2049	बुध 25/02/2051
शनि 25/07/2044	केतु 29/04/2046	चंद्र 20/11/2047	बुध 03/08/2049	शुक्र 07/06/2051
केतु 12/11/2044	चंद्र 10/07/2046	बुध 12/02/2048	शुक्र 06/11/2049	सूर्य 09/08/2051
चंद्र 09/03/2045	बुध 24/09/2046	शुक्र 09/05/2048	सूर्य 04/01/2050	मंगल 16/10/2051
बुध 12/07/2045	शुक्र 13/12/2046	सूर्य 02/07/2048	मंगल 08/03/2050	गुरु 29/12/2051
चंद्र - चंद्र	चंद्र - बुध	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	चंद्र - मंगल
29/12/2051	15/03/2054	18/07/2056	11/01/2059	18/07/2060
15/03/2054	18/07/2056	11/01/2059	18/07/2060	15/03/2062
चंद्र 19/04/2052	बुध 18/07/2054	शुक्र 06/12/2056	सूर्य 04/03/2059	मंगल 19/09/2060
बुध 15/08/2052	शुक्र 28/11/2054	सूर्य 02/03/2057	मंगल 01/05/2059	गुरु 25/11/2060
शुक्र 18/12/2052	सूर्य 17/02/2055	मंगल 03/06/2057	गुरु 02/07/2059	शनि 06/02/2061
सूर्य 04/03/2053	मंगल 17/05/2055	गुरु 13/09/2057	शनि 07/09/2059	केतु 25/04/2061
मंगल 27/05/2053	गुरु 21/08/2055	शनि 01/01/2058	केतु 17/11/2059	चंद्र 18/07/2061
गुरु 25/08/2053	शनि 02/12/2055	केतु 28/04/2058	चंद्र 02/02/2060	बुध 14/10/2061
शनि 30/11/2053	केतु 22/03/2056	चंद्र 31/08/2058	बुध 23/04/2060	शुक्र 16/01/2062
केतु 15/03/2054	चंद्र 18/07/2056	बुध 11/01/2059	शुक्र 18/07/2060	सूर्य 15/03/2062
चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - केतु	बुध - बुध	बुध - शुक्र
15/03/2062	29/12/2063	04/12/2065	29/12/2067	26/06/2070
29/12/2063	04/12/2065	29/12/2067	26/06/2070	14/02/2073
गुरु 27/05/2062	शनि 24/03/2064	केतु 11/03/2066	बुध 11/05/2068	शुक्र 23/11/2070
शनि 14/08/2062	केतु 23/06/2064	चंद्र 24/06/2066	शुक्र 29/09/2068	सूर्य 22/02/2071
केतु 07/11/2062	चंद्र 28/09/2064	बुध 12/10/2066	सूर्य 24/12/2068	मंगल 02/06/2071
चंद्र 05/02/2063	बुध 09/01/2065	शुक्र 07/02/2067	मंगल 28/03/2069	गुरु 18/09/2071
बुध 12/05/2063	शुक्र 29/04/2065	सूर्य 19/04/2067	गुरु 08/07/2069	शनि 12/01/2072
शुक्र 22/08/2063	सूर्य 05/07/2065	मंगल 07/07/2067	शनि 26/10/2069	केतु 16/05/2072
सूर्य 23/10/2063	मंगल 16/09/2065	गुरु 29/09/2067	केतु 21/02/2070	चंद्र 26/09/2072
मंगल 29/12/2063	गुरु 04/12/2065	शनि 29/12/2067	चंद्र 26/06/2070	बुध 14/02/2073

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य	बुध - मंगल	बुध - गुरु	बुध - शनि	बुध - केतु
14/02/2073	26/09/2074	29/06/2076	26/05/2078	13/06/2080
26/09/2074	29/06/2076	26/05/2078	13/06/2080	25/08/2082
सूर्य 11/04/2073	मंगल 01/12/2074	गुरु 15/09/2076	शनि 24/08/2078	केतु 25/09/2080
मंगल 11/06/2073	गुरु 11/02/2075	शनि 08/12/2076	केतु 29/11/2078	चंद्र 14/01/2081
गुरु 16/08/2073	शनि 30/04/2075	केतु 08/03/2077	चंद्र 13/03/2079	बुध 12/05/2081
शनि 26/10/2073	केतु 22/07/2075	चंद्र 12/06/2077	बुध 30/06/2079	शुक्र 13/09/2081
केतु 10/01/2074	चंद्र 18/10/2075	बुध 22/09/2077	शुक्र 25/10/2079	सूर्य 28/11/2081
चंद्र 01/04/2074	बुध 20/01/2076	शुक्र 08/01/2078	सूर्य 04/01/2080	मंगल 19/02/2082
बुध 26/06/2074	शुक्र 29/04/2076	सूर्य 15/03/2078	मंगल 21/03/2080	गुरु 20/05/2082
शुक्र 26/09/2074	सूर्य 29/06/2076	मंगल 26/05/2078	गुरु 13/06/2080	शनि 25/08/2082
बुध - चंद्र	शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य	शुक्र - मंगल	शुक्र - गुरु
25/08/2082	29/12/2084	15/10/2087	29/06/2089	10/05/2091
29/12/2084	15/10/2087	29/06/2089	10/05/2091	16/05/2093
चंद्र 21/12/2082	शुक्र 05/06/2085	सूर्य 13/12/2087	मंगल 08/09/2089	गुरु 01/08/2091
बुध 26/04/2083	सूर्य 10/09/2085	मंगल 15/02/2088	गुरु 23/11/2089	शनि 29/10/2091
शुक्र 06/09/2083	मंगल 24/12/2085	गुरु 25/04/2088	शनि 13/02/2090	केतु 01/02/2092
सूर्य 26/11/2083	गुरु 18/04/2086	शनि 10/07/2088	केतु 12/05/2090	चंद्र 13/05/2092
मंगल 23/02/2084	शनि 19/08/2086	केतु 28/09/2088	चंद्र 14/08/2090	बुध 29/08/2092
गुरु 29/05/2084	केतु 29/12/2086	चंद्र 23/12/2088	बुध 21/11/2090	शुक्र 21/12/2092
शनि 09/09/2084	चंद्र 18/05/2087	बुध 25/03/2089	शुक्र 07/03/2091	सूर्य 01/03/2093
केतु 29/12/2084	बुध 15/10/2087	शुक्र 29/06/2089	सूर्य 10/05/2091	मंगल 16/05/2093
शुक्र - शनि	शुक्र - केतु	शुक्र - चंद्र	शुक्र - बुध	सूर्य - सूर्य
16/05/2093	19/07/2095	15/11/2097	11/05/2100	30/12/2102
19/07/2095	15/11/2097	11/05/2100	30/12/2102	15/01/2104
शनि 20/08/2093	केतु 06/11/2095	चंद्र 20/03/2098	बुध 29/09/2100	सूर्य 04/02/2103
केतु 01/12/2093	चंद्र 02/03/2096	बुध 31/07/2098	शुक्र 25/02/2101	मंगल 16/03/2103
चंद्र 20/03/2094	बुध 05/07/2096	शुक्र 19/12/2098	सूर्य 28/05/2101	गुरु 27/04/2103
बुध 14/07/2094	शुक्र 13/11/2096	सूर्य 15/03/2099	मंगल 04/09/2101	शनि 12/06/2103
शुक्र 14/11/2094	सूर्य 02/02/2097	मंगल 16/06/2099	गुरु 21/12/2101	केतु 01/08/2103
सूर्य 29/01/2095	मंगल 01/05/2097	गुरु 26/09/2099	शनि 17/04/2102	चंद्र 22/09/2103
मंगल 21/04/2095	गुरु 04/08/2097	शनि 13/01/2100	केतु 19/08/2102	बुध 17/11/2103
गुरु 19/07/2095	शनि 15/11/2097	केतु 11/05/2100	चंद्र 30/12/2102	शुक्र 15/01/2104

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 5 वर्ष 5 मास 16 दिन

शनि 13 वर्ष	बुध 11 वर्ष	केतु 5 वर्ष	शुक्र 13 वर्ष	सूर्य 4 वर्ष
02/04/1993	17/09/1998	17/01/2010	17/09/2014	17/01/2028
17/09/1998	17/01/2010	17/09/2014	17/01/2028	17/01/2032
00/00/0000	बुध 26/04/2000	केतु 26/04/2010	शुक्र 07/12/2016	सूर्य 30/03/2028
00/00/0000	केतु 23/12/2000	शुक्र 04/02/2011	सूर्य 08/08/2017	चंद्र 30/07/2028
00/00/0000	शुक्र 13/11/2002	सूर्य 01/05/2011	चंद्र 17/09/2018	मंगल 23/10/2028
02/04/1993	सूर्य 08/06/2003	चंद्र 20/09/2011	मंगल 29/06/2019	राहु 31/05/2029
सूर्य 30/04/1993	चंद्र 18/05/2004	मंगल 28/12/2011	राहु 28/06/2021	गुरु 11/12/2029
चंद्र 21/05/1994	मंगल 15/01/2005	राहु 09/09/2012	गुरु 08/04/2023	शनि 31/07/2030
मंगल 15/02/1995	राहु 28/09/2006	गुरु 24/04/2013	शनि 18/05/2025	बुध 23/02/2031
राहु 09/01/1997	गुरु 02/04/2008	शनि 19/01/2014	बुध 08/04/2027	केतु 19/05/2031
गुरु 17/09/1998	शनि 17/01/2010	बुध 17/09/2014	केतु 17/01/2028	शुक्र 17/01/2032
चंद्र 7 वर्ष	मंगल 5 वर्ष	राहु 12 वर्ष	गुरु 11 वर्ष	शनि 13 वर्ष
17/01/2032	17/09/2038	19/05/2043	19/05/2055	17/01/2066
17/09/2038	19/05/2043	19/05/2055	17/01/2066	00/00/0000
चंद्र 07/08/2032	मंगल 26/12/2038	राहु 06/03/2045	गुरु 19/10/2056	शनि 19/01/2068
मंगल 27/12/2032	राहु 08/09/2039	गुरु 12/10/2046	शनि 28/06/2058	बुध 05/11/2069
राहु 28/12/2033	गुरु 22/04/2040	शनि 05/09/2048	बुध 01/01/2060	केतु 02/08/2070
गुरु 17/11/2034	शनि 17/01/2041	बुध 19/05/2050	केतु 15/08/2060	शुक्र 11/09/2072
शनि 08/12/2035	बुध 15/09/2041	केतु 29/01/2051	शुक्र 27/05/2062	सूर्य 02/04/2073
बुध 17/11/2036	केतु 24/12/2041	शुक्र 29/01/2053	सूर्य 08/12/2062	00/00/0000
केतु 08/04/2037	शुक्र 04/10/2042	सूर्य 05/09/2053	चंद्र 28/10/2063	00/00/0000
शुक्र 19/05/2038	सूर्य 28/12/2042	चंद्र 05/09/2054	मंगल 12/06/2064	00/00/0000
सूर्य 17/09/2038	चंद्र 19/05/2043	मंगल 19/05/2055	राहु 17/01/2066	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य 02/04/1993 30/04/1993	शनि - चंद्र 30/04/1993 21/05/1994	शनि - मंगल 21/05/1994 15/02/1995	शनि - राहु 15/02/1995 09/01/1997	शनि - गुरु 09/01/1997 17/09/1998
00/00/0000	चंद्र 01/06/1993	मंगल 05/06/1994	राहु 30/05/1995	गुरु 01/04/1997
00/00/0000	मंगल 24/06/1993	राहु 16/07/1994	गुरु 30/08/1995	शनि 07/07/1997
00/00/0000	राहु 21/08/1993	गुरु 21/08/1994	शनि 18/12/1995	बुध 03/10/1997
00/00/0000	गुरु 11/10/1993	शनि 03/10/1994	बुध 25/03/1996	केतु 08/11/1997
00/00/0000	शनि 11/12/1993	बुध 10/11/1994	केतु 05/05/1996	शुक्र 19/02/1998
00/00/0000	बुध 04/02/1994	केतु 26/11/1994	शुक्र 29/08/1996	सूर्य 22/03/1998
00/00/0000	केतु 26/02/1994	शुक्र 10/01/1995	सूर्य 02/10/1996	चंद्र 12/05/1998
02/04/1993	शुक्र 01/05/1994	सूर्य 23/01/1995	चंद्र 29/11/1996	मंगल 17/06/1998
शुक्र 30/04/1993	सूर्य 21/05/1994	चंद्र 15/02/1995	मंगल 09/01/1997	राहु 17/09/1998
बुध - बुध 17/09/1998 26/04/2000	बुध - केतु 26/04/2000 23/12/2000	बुध - शुक्र 23/12/2000 13/11/2002	बुध - सूर्य 13/11/2002 08/06/2003	बुध - चंद्र 08/06/2003 18/05/2004
बुध 09/12/1998	केतु 10/05/2000	शुक्र 17/04/2001	सूर्य 24/11/2002	चंद्र 07/07/2003
केतु 13/01/1999	शुक्र 19/06/2000	सूर्य 22/05/2001	चंद्र 11/12/2002	मंगल 27/07/2003
शुक्र 20/04/1999	सूर्य 01/07/2000	चंद्र 18/07/2001	मंगल 23/12/2002	राहु 17/09/2003
सूर्य 20/05/1999	चंद्र 21/07/2000	मंगल 28/08/2001	राहु 23/01/2003	गुरु 02/11/2003
चंद्र 08/07/1999	मंगल 04/08/2000	राहु 09/12/2001	गुरु 20/02/2003	शनि 26/12/2003
मंगल 11/08/1999	राहु 10/09/2000	गुरु 11/03/2002	शनि 24/03/2003	बुध 13/02/2004
राहु 07/11/1999	गुरु 12/10/2000	शनि 28/06/2002	बुध 23/04/2003	केतु 04/03/2004
गुरु 24/01/2000	शनि 19/11/2000	बुध 04/10/2002	केतु 05/05/2003	शुक्र 01/05/2004
शनि 26/04/2000	बुध 23/12/2000	केतु 13/11/2002	शुक्र 08/06/2003	सूर्य 18/05/2004
बुध - मंगल 18/05/2004 15/01/2005	बुध - राहु 15/01/2005 28/09/2006	बुध - गुरु 28/09/2006 02/04/2008	बुध - शनि 02/04/2008 17/01/2010	केतु - केतु 17/01/2010 26/04/2010
मंगल 01/06/2004	राहु 18/04/2005	गुरु 10/12/2006	शनि 14/07/2008	केतु 23/01/2010
राहु 07/07/2004	गुरु 10/07/2005	शनि 08/03/2007	बुध 15/10/2008	शुक्र 08/02/2010
गुरु 09/08/2004	शनि 16/10/2005	बुध 25/05/2007	केतु 22/11/2008	सूर्य 13/02/2010
शनि 16/09/2004	बुध 12/01/2006	केतु 26/06/2007	शुक्र 12/03/2009	चंद्र 22/02/2010
बुध 20/10/2004	केतु 17/02/2006	शुक्र 26/09/2007	सूर्य 13/04/2009	मंगल 27/02/2010
केतु 03/11/2004	शुक्र 01/06/2006	सूर्य 24/10/2007	चंद्र 07/06/2009	राहु 14/03/2010
शुक्र 13/12/2004	सूर्य 02/07/2006	चंद्र 09/12/2007	मंगल 15/07/2009	गुरु 28/03/2010
सूर्य 26/12/2004	चंद्र 22/08/2006	मंगल 10/01/2008	राहु 22/10/2009	शनि 12/04/2010
चंद्र 15/01/2005	मंगल 28/09/2006	राहु 02/04/2008	गुरु 17/01/2010	बुध 26/04/2010

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र 26/04/2010 04/02/2011	केतु - सूर्य 04/02/2011 01/05/2011	केतु - चंद्र 01/05/2011 20/09/2011	केतु - मंगल 20/09/2011 28/12/2011	केतु - राहु 28/12/2011 09/09/2012
शुक्र 13/06/2010 सूर्य 27/06/2010 चंद्र 21/07/2010 मंगल 06/08/2010 राहु 18/09/2010 गुरु 26/10/2010 शनि 10/12/2010 बुध 19/01/2011 केतु 04/02/2011	सूर्य 09/02/2011 चंद्र 16/02/2011 मंगल 21/02/2011 राहु 06/03/2011 गुरु 17/03/2011 शनि 30/03/2011 बुध 11/04/2011 केतु 16/04/2011 शुक्र 01/05/2011	चंद्र 12/05/2011 मंगल 21/05/2011 राहु 11/06/2011 गुरु 30/06/2011 शनि 23/07/2011 बुध 12/08/2011 केतु 20/08/2011 शुक्र 13/09/2011 सूर्य 20/09/2011	मंगल 26/09/2011 राहु 10/10/2011 गुरु 24/10/2011 शनि 08/11/2011 बुध 23/11/2011 केतु 28/11/2011 शुक्र 15/12/2011 सूर्य 20/12/2011 चंद्र 28/12/2011	राहु 04/02/2012 गुरु 10/03/2012 शनि 19/04/2012 बुध 25/05/2012 केतु 09/06/2012 शुक्र 22/07/2012 सूर्य 04/08/2012 चंद्र 25/08/2012 मंगल 09/09/2012
केतु - गुरु 09/09/2012 24/04/2013	केतु - शनि 24/04/2013 19/01/2014	केतु - बुध 19/01/2014 17/09/2014	शुक्र - शुक्र 17/09/2014 07/12/2016	शुक्र - सूर्य 07/12/2016 08/08/2017
गुरु 09/10/2012 शनि 14/11/2012 बुध 16/12/2012 केतु 30/12/2012 शुक्र 05/02/2013 सूर्य 17/02/2013 चंद्र 08/03/2013 मंगल 21/03/2013 राहु 24/04/2013	शनि 06/06/2013 बुध 14/07/2013 केतु 30/07/2013 शुक्र 13/09/2013 सूर्य 26/09/2013 चंद्र 19/10/2013 मंगल 03/11/2013 राहु 14/12/2013 गुरु 19/01/2014	बुध 22/02/2014 केतु 08/03/2014 शुक्र 17/04/2014 सूर्य 30/04/2014 चंद्र 20/05/2014 मंगल 03/06/2014 राहु 09/07/2014 गुरु 10/08/2014 शनि 17/09/2014	शुक्र 31/01/2015 सूर्य 12/03/2015 चंद्र 19/05/2015 मंगल 05/07/2015 राहु 04/11/2015 गुरु 20/02/2016 शनि 28/06/2016 बुध 21/10/2016 केतु 07/12/2016	सूर्य 19/12/2016 चंद्र 09/01/2017 मंगल 23/01/2017 राहु 28/02/2017 गुरु 02/04/2017 शनि 10/05/2017 बुध 14/06/2017 केतु 28/06/2017 शुक्र 08/08/2017
शुक्र - चंद्र 08/08/2017 17/09/2018	शुक्र - मंगल 17/09/2018 29/06/2019	शुक्र - राहु 29/06/2019 28/06/2021	शुक्र - गुरु 28/06/2021 08/04/2023	शुक्र - शनि 08/04/2023 18/05/2025
चंद्र 10/09/2017 मंगल 04/10/2017 राहु 04/12/2017 गुरु 27/01/2018 शनि 01/04/2018 बुध 29/05/2018 केतु 21/06/2018 शुक्र 28/08/2018 सूर्य 17/09/2018	मंगल 04/10/2018 राहु 16/11/2018 गुरु 23/12/2018 शनि 06/02/2019 बुध 19/03/2019 केतु 04/04/2019 शुक्र 22/05/2019 सूर्य 05/06/2019 चंद्र 29/06/2019	राहु 16/10/2019 गुरु 21/01/2020 शनि 16/05/2020 बुध 28/08/2020 केतु 09/10/2020 शुक्र 08/02/2021 सूर्य 17/03/2021 चंद्र 16/05/2021 मंगल 28/06/2021	गुरु 23/09/2021 शनि 03/01/2022 बुध 05/04/2022 केतु 13/05/2022 शुक्र 29/08/2022 सूर्य 01/10/2022 चंद्र 24/11/2022 मंगल 01/01/2023 राहु 08/04/2023	शनि 08/08/2023 बुध 26/11/2023 केतु 10/01/2024 शुक्र 17/05/2024 सूर्य 25/06/2024 चंद्र 28/08/2024 मंगल 12/10/2024 राहु 05/02/2025 गुरु 18/05/2025

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध 18/05/2025 08/04/2027	शुक्र - केतु 08/04/2027 17/01/2028	सूर्य - सूर्य 17/01/2028 30/03/2028	सूर्य - चंद्र 30/03/2028 30/07/2028	सूर्य - मंगल 30/07/2028 23/10/2028
बुध 24/08/2025 केतु 03/10/2025 शुक्र 26/01/2026 सूर्य 02/03/2026 चंद्र 28/04/2026 मंगल 08/06/2026 राहु 19/09/2026 गुरु 20/12/2026 शनि 08/04/2027	केतु 25/04/2027 शुक्र 11/06/2027 सूर्य 25/06/2027 चंद्र 19/07/2027 मंगल 05/08/2027 राहु 16/09/2027 गुरु 24/10/2027 शनि 08/12/2027 बुध 17/01/2028	सूर्य 21/01/2028 चंद्र 27/01/2028 मंगल 31/01/2028 राहु 11/02/2028 गुरु 21/02/2028 शनि 04/03/2028 बुध 14/03/2028 केतु 18/03/2028 शुक्र 30/03/2028	चंद्र 10/04/2028 मंगल 17/04/2028 राहु 05/05/2028 गुरु 21/05/2028 शनि 09/06/2028 बुध 27/06/2028 केतु 04/07/2028 शुक्र 24/07/2028 सूर्य 30/07/2028	मंगल 04/08/2028 राहु 17/08/2028 गुरु 28/08/2028 शनि 11/09/2028 बुध 23/09/2028 केतु 28/09/2028 शुक्र 12/10/2028 सूर्य 16/10/2028 चंद्र 23/10/2028
सूर्य - राहु 23/10/2028 31/05/2029	सूर्य - गुरु 31/05/2029 11/12/2029	सूर्य - शनि 11/12/2029 31/07/2030	सूर्य - बुध 31/07/2030 23/02/2031	सूर्य - केतु 23/02/2031 19/05/2031
राहु 25/11/2028 गुरु 25/12/2028 शनि 28/01/2029 बुध 28/02/2029 केतु 13/03/2029 शुक्र 19/04/2029 सूर्य 30/04/2029 चंद्र 18/05/2029 मंगल 31/05/2029	गुरु 26/06/2029 शनि 26/07/2029 बुध 23/08/2029 केतु 03/09/2029 शुक्र 06/10/2029 सूर्य 16/10/2029 चंद्र 01/11/2029 मंगल 12/11/2029 राहु 11/12/2029	शनि 17/01/2030 बुध 19/02/2030 केतु 04/03/2030 शुक्र 12/04/2030 सूर्य 23/04/2030 चंद्र 13/05/2030 मंगल 26/05/2030 राहु 30/06/2030 गुरु 31/07/2030	बुध 29/08/2030 केतु 10/09/2030 शुक्र 15/10/2030 सूर्य 25/10/2030 चंद्र 11/11/2030 मंगल 23/11/2030 राहु 24/12/2030 गुरु 21/01/2031 शनि 23/02/2031	केतु 28/02/2031 शुक्र 14/03/2031 सूर्य 18/03/2031 चंद्र 25/03/2031 मंगल 30/03/2031 राहु 12/04/2031 गुरु 23/04/2031 शनि 07/05/2031 बुध 19/05/2031
सूर्य - शुक्र 19/05/2031 17/01/2032	चंद्र - चंद्र 17/01/2032 07/08/2032	चंद्र - मंगल 07/08/2032 27/12/2032	चंद्र - राहु 27/12/2032 28/12/2033	चंद्र - गुरु 28/12/2033 17/11/2034
शुक्र 29/06/2031 सूर्य 11/07/2031 चंद्र 31/07/2031 मंगल 14/08/2031 राहु 20/09/2031 गुरु 22/10/2031 शनि 30/11/2031 बुध 03/01/2032 केतु 17/01/2032	चंद्र 03/02/2032 मंगल 15/02/2032 राहु 17/03/2032 गुरु 13/04/2032 शनि 15/05/2032 बुध 13/06/2032 केतु 24/06/2032 शुक्र 28/07/2032 सूर्य 07/08/2032	मंगल 16/08/2032 राहु 06/09/2032 गुरु 25/09/2032 शनि 17/10/2032 बुध 06/11/2032 केतु 15/11/2032 शुक्र 08/12/2032 सूर्य 16/12/2032 चंद्र 27/12/2032	राहु 20/02/2033 गुरु 10/04/2033 शनि 07/06/2033 बुध 28/07/2033 केतु 19/08/2033 शुक्र 19/10/2033 सूर्य 06/11/2033 चंद्र 06/12/2033 मंगल 28/12/2033	गुरु 09/02/2034 शनि 01/04/2034 बुध 17/05/2034 केतु 05/06/2034 शुक्र 29/07/2034 सूर्य 15/08/2034 चंद्र 11/09/2034 मंगल 30/09/2034 राहु 17/11/2034

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि 17/11/2034 08/12/2035	चंद्र - बुध 08/12/2035 17/11/2036	चंद्र - केतु 17/11/2036 08/04/2037	चंद्र - शुक्र 08/04/2037 19/05/2038	चंद्र - सूर्य 19/05/2038 17/09/2038
शनि 17/01/2035 बुध 13/03/2035 केतु 04/04/2035 शुक्र 08/06/2035 सूर्य 27/06/2035 चंद्र 29/07/2035 मंगल 21/08/2035 राहु 17/10/2035 गुरु 08/12/2035	बुध 26/01/2036 केतु 15/02/2036 शुक्र 12/04/2036 सूर्य 30/04/2036 चंद्र 28/05/2036 मंगल 17/06/2036 राहु 08/08/2036 गुरु 23/09/2036 शनि 17/11/2036	केतु 25/11/2036 शुक्र 19/12/2036 सूर्य 26/12/2036 चंद्र 07/01/2037 मंगल 15/01/2037 राहु 05/02/2037 गुरु 24/02/2037 शनि 19/03/2037 बुध 08/04/2037	शुक्र 14/06/2037 सूर्य 05/07/2037 चंद्र 08/08/2037 मंगल 31/08/2037 राहु 31/10/2037 गुरु 24/12/2037 शनि 27/02/2038 बुध 25/04/2038 केतु 19/05/2038	सूर्य 25/05/2038 चंद्र 04/06/2038 मंगल 11/06/2038 राहु 29/06/2038 गुरु 16/07/2038 शनि 04/08/2038 बुध 21/08/2038 केतु 28/08/2038 शुक्र 17/09/2038
मंगल - मंगल 17/09/2038 26/12/2038	मंगल - राहु 26/12/2038 08/09/2039	मंगल - गुरु 08/09/2039 22/04/2040	मंगल - शनि 22/04/2040 17/01/2041	मंगल - बुध 17/01/2041 15/09/2041
मंगल 23/09/2038 राहु 08/10/2038 गुरु 21/10/2038 शनि 06/11/2038 बुध 20/11/2038 केतु 26/11/2038 शुक्र 13/12/2038 सूर्य 18/12/2038 चंद्र 26/12/2038	राहु 02/02/2039 गुरु 08/03/2039 शनि 18/04/2039 बुध 24/05/2039 केतु 08/06/2039 शुक्र 21/07/2039 सूर्य 02/08/2039 चंद्र 24/08/2039 मंगल 08/09/2039	गुरु 08/10/2039 शनि 13/11/2039 बुध 15/12/2039 केतु 28/12/2039 शुक्र 04/02/2040 सूर्य 16/02/2040 चंद्र 05/03/2040 मंगल 19/03/2040 राहु 22/04/2040	शनि 04/06/2040 बुध 12/07/2040 केतु 27/07/2040 शुक्र 10/09/2040 सूर्य 24/09/2040 चंद्र 16/10/2040 मंगल 01/11/2040 राहु 12/12/2040 गुरु 17/01/2041	बुध 20/02/2041 केतु 06/03/2041 शुक्र 15/04/2041 सूर्य 27/04/2041 चंद्र 17/05/2041 मंगल 31/05/2041 राहु 07/07/2041 गुरु 08/08/2041 शनि 15/09/2041
मंगल - केतु 15/09/2041 24/12/2041	मंगल - शुक्र 24/12/2041 04/10/2042	मंगल - सूर्य 04/10/2042 28/12/2042	मंगल - चंद्र 28/12/2042 19/05/2043	राहु - राहु 19/05/2043 06/03/2045
केतु 21/09/2041 शुक्र 08/10/2041 सूर्य 12/10/2041 चंद्र 21/10/2041 मंगल 27/10/2041 राहु 10/11/2041 गुरु 24/11/2041 शनि 09/12/2041 बुध 24/12/2041	शुक्र 09/02/2042 सूर्य 23/02/2042 चंद्र 19/03/2042 मंगल 04/04/2042 राहु 17/05/2042 गुरु 24/06/2042 शनि 08/08/2042 बुध 17/09/2042 केतु 04/10/2042	सूर्य 08/10/2042 चंद्र 15/10/2042 मंगल 20/10/2042 राहु 02/11/2042 गुरु 13/11/2042 शनि 27/11/2042 बुध 09/12/2042 केतु 14/12/2042 शुक्र 28/12/2042	चंद्र 09/01/2043 मंगल 17/01/2043 राहु 07/02/2043 गुरु 26/02/2043 शनि 21/03/2043 बुध 10/04/2043 केतु 18/04/2043 शुक्र 12/05/2043 सूर्य 19/05/2043	राहु 26/08/2043 गुरु 21/11/2043 शनि 04/03/2044 बुध 05/06/2044 केतु 14/07/2044 शुक्र 31/10/2044 सूर्य 03/12/2044 चंद्र 27/01/2045 मंगल 06/03/2045

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु 06/03/2045 12/10/2046	राहु - शनि 12/10/2046 05/09/2048	राहु - बुध 05/09/2048 19/05/2050	राहु - केतु 19/05/2050 29/01/2051	राहु - शुक्र 29/01/2051 29/01/2053
गुरु 23/05/2045 शनि 24/08/2045 बुध 15/11/2045 केतु 19/12/2045 शुक्र 26/03/2046 सूर्य 24/04/2046 चंद्र 12/06/2046 मंगल 16/07/2046 राहु 12/10/2046	शनि 30/01/2047 बुध 08/05/2047 केतु 17/06/2047 शुक्र 11/10/2047 सूर्य 15/11/2047 चंद्र 12/01/2048 मंगल 21/02/2048 राहु 04/06/2048 गुरु 05/09/2048	बुध 02/12/2048 केतु 07/01/2049 शुक्र 20/04/2049 सूर्य 21/05/2049 चंद्र 12/07/2049 मंगल 17/08/2049 राहु 19/11/2049 गुरु 09/02/2050 शनि 19/05/2050	केतु 03/06/2050 शुक्र 15/07/2050 सूर्य 28/07/2050 चंद्र 18/08/2050 मंगल 02/09/2050 राहु 11/10/2050 गुरु 14/11/2050 शनि 24/12/2050 बुध 29/01/2051	शुक्र 31/05/2051 सूर्य 07/07/2051 चंद्र 05/09/2051 मंगल 18/10/2051 राहु 05/02/2052 गुरु 12/05/2052 शनि 05/09/2052 बुध 17/12/2052 केतु 29/01/2053
राहु - सूर्य 29/01/2053 05/09/2053	राहु - चंद्र 05/09/2053 05/09/2054	राहु - मंगल 05/09/2054 19/05/2055	गुरु - गुरु 19/05/2055 19/10/2056	गुरु - शनि 19/10/2056 28/06/2058
सूर्य 09/02/2053 चंद्र 27/02/2053 मंगल 12/03/2053 राहु 14/04/2053 गुरु 13/05/2053 शनि 17/06/2053 बुध 18/07/2053 केतु 30/07/2053 शुक्र 05/09/2053	चंद्र 05/10/2053 मंगल 27/10/2053 राहु 21/12/2053 गुरु 07/02/2054 शनि 06/04/2054 बुध 28/05/2054 केतु 18/06/2054 शुक्र 18/08/2054 सूर्य 05/09/2054	मंगल 20/09/2054 राहु 29/10/2054 गुरु 02/12/2054 शनि 11/01/2055 बुध 16/02/2055 केतु 03/03/2055 शुक्र 15/04/2055 सूर्य 28/04/2055 चंद्र 19/05/2055	गुरु 27/07/2055 शनि 17/10/2055 बुध 30/12/2055 केतु 29/01/2056 शुक्र 25/04/2056 सूर्य 21/05/2056 चंद्र 03/07/2056 मंगल 02/08/2056 राहु 19/10/2056	शनि 25/01/2057 बुध 22/04/2057 केतु 28/05/2057 शुक्र 08/09/2057 सूर्य 09/10/2057 चंद्र 29/11/2057 मंगल 04/01/2058 राहु 07/04/2058 गुरु 28/06/2058
गुरु - बुध 28/06/2058 01/01/2060	गुरु - केतु 01/01/2060 15/08/2060	गुरु - शुक्र 15/08/2060 27/05/2062	गुरु - सूर्य 27/05/2062 08/12/2062	गुरु - चंद्र 08/12/2062 28/10/2063
बुध 14/09/2058 केतु 17/10/2058 शुक्र 17/01/2059 सूर्य 13/02/2059 चंद्र 31/03/2059 मंगल 02/05/2059 राहु 24/07/2059 गुरु 06/10/2059 शनि 01/01/2060	केतु 14/01/2060 शुक्र 21/02/2060 सूर्य 04/03/2060 चंद्र 23/03/2060 मंगल 05/04/2060 राहु 09/05/2060 गुरु 08/06/2060 शनि 14/07/2060 बुध 15/08/2060	शुक्र 02/12/2060 सूर्य 03/01/2061 चंद्र 26/02/2061 मंगल 05/04/2061 राहु 12/07/2061 गुरु 06/10/2061 शनि 17/01/2062 बुध 19/04/2062 केतु 27/05/2062	सूर्य 06/06/2062 चंद्र 22/06/2062 मंगल 03/07/2062 राहु 01/08/2062 गुरु 27/08/2062 शनि 27/09/2062 बुध 25/10/2062 केतु 05/11/2062 शुक्र 08/12/2062	चंद्र 04/01/2063 मंगल 23/01/2063 राहु 12/03/2063 गुरु 25/04/2063 शनि 15/06/2063 बुध 31/07/2063 केतु 19/08/2063 शुक्र 12/10/2063 सूर्य 28/10/2063

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 5 वर्ष 4 मास 12 दिन

चंद्र 15 वर्ष	मंगल 8 वर्ष	बुध 17 वर्ष	शनि 10 वर्ष	गुरु 19 वर्ष
02/04/1993	14/08/1998	14/08/2006	14/08/2023	14/08/2033
14/08/1998	14/08/2006	14/08/2023	14/08/2033	13/08/2052
00/00/0000	मंगल 18/03/1999	बुध 17/04/2009	शनि 17/07/2024	गुरु 17/12/2036
00/00/0000	बुध 20/06/2000	शनि 13/11/2010	गुरु 21/04/2026	राहु 27/01/2039
00/00/0000	शनि 18/03/2001	गुरु 10/11/2013	राहु 01/06/2027	शुक्र 07/10/2042
00/00/0000	गुरु 14/08/2002	राहु 30/09/2015	शुक्र 11/05/2029	सूर्य 28/10/2043
02/04/1993	राहु 05/07/2003	शुक्र 20/01/2019	सूर्य 30/11/2029	चंद्र 17/06/2046
राहु 13/11/1994	शुक्र 23/01/2005	सूर्य 31/12/2019	चंद्र 21/04/2031	मंगल 13/11/2047
शुक्र 14/10/1997	सूर्य 04/07/2005	चंद्र 11/05/2022	मंगल 17/01/2032	बुध 10/11/2050
सूर्य 14/08/1998	चंद्र 14/08/2006	मंगल 14/08/2023	बुध 14/08/2033	शनि 13/08/2052

राहु 12 वर्ष	शुक्र 21 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 15 वर्ष
13/08/2052	13/08/2064	14/08/2085	14/08/2091
13/08/2064	14/08/2085	14/08/2091	00/00/0000
राहु 13/12/2053	शुक्र 13/09/2068	सूर्य 13/12/2085	चंद्र 13/09/2093
शुक्र 14/04/2056	सूर्य 13/11/2069	चंद्र 14/10/2086	मंगल 24/10/2094
सूर्य 13/12/2056	चंद्र 13/10/2072	मंगल 25/03/2087	बुध 04/03/2097
चंद्र 14/08/2058	मंगल 04/05/2074	बुध 04/03/2088	शनि 25/07/2098
मंगल 05/07/2059	बुध 24/08/2077	शनि 23/09/2088	गुरु 15/03/2101
बुध 24/05/2061	शनि 04/08/2079	गुरु 14/10/2089	राहु 03/04/2101
शनि 04/07/2062	गुरु 14/04/2083	राहु 14/06/2090	00/00/0000
गुरु 13/08/2064	राहु 14/08/2085	शुक्र 14/08/2091	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - बुध
02/04/1993	13/11/1994	14/10/1997	14/08/1998	18/03/1999
13/11/1994	14/10/1997	14/08/1998	18/03/1999	20/06/2000
राहु 21/05/1993	शुक्र 08/06/1995	सूर्य 30/10/1997	मंगल 30/08/1998	बुध 30/05/1999
शुक्र 16/09/1993	सूर्य 07/08/1995	चंद्र 12/12/1997	बुध 03/10/1998	शनि 11/07/1999
सूर्य 20/10/1993	चंद्र 02/01/1996	मंगल 03/01/1998	शनि 23/10/1998	गुरु 30/09/1999
चंद्र 13/01/1994	मंगल 20/03/1996	बुध 20/02/1998	गुरु 30/11/1998	राहु 20/11/1999
मंगल 27/02/1994	बुध 04/09/1996	शनि 20/03/1998	राहु 24/12/1998	शुक्र 18/02/2000
बुध 03/06/1994	शनि 12/12/1996	गुरु 13/05/1998	शुक्र 04/02/1999	सूर्य 14/03/2000
शनि 29/07/1994	गुरु 17/06/1997	राहु 16/06/1998	सूर्य 16/02/1999	चंद्र 17/05/2000
गुरु 13/11/1994	राहु 14/10/1997	शुक्र 14/08/1998	चंद्र 18/03/1999	मंगल 20/06/2000
मंगल - शनि	मंगल - गुरु	मंगल - राहु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य
20/06/2000	18/03/2001	14/08/2002	05/07/2003	23/01/2005
18/03/2001	14/08/2002	05/07/2003	23/01/2005	04/07/2005
शनि 15/07/2000	गुरु 16/06/2001	राहु 19/09/2002	शुक्र 23/10/2003	सूर्य 01/02/2005
गुरु 01/09/2000	राहु 12/08/2001	शुक्र 21/11/2002	सूर्य 24/11/2003	चंद्र 23/02/2005
राहु 01/10/2000	शुक्र 20/11/2001	सूर्य 09/12/2002	चंद्र 11/02/2004	मंगल 07/03/2005
शुक्र 23/11/2000	सूर्य 19/12/2001	चंद्र 23/01/2003	मंगल 24/03/2004	बुध 02/04/2005
सूर्य 08/12/2000	चंद्र 28/02/2002	मंगल 16/02/2003	बुध 21/06/2004	शनि 17/04/2005
चंद्र 14/01/2001	मंगल 07/04/2002	बुध 08/04/2003	शनि 13/08/2004	गुरु 15/05/2005
मंगल 03/02/2001	बुध 27/06/2002	शनि 08/05/2003	गुरु 21/11/2004	राहु 03/06/2005
बुध 18/03/2001	शनि 14/08/2002	गुरु 05/07/2003	राहु 23/01/2005	शुक्र 04/07/2005
मंगल - चंद्र	बुध - बुध	बुध - शनि	बुध - गुरु	बुध - राहु
04/07/2005	14/08/2006	17/04/2009	13/11/2010	10/11/2013
14/08/2006	17/04/2009	13/11/2010	10/11/2013	30/09/2015
चंद्र 29/08/2005	बुध 15/01/2007	शनि 10/06/2009	गुरु 24/05/2011	राहु 25/01/2014
मंगल 28/09/2005	शनि 15/04/2007	गुरु 19/09/2009	राहु 23/09/2011	शुक्र 08/06/2014
बुध 01/12/2005	गुरु 04/10/2007	राहु 22/11/2009	शुक्र 22/04/2012	सूर्य 17/07/2014
शनि 08/01/2006	राहु 21/01/2008	शुक्र 13/03/2010	सूर्य 22/06/2012	चंद्र 21/10/2014
गुरु 20/03/2006	शुक्र 29/07/2008	सूर्य 14/04/2010	चंद्र 21/11/2012	मंगल 11/12/2014
राहु 04/05/2006	सूर्य 21/09/2008	चंद्र 03/07/2010	मंगल 09/02/2013	बुध 29/03/2015
शुक्र 22/07/2006	चंद्र 04/02/2009	मंगल 15/08/2010	बुध 31/07/2013	शनि 01/06/2015
सूर्य 14/08/2006	मंगल 17/04/2009	बुध 13/11/2010	शनि 10/11/2013	गुरु 30/09/2015



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र	बुध - सूर्य	बुध - चंद्र	बुध - मंगल	शनि - शनि
30/09/2015	20/01/2019	31/12/2019	11/05/2022	14/08/2023
20/01/2019	31/12/2019	11/05/2022	14/08/2023	17/07/2024
शुक्र 22/05/2016	सूर्य 08/02/2019	चंद्र 29/04/2020	मंगल 14/06/2022	शनि 14/09/2023
सूर्य 28/07/2016	चंद्र 28/03/2019	मंगल 01/07/2020	बुध 26/08/2022	गुरु 13/11/2023
चंद्र 12/01/2017	मंगल 22/04/2019	बुध 14/11/2020	शनि 07/10/2022	राहु 21/12/2023
मंगल 11/04/2017	बुध 16/06/2019	शनि 02/02/2021	गुरु 27/12/2022	शुक्र 24/02/2024
बुध 19/10/2017	शनि 18/07/2019	गुरु 04/07/2021	राहु 16/02/2023	सूर्य 14/03/2024
शनि 07/02/2018	गुरु 16/09/2019	राहु 08/10/2021	शुक्र 17/05/2023	चंद्र 30/04/2024
गुरु 08/09/2018	राहु 25/10/2019	शुक्र 24/03/2022	सूर्य 11/06/2023	मंगल 25/05/2024
राहु 20/01/2019	शुक्र 31/12/2019	सूर्य 11/05/2022	चंद्र 14/08/2023	बुध 17/07/2024
शनि - गुरु	शनि - राहु	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य	शनि - चंद्र
17/07/2024	21/04/2026	01/06/2027	11/05/2029	30/11/2029
21/04/2026	01/06/2027	11/05/2029	30/11/2029	21/04/2031
गुरु 07/11/2024	राहु 05/06/2026	शुक्र 17/10/2027	सूर्य 22/05/2029	चंद्र 08/02/2030
राहु 18/01/2025	शुक्र 23/08/2026	सूर्य 25/11/2027	चंद्र 19/06/2029	मंगल 18/03/2030
शुक्र 23/05/2025	सूर्य 14/09/2026	चंद्र 03/03/2028	मंगल 04/07/2029	बुध 06/06/2030
सूर्य 27/06/2025	चंद्र 10/11/2026	मंगल 25/04/2028	बुध 05/08/2029	शनि 23/07/2030
चंद्र 25/09/2025	मंगल 10/12/2026	बुध 14/08/2028	शनि 24/08/2029	गुरु 20/10/2030
मंगल 11/11/2025	बुध 12/02/2027	शनि 19/10/2028	गुरु 29/09/2029	राहु 15/12/2030
बुध 20/02/2026	शनि 21/03/2027	गुरु 21/02/2029	राहु 21/10/2029	शुक्र 24/03/2031
शनि 21/04/2026	गुरु 01/06/2027	राहु 11/05/2029	शुक्र 30/11/2029	सूर्य 21/04/2031
शनि - मंगल	शनि - बुध	गुरु - गुरु	गुरु - राहु	गुरु - शुक्र
21/04/2031	17/01/2032	14/08/2033	17/12/2036	27/01/2039
17/01/2032	14/08/2033	17/12/2036	27/01/2039	07/10/2042
मंगल 11/05/2031	बुध 16/04/2032	गुरु 16/03/2034	राहु 12/03/2037	शुक्र 16/10/2039
बुध 23/06/2031	शनि 08/06/2032	राहु 30/07/2034	शुक्र 09/08/2037	सूर्य 30/12/2039
शनि 18/07/2031	गुरु 18/09/2032	शुक्र 24/03/2035	सूर्य 21/09/2037	चंद्र 04/07/2040
गुरु 03/09/2031	राहु 20/11/2032	सूर्य 31/05/2035	चंद्र 06/01/2038	मंगल 12/10/2040
राहु 04/10/2031	शुक्र 12/03/2033	चंद्र 17/11/2035	मंगल 04/03/2038	बुध 13/05/2041
शुक्र 25/11/2031	सूर्य 13/04/2033	मंगल 15/02/2036	बुध 04/07/2038	शनि 15/09/2041
सूर्य 10/12/2031	चंद्र 02/07/2033	बुध 25/08/2036	शनि 13/09/2038	गुरु 10/05/2042
चंद्र 17/01/2032	मंगल 14/08/2033	शनि 17/12/2036	गुरु 27/01/2039	राहु 07/10/2042



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य 07/10/2042 28/10/2043	गुरु - चंद्र 28/10/2043 17/06/2046	गुरु - मंगल 17/06/2046 13/11/2047	गुरु - बुध 13/11/2047 10/11/2050	गुरु - शनि 10/11/2050 13/08/2052
सूर्य 28/10/2042 चंद्र 21/12/2042 मंगल 19/01/2043 बुध 20/03/2043 शनि 25/04/2043 गुरु 02/07/2043 राहु 14/08/2043 शुक्र 28/10/2043	चंद्र 09/03/2044 मंगल 20/05/2044 बुध 19/10/2044 शनि 16/01/2045 गुरु 04/07/2045 राहु 19/10/2045 शुक्र 25/04/2046 सूर्य 17/06/2046	मंगल 25/07/2046 बुध 14/10/2046 शनि 01/12/2046 गुरु 01/03/2047 राहु 28/04/2047 शुक्र 06/08/2047 सूर्य 03/09/2047 चंद्र 13/11/2047	बुध 03/05/2048 शनि 13/08/2048 गुरु 21/02/2049 राहु 22/06/2049 शुक्र 21/01/2050 सूर्य 22/03/2050 चंद्र 21/08/2050 मंगल 10/11/2050	शनि 08/01/2051 गुरु 01/05/2051 राहु 12/07/2051 शुक्र 14/11/2051 सूर्य 19/12/2051 चंद्र 18/03/2052 मंगल 04/05/2052 बुध 13/08/2052
राहु - राहु 13/08/2052 13/12/2053	राहु - शुक्र 13/12/2053 14/04/2056	राहु - सूर्य 14/04/2056 13/12/2056	राहु - चंद्र 13/12/2056 14/08/2058	राहु - मंगल 14/08/2058 05/07/2059
राहु 07/10/2052 शुक्र 09/01/2053 सूर्य 05/02/2053 चंद्र 14/04/2053 मंगल 20/05/2053 बुध 05/08/2053 शनि 19/09/2053 गुरु 13/12/2053	शुक्र 28/05/2054 सूर्य 14/07/2054 चंद्र 10/11/2054 मंगल 12/01/2055 बुध 26/05/2055 शनि 13/08/2055 गुरु 10/01/2056 राहु 14/04/2056	सूर्य 27/04/2056 चंद्र 31/05/2056 मंगल 18/06/2056 बुध 26/07/2056 शनि 18/08/2056 गुरु 30/09/2056 राहु 27/10/2056 शुक्र 13/12/2056	चंद्र 08/03/2057 मंगल 22/04/2057 बुध 27/07/2057 शनि 21/09/2057 गुरु 06/01/2058 राहु 15/03/2058 शुक्र 11/07/2058 सूर्य 14/08/2058	मंगल 07/09/2058 बुध 28/10/2058 शनि 27/11/2058 गुरु 23/01/2059 राहु 28/02/2059 शुक्र 02/05/2059 सूर्य 20/05/2059 चंद्र 05/07/2059
राहु - बुध 05/07/2059 24/05/2061	राहु - शनि 24/05/2061 04/07/2062	राहु - गुरु 04/07/2062 13/08/2064	शुक्र - शुक्र 13/08/2064 13/09/2068	शुक्र - सूर्य 13/09/2068 13/11/2069
बुध 21/10/2059 शनि 24/12/2059 गुरु 23/04/2060 राहु 09/07/2060 शुक्र 20/11/2060 सूर्य 29/12/2060 चंद्र 03/04/2061 मंगल 24/05/2061	शनि 01/07/2061 गुरु 10/09/2061 राहु 26/10/2061 शुक्र 12/01/2062 सूर्य 04/02/2062 चंद्र 01/04/2062 मंगल 01/05/2062 बुध 04/07/2062	गुरु 17/11/2062 राहु 11/02/2063 शुक्र 11/07/2063 सूर्य 22/08/2063 चंद्र 08/12/2063 मंगल 03/02/2064 बुध 03/06/2064 शनि 13/08/2064	शुक्र 30/05/2065 सूर्य 21/08/2065 चंद्र 16/03/2066 मंगल 05/07/2066 बुध 25/02/2067 शनि 13/07/2067 गुरु 31/03/2068 राहु 13/09/2068	सूर्य 07/10/2068 चंद्र 05/12/2068 मंगल 05/01/2069 बुध 13/03/2069 शनि 22/04/2069 गुरु 06/07/2069 राहु 22/08/2069 शुक्र 13/11/2069



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - बुध	शुक्र - शनि	शुक्र - गुरु
13/11/2069	13/10/2072	04/05/2074	24/08/2077	04/08/2079
13/10/2072	04/05/2074	24/08/2077	04/08/2079	14/04/2083
चंद्र 10/04/2070	मंगल 24/11/2072	बुध 10/11/2074	शनि 29/10/2077	गुरु 28/03/2080
मंगल 28/06/2070	बुध 22/02/2073	शनि 02/03/2075	गुरु 03/03/2078	राहु 25/08/2080
बुध 13/12/2070	शनि 15/04/2073	गुरु 01/10/2075	राहु 20/05/2078	शुक्र 15/05/2081
शनि 21/03/2071	गुरु 24/07/2073	राहु 12/02/2076	शुक्र 06/10/2078	सूर्य 29/07/2081
गुरु 25/09/2071	राहु 25/09/2073	शुक्र 04/10/2076	सूर्य 14/11/2078	चंद्र 01/02/2082
राहु 21/01/2072	शुक्र 14/01/2074	सूर्य 10/12/2076	चंद्र 21/02/2079	मंगल 12/05/2082
शुक्र 15/08/2072	सूर्य 15/02/2074	चंद्र 26/05/2077	मंगल 14/04/2079	बुध 10/12/2082
सूर्य 13/10/2072	चंद्र 04/05/2074	मंगल 24/08/2077	बुध 04/08/2079	शनि 14/04/2083
शुक्र - राहु	सूर्य - सूर्य	सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल	सूर्य - बुध
14/04/2083	14/08/2085	13/12/2085	14/10/2086	25/03/2087
14/08/2085	13/12/2085	14/10/2086	25/03/2087	04/03/2088
राहु 18/07/2083	सूर्य 20/08/2085	चंद्र 25/01/2086	मंगल 26/10/2086	बुध 18/05/2087
शुक्र 31/12/2083	चंद्र 06/09/2085	मंगल 16/02/2086	बुध 20/11/2086	शनि 19/06/2087
सूर्य 16/02/2084	मंगल 15/09/2085	बुध 05/04/2086	शनि 05/12/2086	गुरु 19/08/2087
चंद्र 14/06/2084	बुध 05/10/2085	शनि 03/05/2086	गुरु 03/01/2087	राहु 26/09/2087
मंगल 16/08/2084	शनि 16/10/2085	गुरु 26/06/2086	राहु 21/01/2087	शुक्र 02/12/2087
बुध 28/12/2084	गुरु 06/11/2085	राहु 30/07/2086	शुक्र 22/02/2087	सूर्य 22/12/2087
शनि 17/03/2085	राहु 20/11/2085	शुक्र 27/09/2086	सूर्य 03/03/2087	चंद्र 08/02/2088
गुरु 14/08/2085	शुक्र 13/12/2085	सूर्य 14/10/2086	चंद्र 25/03/2087	मंगल 04/03/2088
सूर्य - शनि	सूर्य - गुरु	सूर्य - राहु	सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र
04/03/2088	23/09/2088	14/10/2089	14/06/2090	14/08/2091
23/09/2088	14/10/2089	14/06/2090	14/08/2091	13/09/2093
शनि 23/03/2088	गुरु 30/11/2088	राहु 10/11/2089	शुक्र 05/09/2090	चंद्र 28/11/2091
गुरु 28/04/2088	राहु 12/01/2089	शुक्र 27/12/2089	सूर्य 29/09/2090	मंगल 23/01/2092
राहु 20/05/2088	शुक्र 28/03/2089	सूर्य 09/01/2090	चंद्र 27/11/2090	बुध 22/05/2092
शुक्र 29/06/2088	सूर्य 18/04/2089	चंद्र 12/02/2090	मंगल 28/12/2090	शनि 31/07/2092
सूर्य 10/07/2088	चंद्र 11/06/2089	मंगल 02/03/2090	बुध 05/03/2091	गुरु 12/12/2092
चंद्र 07/08/2088	मंगल 09/07/2089	बुध 10/04/2090	शनि 14/04/2091	राहु 07/03/2093
मंगल 22/08/2088	बुध 08/09/2089	शनि 02/05/2090	गुरु 28/06/2091	शुक्र 02/08/2093
बुध 23/09/2088	शनि 14/10/2089	गुरु 14/06/2090	राहु 14/08/2091	सूर्य 13/09/2093

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 1 वर्ष 3 मास 15 दिन

धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
02/04/1993	18/07/1994	18/07/1998	18/07/2003	18/07/2009
18/07/1994	18/07/1998	18/07/2003	18/07/2009	18/07/2016
00/00/0000	भाम 27/12/1994	भद्रि 29/03/1999	उल्क 18/07/2004	सिद्ध 27/11/2010
00/00/0000	भद्रि 18/07/1995	उल्क 27/01/2000	सिद्ध 17/09/2005	संक 17/06/2012
00/00/0000	उल्क 18/03/1996	सिद्ध 16/01/2001	संक 17/01/2007	मंग 27/08/2012
02/04/1993	सिद्ध 27/12/1996	संक 26/02/2002	मंग 19/03/2007	पिंग 16/01/2013
सिद्ध 17/08/1993	संक 17/11/1997	मंग 18/04/2002	पिंग 18/07/2007	धांय 17/08/2013
संक 18/04/1994	मंग 27/12/1997	पिंग 28/07/2002	धांय 17/01/2008	भाम 28/05/2014
मंग 18/05/1994	पिंग 18/03/1998	धांय 27/12/2002	भाम 16/09/2008	भद्रि 18/05/2015
पिंग 18/07/1994	धांय 18/07/1998	भाम 18/07/2003	भद्रि 18/07/2009	उल्क 18/07/2016

संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष
18/07/2016	18/07/2024	18/07/2025	18/07/2027	18/07/2030
18/07/2024	18/07/2025	18/07/2027	18/07/2030	18/07/2034
संक 28/04/2018	मंग 28/07/2024	पिंग 27/08/2025	धांय 18/10/2027	भाम 27/12/2030
मंग 18/07/2018	पिंग 17/08/2024	धांय 27/10/2025	भाम 16/02/2028	भद्रि 18/07/2031
पिंग 27/12/2018	धांय 16/09/2024	भाम 16/01/2026	भद्रि 18/07/2028	उल्क 18/03/2032
धांय 28/08/2019	भाम 27/10/2024	भद्रि 28/04/2026	उल्क 16/01/2029	सिद्ध 27/12/2032
भाम 18/07/2020	भद्रि 17/12/2024	उल्क 28/08/2026	सिद्ध 17/08/2029	संक 17/11/2033
भद्रि 27/08/2021	उल्क 16/02/2025	सिद्ध 17/01/2027	संक 18/04/2030	मंग 27/12/2033
उल्क 27/12/2022	सिद्ध 28/04/2025	संक 28/06/2027	मंग 18/05/2030	पिंग 18/03/2034
सिद्ध 18/07/2024	संक 18/07/2025	मंग 18/07/2027	पिंग 18/07/2030	धांय 18/07/2034

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष 18/07/2034 18/07/2039	उल्का 6 वर्ष 18/07/2039 18/07/2045	सिद्धा 7 वर्ष 18/07/2045 18/07/2052	संकटा 8 वर्ष 18/07/2052 18/07/2060	मंगला 1 वर्ष 18/07/2060 18/07/2061
भद्रि 29/03/2035 उल्क 27/01/2036 सिद्ध 16/01/2037 संक 26/02/2038 मंग 18/04/2038 पिंग 28/07/2038 धांय 27/12/2038 भ्राम 18/07/2039	उल्क 18/07/2040 सिद्ध 17/09/2041 संक 17/01/2043 मंग 19/03/2043 पिंग 18/07/2043 धांय 17/01/2044 भ्राम 16/09/2044 भद्रि 18/07/2045	सिद्ध 27/11/2046 संक 17/06/2048 मंग 27/08/2048 पिंग 16/01/2049 धांय 17/08/2049 भ्राम 28/05/2050 भद्रि 18/05/2051 उल्क 18/07/2052	संक 28/04/2054 मंग 18/07/2054 पिंग 27/12/2054 धांय 28/08/2055 भ्राम 18/07/2056 भद्रि 27/08/2057 उल्क 27/12/2058 सिद्ध 18/07/2060	मंग 28/07/2060 पिंग 17/08/2060 धांय 16/09/2060 भ्राम 27/10/2060 भद्रि 17/12/2060 उल्क 16/02/2061 सिद्ध 28/04/2061 संक 18/07/2061
पिंगला 2 वर्ष 18/07/2061 18/07/2063	धान्या 3 वर्ष 18/07/2063 18/07/2066	भ्रामरी 4 वर्ष 18/07/2066 18/07/2070	भद्रिका 5 वर्ष 18/07/2070 18/07/2075	उल्का 6 वर्ष 18/07/2075 18/07/2081
पिंग 27/08/2061 धांय 27/10/2061 भ्राम 16/01/2062 भद्रि 28/04/2062 उल्क 28/08/2062 सिद्ध 17/01/2063 संक 28/06/2063 मंग 18/07/2063	धांय 18/10/2063 भ्राम 16/02/2064 भद्रि 18/07/2064 उल्क 16/01/2065 सिद्ध 17/08/2065 संक 18/04/2066 मंग 18/05/2066 पिंग 18/07/2066	भ्राम 27/12/2066 भद्रि 18/07/2067 उल्क 18/03/2068 सिद्ध 27/12/2068 संक 17/11/2069 मंग 27/12/2069 पिंग 18/03/2070 धांय 18/07/2070	भद्रि 29/03/2071 उल्क 27/01/2072 सिद्ध 16/01/2073 संक 26/02/2074 मंग 18/04/2074 पिंग 28/07/2074 धांय 27/12/2074 भ्राम 18/07/2075	उल्क 18/07/2076 सिद्ध 17/09/2077 संक 17/01/2079 मंग 19/03/2079 पिंग 18/07/2079 धांय 17/01/2080 भ्राम 16/09/2080 भद्रि 18/07/2081
सिद्धा 7 वर्ष 18/07/2081 18/07/2088	संकटा 8 वर्ष 18/07/2088 18/07/2096	मंगला 1 वर्ष 18/07/2096 18/07/2097	पिंगला 2 वर्ष 18/07/2097 18/07/2099	धान्या 3 वर्ष 18/07/2099 00/00/0000
सिद्ध 27/11/2082 संक 17/06/2084 मंग 27/08/2084 पिंग 16/01/2085 धांय 17/08/2085 भ्राम 28/05/2086 भद्रि 18/05/2087 उल्क 18/07/2088	संक 28/04/2090 मंग 18/07/2090 पिंग 27/12/2090 धांय 28/08/2091 भ्राम 18/07/2092 भद्रि 27/08/2093 उल्क 27/12/2094 सिद्ध 18/07/2096	मंग 28/07/2096 पिंग 17/08/2096 धांय 16/09/2096 भ्राम 27/10/2096 भद्रि 17/12/2096 उल्क 16/02/2097 सिद्ध 28/04/2097 संक 18/07/2097	पिंग 27/08/2097 धांय 27/10/2097 भ्राम 16/01/2098 भद्रि 28/04/2098 उल्क 28/08/2098 सिद्ध 17/01/2099 संक 28/06/2099 मंग 18/07/2099	धांय 18/10/2099 भ्राम 16/02/2100 भद्रि 19/07/2100 उल्क 17/01/2101 सिद्ध 03/04/2101 00/00/0000 00/00/0000 00/00/0000



FUTUREPOINT
Astro Solutions



योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - भद्रि	पिंग - उत्क	पिंग - सिद्ध	पिंग - संक	पिंग - मंग
16/01/2026	28/04/2026	28/08/2026	17/01/2027	28/06/2027
28/04/2026	28/08/2026	17/01/2027	28/06/2027	18/07/2027
भद्रि 31/01/2026	उत्क 18/05/2026	सिद्ध 24/09/2026	संक 22/02/2027	मंग 29/06/2027
उत्क 16/02/2026	सिद्ध 11/06/2026	संक 26/10/2026	मंग 26/02/2027	पिंग 30/06/2027
सिद्ध 08/03/2026	संक 08/07/2026	मंग 30/10/2026	पिंग 07/03/2027	धांय 01/07/2027
संक 31/03/2026	मंग 11/07/2026	पिंग 07/11/2026	धांय 21/03/2027	भ्राम 04/07/2027
मंग 03/04/2026	पिंग 18/07/2026	धांय 19/11/2026	भ्राम 08/04/2027	भद्रि 07/07/2027
पिंग 08/04/2026	धांय 28/07/2026	भ्राम 04/12/2026	भद्रि 30/04/2027	उत्क 10/07/2027
धांय 17/04/2026	भ्राम 11/08/2026	भद्रि 24/12/2026	उत्क 27/05/2027	सिद्ध 14/07/2027
भ्राम 28/04/2026	भद्रि 28/08/2026	उत्क 17/01/2027	सिद्ध 28/06/2027	संक 18/07/2027
धांय - धांय	धांय - भ्राम	धांय - भद्रि	धांय - उत्क	धांय - सिद्ध
18/07/2027	18/10/2027	16/02/2028	18/07/2028	16/01/2029
18/10/2027	16/02/2028	18/07/2028	16/01/2029	17/08/2029
धांय 26/07/2027	भ्राम 31/10/2027	भद्रि 09/03/2028	उत्क 17/08/2028	सिद्ध 27/02/2029
भ्राम 05/08/2027	भद्रि 17/11/2027	उत्क 03/04/2028	सिद्ध 22/09/2028	संक 15/04/2029
भद्रि 18/08/2027	उत्क 07/12/2027	सिद्ध 03/05/2028	संक 01/11/2028	मंग 21/04/2029
उत्क 02/09/2027	सिद्ध 31/12/2027	संक 05/06/2028	मंग 06/11/2028	पिंग 03/05/2029
सिद्ध 20/09/2027	संक 27/01/2028	मंग 10/06/2028	पिंग 16/11/2028	धांय 21/05/2029
संक 10/10/2027	मंग 31/01/2028	पिंग 18/06/2028	धांय 02/12/2028	भ्राम 13/06/2029
मंग 13/10/2027	पिंग 06/02/2028	धांय 01/07/2028	भ्राम 22/12/2028	भद्रि 13/07/2029
पिंग 18/10/2027	धांय 16/02/2028	भ्राम 18/07/2028	भद्रि 16/01/2029	उत्क 17/08/2029
धांय - संक	धांय - मंग	धांय - पिंग	भ्राम - भ्राम	भ्राम - भद्रि
17/08/2029	18/04/2030	18/05/2030	18/07/2030	27/12/2030
18/04/2030	18/05/2030	18/07/2030	27/12/2030	18/07/2031
संक 10/10/2029	मंग 19/04/2030	पिंग 22/05/2030	भ्राम 05/08/2030	भद्रि 25/01/2031
मंग 17/10/2029	पिंग 20/04/2030	धांय 27/05/2030	भद्रि 28/08/2030	उत्क 27/02/2031
पिंग 31/10/2029	धांय 23/04/2030	भ्राम 02/06/2030	उत्क 24/09/2030	सिद्ध 08/04/2031
धांय 20/11/2029	भ्राम 26/04/2030	भद्रि 11/06/2030	सिद्ध 25/10/2030	संक 23/05/2031
भ्राम 17/12/2029	भद्रि 30/04/2030	उत्क 21/06/2030	संक 30/11/2030	मंग 29/05/2031
भद्रि 20/01/2030	उत्क 06/05/2030	सिद्ध 03/07/2030	मंग 05/12/2030	पिंग 09/06/2031
उत्क 01/03/2030	सिद्ध 11/05/2030	संक 16/07/2030	पिंग 14/12/2030	धांय 26/06/2031
सिद्ध 18/04/2030	संक 18/05/2030	मंग 18/07/2030	धांय 27/12/2030	भ्राम 18/07/2031

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भ्राम - उल्क	भ्राम - सिद्ध	भ्राम - संक	भ्राम - मंग	भ्राम - पिंग
18/07/2031	18/03/2032	27/12/2032	17/11/2033	27/12/2033
18/03/2032	27/12/2032	17/11/2033	27/12/2033	18/03/2034
उल्क 28/08/2031	सिद्ध 12/05/2032	संक 09/03/2033	मंग 18/11/2033	पिंग 01/01/2034
सिद्ध 14/10/2031	संक 14/07/2032	मंग 18/03/2033	पिंग 20/11/2033	धांय 07/01/2034
संक 07/12/2031	मंग 22/07/2032	पिंग 05/04/2033	धांय 23/11/2033	भ्राम 16/01/2034
मंग 14/12/2031	पिंग 07/08/2032	धांय 02/05/2033	भ्राम 28/11/2033	भद्रि 28/01/2034
पिंग 28/12/2031	धांय 31/08/2032	भ्राम 07/06/2033	भद्रि 04/12/2033	उल्क 10/02/2034
धांय 17/01/2032	भ्राम 01/10/2032	भद्रि 22/07/2033	उल्क 10/12/2033	सिद्ध 26/02/2034
भ्राम 13/02/2032	भद्रि 10/11/2032	उल्क 14/09/2033	सिद्ध 18/12/2033	संक 16/03/2034
भद्रि 18/03/2032	उल्क 27/12/2032	सिद्ध 17/11/2033	संक 27/12/2033	मंग 18/03/2034
भ्राम - धांय	भद्रि - भद्रि	भद्रि - उल्क	भद्रि - सिद्ध	भद्रि - संक
18/03/2034	18/07/2034	29/03/2035	27/01/2036	16/01/2037
18/07/2034	29/03/2035	27/01/2036	16/01/2037	26/02/2038
धांय 28/03/2034	भद्रि 22/08/2034	उल्क 18/05/2035	सिद्ध 05/04/2036	संक 16/04/2037
भ्राम 11/04/2034	उल्क 04/10/2034	सिद्ध 17/07/2035	संक 23/06/2036	मंग 28/04/2037
भद्रि 28/04/2034	सिद्ध 22/11/2034	संक 22/09/2035	मंग 03/07/2036	पिंग 20/05/2037
उल्क 18/05/2034	संक 17/01/2035	मंग 01/10/2035	पिंग 23/07/2036	धांय 23/06/2037
सिद्ध 11/06/2034	मंग 24/01/2035	पिंग 18/10/2035	धांय 21/08/2036	भ्राम 07/08/2037
संक 08/07/2034	पिंग 07/02/2035	धांय 12/11/2035	भ्राम 30/09/2036	भद्रि 03/10/2037
मंग 11/07/2034	धांय 01/03/2035	भ्राम 16/12/2035	भद्रि 18/11/2036	उल्क 09/12/2037
पिंग 18/07/2034	भ्राम 29/03/2035	भद्रि 27/01/2036	उल्क 16/01/2037	सिद्ध 26/02/2038
भद्रि - मंग	भद्रि - पिंग	भद्रि - धांय	भद्रि - भ्राम	उल्क - उल्क
26/02/2038	18/04/2038	28/07/2038	27/12/2038	18/07/2039
18/04/2038	28/07/2038	27/12/2038	18/07/2039	18/07/2040
मंग 27/02/2038	पिंग 23/04/2038	धांय 10/08/2038	भ्राम 19/01/2039	उल्क 17/09/2039
पिंग 02/03/2038	धांय 02/05/2038	भ्राम 27/08/2038	भद्रि 16/02/2039	सिद्ध 27/11/2039
धांय 07/03/2038	भ्राम 13/05/2038	भद्रि 17/09/2038	उल्क 22/03/2039	संक 16/02/2040
भ्राम 12/03/2038	भद्रि 27/05/2038	उल्क 12/10/2038	सिद्ध 30/04/2039	मंग 27/02/2040
भद्रि 19/03/2038	उल्क 13/06/2038	सिद्ध 11/11/2038	संक 15/06/2039	पिंग 18/03/2040
उल्क 28/03/2038	सिद्ध 03/07/2038	संक 15/12/2038	मंग 20/06/2039	धांय 17/04/2040
सिद्ध 07/04/2038	संक 25/07/2038	मंग 19/12/2038	पिंग 01/07/2039	भ्राम 28/05/2040
संक 18/04/2038	मंग 28/07/2038	पिंग 27/12/2038	धांय 18/07/2039	भद्रि 18/07/2040

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : वृश्चिक 0 वर्ष 1 मास 22 दिन

कुल दशाकाल : 83 वर्ष

तिथि : पुष्य - 3 सव्य

देह : वृष जीव : मिथुन

वृश्चिक 7 वर्ष	धनु 10 वर्ष	मकर 4 वर्ष	कुम्भ 4 वर्ष	मीन 10 वर्ष
02/04/1993	25/05/1993	25/05/2003	25/05/2007	25/05/2011
25/05/1993	25/05/2003	25/05/2007	25/05/2011	25/05/2021
00/00/0000	धनु 08/08/1994	मक 04/08/2003	कुंभ 04/08/2007	मीन 07/08/2012
00/00/0000	मक 31/01/1995	कुंभ 13/10/2003	मीन 27/01/2008	वृश्चिक 11/06/2013
00/00/0000	कुंभ 26/07/1995	मीन 06/04/2004	वृश्चिक 29/05/2008	तुला 16/05/2015
00/00/0000	मीन 08/10/1996	वृश्चिक 07/08/2004	तुला 06/03/2009	कन्या 15/06/2016
00/00/0000	वृश्चिक 12/08/1997	तुला 16/05/2005	कन्या 12/08/2009	तुला 21/05/2018
00/00/0000	तुला 17/07/1999	कन्या 21/10/2005	तुला 21/05/2010	वृश्चिक 25/03/2019
00/00/0000	कन्या 16/08/2000	तुला 30/07/2006	वृश्चिक 21/09/2010	धनु 07/06/2020
02/04/1993	तुला 21/07/2002	वृश्चिक 30/11/2006	धनु 16/03/2011	मक 30/11/2020
तुला 25/05/1993	वृश्चिक 25/05/2003	धनु 25/05/2007	मक 25/05/2011	कुंभ 25/05/2021
वृश्चिक 7 वर्ष	तुला 16 वर्ष	कन्या 9 वर्ष	तुला 16 वर्ष	वृश्चिक 7 वर्ष
25/05/2021	24/05/2028	24/05/2044	25/05/2053	25/05/2069
24/05/2028	24/05/2044	25/05/2053	25/05/2069	01/04/2076
वृश्चिक 26/12/2021	तुला 25/06/2031	कन्या 16/05/2045	तुला 24/06/2056	वृश्चिक 26/12/2069
तुला 03/05/2023	कन्या 20/03/2033	तुला 09/02/2047	वृश्चिक 30/10/2057	धनु 30/10/2070
कन्या 04/02/2024	तुला 19/04/2036	वृश्चिक 13/11/2047	धनु 04/10/2059	मक 03/03/2071
तुला 11/06/2025	वृश्चिक 25/08/2037	धनु 13/12/2048	मक 12/07/2060	कुंभ 04/07/2071
वृश्चिक 13/01/2026	धनु 30/07/2039	मक 20/05/2049	कुंभ 19/04/2061	मीन 07/05/2072
धनु 17/11/2026	मक 07/05/2040	कुंभ 26/10/2049	मीन 25/03/2063	वृश्चिक 08/12/2072
मक 20/03/2027	कुंभ 12/02/2041	मीन 26/11/2050	वृश्चिक 29/07/2064	तुला 15/04/2074
कुंभ 21/07/2027	मीन 18/01/2043	वृश्चिक 30/08/2051	तुला 30/08/2067	कन्या 18/01/2075
मीन 24/05/2028	वृश्चिक 24/05/2044	तुला 25/05/2053	कन्या 25/05/2069	तुला 01/04/2076

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - धनु 13/01/2026 17/11/2026	वृश्चि - मक 17/11/2026 20/03/2027	वृश्चि - कुंभ 20/03/2027 21/07/2027	वृश्चि - मीन 21/07/2027 24/05/2028	तुला - तुला 24/05/2028 25/06/2031
धनु 19/02/2026 मक 06/03/2026 कुंभ 21/03/2026 मीन 27/04/2026 वृश्चि 23/05/2026 तुला 21/07/2026 कन्या 24/08/2026 तुला 22/10/2026 वृश्चि 17/11/2026	मक 23/11/2026 कुंभ 29/11/2026 मीन 14/12/2026 वृश्चि 24/12/2026 तुला 17/01/2027 कन्या 30/01/2027 तुला 23/02/2027 वृश्चि 05/03/2027 धनु 20/03/2027	कुंभ 26/03/2027 मीन 10/04/2027 वृश्चि 20/04/2027 तुला 14/05/2027 कन्या 27/05/2027 तुला 20/06/2027 वृश्चि 01/07/2027 धनु 15/07/2027 मक 21/07/2027	मीन 27/08/2027 वृश्चि 22/09/2027 तुला 21/11/2027 कन्या 24/12/2027 तुला 22/02/2028 वृश्चि 19/03/2028 धनु 25/04/2028 मक 10/05/2028 कुंभ 24/05/2028	तुला 28/12/2028 कन्या 29/04/2029 तुला 02/12/2029 वृश्चि 07/03/2030 धनु 21/07/2030 मक 13/09/2030 कुंभ 06/11/2030 मीन 22/03/2031 वृश्चि 25/06/2031
तुला - कन्या 25/06/2031 20/03/2033	तुला - तुला 20/03/2033 19/04/2036	तुला - वृश्चि 19/04/2036 25/08/2037	तुला - धनु 25/08/2037 30/07/2039	तुला - मक 30/07/2039 07/05/2040
कन्या 02/09/2031 तुला 02/01/2032 वृश्चि 24/02/2032 धनु 11/05/2032 मक 10/06/2032 कुंभ 11/07/2032 मीन 25/09/2032 वृश्चि 18/11/2032 तुला 20/03/2033	तुला 23/10/2033 वृश्चि 26/01/2034 धनु 11/06/2034 मक 04/08/2034 कुंभ 27/09/2034 मीन 10/02/2035 वृश्चि 16/05/2035 तुला 19/12/2035 कन्या 19/04/2036	वृश्चि 31/05/2036 धनु 29/07/2036 मक 22/08/2036 कुंभ 15/09/2036 मीन 13/11/2036 वृश्चि 25/12/2036 तुला 30/03/2037 कन्या 22/05/2037 तुला 25/08/2037	धनु 18/11/2037 मक 22/12/2037 कुंभ 25/01/2038 मीन 20/04/2038 वृश्चि 18/06/2038 तुला 01/11/2038 कन्या 16/01/2039 तुला 01/06/2039 वृश्चि 30/07/2039	मक 13/08/2039 कुंभ 26/08/2039 मीन 29/09/2039 वृश्चि 23/10/2039 तुला 16/12/2039 कन्या 16/01/2040 तुला 10/03/2040 वृश्चि 03/04/2040 धनु 07/05/2040
तुला - कुंभ 07/05/2040 12/02/2041	तुला - मीन 12/02/2041 18/01/2043	तुला - वृश्चि 18/01/2043 24/05/2044	कन्या - कन्या 24/05/2044 16/05/2045	कन्या - तुला 16/05/2045 09/02/2047
कुंभ 20/05/2040 मीन 23/06/2040 वृश्चि 17/07/2040 तुला 09/09/2040 कन्या 10/10/2040 तुला 03/12/2040 वृश्चि 27/12/2040 धनु 30/01/2041 मक 12/02/2041	मीन 08/05/2041 वृश्चि 07/07/2041 तुला 19/11/2041 कन्या 04/02/2042 तुला 19/06/2042 वृश्चि 18/08/2042 धनु 11/11/2042 मक 15/12/2042 कुंभ 18/01/2043	वृश्चि 28/02/2043 तुला 03/06/2043 कन्या 27/07/2043 तुला 30/10/2043 वृश्चि 10/12/2043 धनु 08/02/2044 मक 02/03/2044 कुंभ 26/03/2044 मीन 24/05/2044	कन्या 02/07/2044 तुला 09/09/2044 वृश्चि 09/10/2044 धनु 21/11/2044 मक 08/12/2044 कुंभ 25/12/2044 मीन 06/02/2045 वृश्चि 08/03/2045 तुला 16/05/2045	तुला 15/09/2045 वृश्चि 07/11/2045 धनु 23/01/2046 मक 22/02/2046 कुंभ 25/03/2046 मीन 09/06/2046 वृश्चि 02/08/2046 तुला 02/12/2046 कन्या 09/02/2047

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - वृश्चि 09/02/2047 13/11/2047	कन्या - धनु 13/11/2047 13/12/2048	कन्या - मक 13/12/2048 20/05/2049	कन्या - कुंभ 20/05/2049 26/10/2049	कन्या - मीन 26/10/2049 26/11/2050
वृश्चि 04/03/2047 धनु 06/04/2047 मक 20/04/2047 कुंभ 03/05/2047 मीन 05/06/2047 वृश्चि 29/06/2047 तुला 21/08/2047 कन्या 20/09/2047 तुला 13/11/2047	धनु 31/12/2047 मक 19/01/2048 कुंभ 07/02/2048 मीन 25/03/2048 वृश्चि 28/04/2048 तुला 13/07/2048 कन्या 25/08/2048 तुला 09/11/2048 वृश्चि 13/12/2048	मक 20/12/2048 कुंभ 28/12/2048 मीन 16/01/2049 वृश्चि 30/01/2049 तुला 01/03/2049 कन्या 18/03/2049 तुला 18/04/2049 वृश्चि 01/05/2049 धनु 20/05/2049	कुंभ 28/05/2049 मीन 16/06/2049 वृश्चि 29/06/2049 तुला 30/07/2049 कन्या 16/08/2049 तुला 16/09/2049 वृश्चि 29/09/2049 धनु 18/10/2049 मक 26/10/2049	मीन 12/12/2049 वृश्चि 15/01/2050 तुला 01/04/2050 कन्या 14/05/2050 तुला 29/07/2050 वृश्चि 01/09/2050 धनु 19/10/2050 मक 07/11/2050 कुंभ 26/11/2050
कन्या - वृश्चि 26/11/2050 30/08/2051	कन्या - तुला 30/08/2051 25/05/2053	तुला - तुला 25/05/2053 24/06/2056	तुला - वृश्चि 24/06/2056 30/10/2057	तुला - धनु 30/10/2057 04/10/2059
वृश्चि 19/12/2050 तुला 11/02/2051 कन्या 13/03/2051 तुला 05/05/2051 वृश्चि 28/05/2051 धनु 01/07/2051 मक 14/07/2051 कुंभ 28/07/2051 मीन 30/08/2051	तुला 30/12/2051 कन्या 08/03/2052 तुला 08/07/2052 वृश्चि 30/08/2052 धनु 15/11/2052 मक 15/12/2052 कुंभ 15/01/2053 मीन 01/04/2053 वृश्चि 25/05/2053	तुला 28/12/2053 वृश्चि 02/04/2054 धनु 16/08/2054 मक 09/10/2054 कुंभ 02/12/2054 मीन 17/04/2055 वृश्चि 21/07/2055 तुला 23/02/2056 कन्या 24/06/2056	वृश्चि 05/08/2056 धनु 03/10/2056 मक 27/10/2056 कुंभ 20/11/2056 मीन 18/01/2057 वृश्चि 01/03/2057 तुला 04/06/2057 कन्या 27/07/2057 तुला 30/10/2057	धनु 23/01/2058 मक 26/02/2058 कुंभ 01/04/2058 मीन 25/06/2058 वृश्चि 23/08/2058 तुला 06/01/2059 कन्या 23/03/2059 तुला 06/08/2059 वृश्चि 04/10/2059
तुला - मक 04/10/2059 12/07/2060	तुला - कुंभ 12/07/2060 19/04/2061	तुला - मीन 19/04/2061 25/03/2063	तुला - वृश्चि 25/03/2063 29/07/2064	तुला - तुला 29/07/2064 30/08/2067
मक 18/10/2059 कुंभ 31/10/2059 मीन 04/12/2059 वृश्चि 28/12/2059 तुला 20/02/2060 कन्या 22/03/2060 तुला 15/05/2060 वृश्चि 08/06/2060 धनु 12/07/2060	कुंभ 25/07/2060 मीन 28/08/2060 वृश्चि 21/09/2060 तुला 14/11/2060 कन्या 15/12/2060 तुला 07/02/2061 वृश्चि 03/03/2061 धनु 06/04/2061 मक 19/04/2061	मीन 13/07/2061 वृश्चि 11/09/2061 तुला 24/01/2062 कन्या 11/04/2062 तुला 24/08/2062 वृश्चि 23/10/2062 धनु 16/01/2063 मक 19/02/2063 कुंभ 25/03/2063	वृश्चि 05/05/2063 तुला 08/08/2063 कन्या 01/10/2063 तुला 04/01/2064 वृश्चि 14/02/2064 धनु 14/04/2064 मक 07/05/2064 कुंभ 31/05/2064 मीन 29/07/2064	तुला 04/03/2065 कन्या 04/07/2065 तुला 06/02/2066 वृश्चि 12/05/2066 धनु 25/09/2066 मक 18/11/2066 कुंभ 11/01/2067 मीन 27/05/2067 वृश्चि 30/08/2067

चर दशा

भोग्य दशा काल : मकर 11 वर्ष 0 मास 0 दिन

मकर 11 वर्ष	
02/04/1993	
01/04/2004	
धनु	02/03/1994
वृश्चि	31/01/1995
तुला	01/01/1996
कन्या	01/12/1996
सिंह	01/11/1997
कर्क	02/10/1998
मिथु	01/09/1999
वृष	01/08/2000
मेष	02/07/2001
मीन	02/06/2002
कुंभ	03/05/2003
मक	01/04/2004

धनु 9 वर्ष	
01/04/2004	
02/04/2013	
वृश्चि	31/12/2004
तुला	01/10/2005
कन्या	02/07/2006
सिंह	02/04/2007
कर्क	01/01/2008
मिथु	01/10/2008
वृष	02/07/2009
मेष	02/04/2010
मीन	01/01/2011
कुंभ	02/10/2011
मक	02/07/2012
धनु	02/04/2013

वृश्चिक 7 वर्ष	
02/04/2013	
01/04/2020	
तुला	01/11/2013
कन्या	02/06/2014
सिंह	01/01/2015
कर्क	02/08/2015
मिथु	02/03/2016
वृष	01/10/2016
मेष	02/05/2017
मीन	01/12/2017
कुंभ	02/07/2018
मक	31/01/2019
धनु	01/09/2019
वृश्चि	01/04/2020

तुला 5 वर्ष	
01/04/2020	
02/04/2025	
वृश्चि	01/09/2020
धनु	31/01/2021
मक	02/07/2021
कुंभ	01/12/2021
मीन	02/05/2022
मेष	02/10/2022
वृष	03/03/2023
मिथु	02/08/2023
कर्क	01/01/2024
सिंह	01/06/2024
कन्या	31/10/2024
तुला	02/04/2025

कन्या 7 वर्ष	
02/04/2025	
01/04/2032	
तुला	01/11/2025
वृश्चि	02/06/2026
धनु	01/01/2027
मक	02/08/2027
कुंभ	02/03/2028
मीन	01/10/2028
मेष	02/05/2029
वृष	01/12/2029
मिथु	02/07/2030
कर्क	31/01/2031
सिंह	01/09/2031
कन्या	01/04/2032

सिंह 5 वर्ष	
01/04/2032	
02/04/2037	
कन्या	01/09/2032
तुला	31/01/2033
वृश्चि	02/07/2033
धनु	01/12/2033
मक	02/05/2034
कुंभ	02/10/2034
मीन	03/03/2035
मेष	02/08/2035
वृष	01/01/2036
मिथु	01/06/2036
कर्क	31/10/2036
सिंह	02/04/2037

कर्क 12 वर्ष	
02/04/2037	
02/04/2049	
मिथु	02/04/2038
वृष	02/04/2039
मेष	01/04/2040
मीन	02/04/2041
कुंभ	02/04/2042
मक	02/04/2043
धनु	01/04/2044
वृश्चि	02/04/2045
तुला	02/04/2046
कन्या	02/04/2047
सिंह	01/04/2048
कर्क	02/04/2049

मिथुन 8 वर्ष	
02/04/2049	
02/04/2057	
वृष	01/12/2049
मेष	02/08/2050
मीन	02/04/2051
कुंभ	02/12/2051
मक	01/08/2052
धनु	02/04/2053
वृश्चि	01/12/2053
तुला	02/08/2054
कन्या	02/04/2055
सिंह	02/12/2055
कर्क	01/08/2056
मिथु	02/04/2057

वृष 10 वर्ष	
02/04/2057	
02/04/2067	
मेष	31/01/2058
मीन	01/12/2058
कुंभ	02/10/2059
मक	01/08/2060
धनु	02/06/2061
वृश्चि	02/04/2062
तुला	31/01/2063
कन्या	02/12/2063
सिंह	01/10/2064
कर्क	01/08/2065
मिथु	02/06/2066
वृष	02/04/2067

मेष 2 वर्ष	
02/04/2067	
02/04/2069	
वृष	02/06/2067
मिथु	02/08/2067
कर्क	02/10/2067
सिंह	02/12/2067
कन्या	01/02/2068
तुला	01/04/2068
वृश्चि	01/06/2068
धनु	01/08/2068
मक	01/10/2068
कुंभ	01/12/2068
मीन	31/01/2069
मेष	02/04/2069

मीन 6 वर्ष	
02/04/2069	
02/04/2075	
मेष	01/10/2069
वृष	02/04/2070
मिथु	02/10/2070
कर्क	02/04/2071
सिंह	02/10/2071
कन्या	01/04/2072
तुला	01/10/2072
वृश्चि	02/04/2073
धनु	01/10/2073
मक	02/04/2074
कुंभ	02/10/2074
मीन	02/04/2075

कुम्भ 3 वर्ष	
02/04/2075	
02/04/2078	
मीन	02/07/2075
मेष	02/10/2075
वृष	01/01/2076
मिथु	01/04/2076
कर्क	02/07/2076
सिंह	01/10/2076
कन्या	31/12/2076
तुला	02/04/2077
वृश्चि	02/07/2077
धनु	01/10/2077
मक	01/01/2078
कुंभ	02/04/2078

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - वृश्चि 01/11/2025 02/06/2026	कन्या - धनु 02/06/2026 01/01/2027	कन्या - मक 01/01/2027 02/08/2027	कन्या - कुंभ 02/08/2027 02/03/2028	कन्या - मीन 02/03/2028 01/10/2028
तुला 18/11/2025 कन्या 06/12/2025 सिंह 24/12/2025 कर्क 11/01/2026 मिथु 28/01/2026 वृष 15/02/2026 मेष 05/03/2026 मीन 23/03/2026 कुंभ 10/04/2026 मक 27/04/2026 धनु 15/05/2026 वृश्चि 02/06/2026	वृश्चि 20/06/2026 तुला 07/07/2026 कन्या 25/07/2026 सिंह 12/08/2026 कर्क 30/08/2026 मिथु 16/09/2026 वृष 04/10/2026 मेष 22/10/2026 मीन 09/11/2026 कुंभ 26/11/2026 मक 14/12/2026 धनु 01/01/2027	धनु 19/01/2027 वृश्चि 05/02/2027 तुला 23/02/2027 कन्या 13/03/2027 सिंह 31/03/2027 कर्क 17/04/2027 मिथु 05/05/2027 वृष 23/05/2027 मेष 10/06/2027 मीन 27/06/2027 कुंभ 15/07/2027 मक 02/08/2027	मीन 20/08/2027 मेष 06/09/2027 वृष 24/09/2027 मिथु 12/10/2027 कर्क 30/10/2027 सिंह 16/11/2027 कन्या 04/12/2027 तुला 22/12/2027 वृश्चि 09/01/2028 धनु 26/01/2028 मक 13/02/2028 कुंभ 02/03/2028	मेष 20/03/2028 वृष 06/04/2028 मिथु 24/04/2028 कर्क 12/05/2028 सिंह 30/05/2028 कन्या 17/06/2028 तुला 04/07/2028 वृश्चि 22/07/2028 धनु 09/08/2028 मक 27/08/2028 कुंभ 13/09/2028 मीन 01/10/2028
कन्या - मेष 01/10/2028 02/05/2029	कन्या - वृष 02/05/2029 01/12/2029	कन्या - मिथु 01/12/2029 02/07/2030	कन्या - कर्क 02/07/2030 31/01/2031	कन्या - सिंह 31/01/2031 01/09/2031
वृष 19/10/2028 मिथु 06/11/2028 कर्क 23/11/2028 सिंह 11/12/2028 कन्या 29/12/2028 तुला 16/01/2029 वृश्चि 02/02/2029 धनु 20/02/2029 मक 10/03/2029 कुंभ 28/03/2029 मीन 14/04/2029 मेष 02/05/2029	मेष 20/05/2029 मीन 07/06/2029 कुंभ 24/06/2029 मक 12/07/2029 धनु 30/07/2029 वृश्चि 17/08/2029 तुला 03/09/2029 कन्या 21/09/2029 सिंह 09/10/2029 कर्क 27/10/2029 मिथु 13/11/2029 वृष 01/12/2029	वृष 19/12/2029 मेष 06/01/2030 मीन 23/01/2030 कुंभ 10/02/2030 मक 28/02/2030 धनु 18/03/2030 वृश्चि 04/04/2030 तुला 22/04/2030 कन्या 10/05/2030 सिंह 28/05/2030 कर्क 14/06/2030 मिथु 02/07/2030	मिथु 20/07/2030 वृष 07/08/2030 मेष 24/08/2030 मीन 11/09/2030 कुंभ 29/09/2030 मक 17/10/2030 धनु 04/11/2030 वृश्चि 21/11/2030 तुला 09/12/2030 कन्या 27/12/2030 सिंह 14/01/2031 कर्क 31/01/2031	कन्या 18/02/2031 तुला 08/03/2031 वृश्चि 26/03/2031 धनु 12/04/2031 मक 30/04/2031 कुंभ 18/05/2031 मीन 05/06/2031 मेष 22/06/2031 वृष 10/07/2031 मिथु 28/07/2031 कर्क 15/08/2031 सिंह 01/09/2031
कन्या - कन्या 01/09/2031 01/04/2032	सिंह - कन्या 01/04/2032 01/09/2032	सिंह - तुला 01/09/2032 31/01/2033	सिंह - वृश्चि 31/01/2033 02/07/2033	सिंह - धनु 02/07/2033 01/12/2033
तुला 19/09/2031 वृश्चि 07/10/2031 धनु 25/10/2031 मक 11/11/2031 कुंभ 29/11/2031 मीन 17/12/2031 मेष 04/01/2032 वृष 21/01/2032 मिथु 08/02/2032 कर्क 26/02/2032 सिंह 15/03/2032 कन्या 01/04/2032	तुला 14/04/2032 वृश्चि 27/04/2032 धनु 09/05/2032 मक 22/05/2032 कुंभ 04/06/2032 मीन 17/06/2032 मेष 29/06/2032 वृष 12/07/2032 मिथु 25/07/2032 कर्क 06/08/2032 सिंह 19/08/2032 कन्या 01/09/2032	वृश्चि 13/09/2032 धनु 26/09/2032 मक 09/10/2032 कुंभ 21/10/2032 मीन 03/11/2032 मेष 16/11/2032 वृष 28/11/2032 मिथु 11/12/2032 कर्क 24/12/2032 सिंह 05/01/2033 कन्या 18/01/2033 तुला 31/01/2033	तुला 12/02/2033 कन्या 25/02/2033 सिंह 10/03/2033 कर्क 23/03/2033 मिथु 04/04/2033 वृष 17/04/2033 मेष 30/04/2033 मीन 12/05/2033 कुंभ 25/05/2033 मक 07/06/2033 धनु 19/06/2033 वृश्चि 02/07/2033	वृश्चि 15/07/2033 तुला 27/07/2033 कन्या 09/08/2033 सिंह 22/08/2033 कर्क 03/09/2033 मिथु 16/09/2033 वृष 29/09/2033 मेष 11/10/2033 मीन 24/10/2033 कुंभ 06/11/2033 मक 18/11/2033 धनु 01/12/2033



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चर दशा - प्रत्यन्तर

सिंह - मक 01/12/2033 02/05/2034	सिंह - कुंभ 02/05/2034 02/10/2034	सिंह - मीन 02/10/2034 03/03/2035	सिंह - मेष 03/03/2035 02/08/2035	सिंह - वृष 02/08/2035 01/01/2036
धनु 14/12/2033 वृश्चि 27/12/2033 तुला 08/01/2034 कन्या 21/01/2034 सिंह 03/02/2034 कर्क 15/02/2034 मिथु 28/02/2034 वृष 13/03/2034 मेष 25/03/2034 मीन 07/04/2034 कुंभ 20/04/2034 मक 02/05/2034	मीन 15/05/2034 मेष 28/05/2034 वृष 09/06/2034 मिथु 22/06/2034 कर्क 05/07/2034 सिंह 17/07/2034 कन्या 30/07/2034 तुला 12/08/2034 वृश्चि 24/08/2034 धनु 06/09/2034 मक 19/09/2034 कुंभ 02/10/2034	मेष 14/10/2034 वृष 27/10/2034 मिथु 09/11/2034 कर्क 21/11/2034 सिंह 04/12/2034 कन्या 17/12/2034 तुला 29/12/2034 वृश्चि 11/01/2035 धनु 24/01/2035 मक 05/02/2035 कुंभ 18/02/2035 मीन 03/03/2035	वृष 15/03/2035 मिथु 28/03/2035 कर्क 10/04/2035 सिंह 22/04/2035 कन्या 05/05/2035 तुला 18/05/2035 वृश्चि 30/05/2035 धनु 12/06/2035 मक 25/06/2035 कुंभ 08/07/2035 मीन 20/07/2035 मेष 02/08/2035	मेष 15/08/2035 मीन 27/08/2035 कुंभ 09/09/2035 मक 22/09/2035 धनु 04/10/2035 वृश्चि 17/10/2035 तुला 30/10/2035 कन्या 11/11/2035 सिंह 24/11/2035 कर्क 07/12/2035 मिथु 19/12/2035 वृष 01/01/2036
सिंह - मिथु 01/01/2036 01/06/2036	सिंह - कर्क 01/06/2036 31/10/2036	सिंह - सिंह 31/10/2036 02/04/2037	कर्क - मिथु 02/04/2037 02/04/2038	कर्क - वृष 02/04/2038 02/04/2039
वृष 14/01/2036 मेष 26/01/2036 मीन 08/02/2036 कुंभ 21/02/2036 मक 05/03/2036 धनु 17/03/2036 वृश्चि 30/03/2036 तुला 12/04/2036 कन्या 24/04/2036 सिंह 07/05/2036 कर्क 20/05/2036 मिथु 01/06/2036	मिथु 14/06/2036 वृष 27/06/2036 मेष 09/07/2036 मीन 22/07/2036 कुंभ 04/08/2036 मक 16/08/2036 धनु 29/08/2036 वृश्चि 11/09/2036 तुला 23/09/2036 कन्या 06/10/2036 सिंह 19/10/2036 कर्क 31/10/2036	कन्या 13/11/2036 तुला 26/11/2036 वृश्चि 09/12/2036 धनु 21/12/2036 मक 03/01/2037 कुंभ 16/01/2037 मीन 28/01/2037 मेष 10/02/2037 वृष 23/02/2037 मिथु 07/03/2037 कर्क 20/03/2037 सिंह 02/04/2037	वृष 02/05/2037 मेष 02/06/2037 मीन 02/07/2037 कुंभ 01/08/2037 मक 01/09/2037 धनु 01/10/2037 वृश्चि 01/11/2037 तुला 01/12/2037 कन्या 01/01/2038 सिंह 31/01/2038 कर्क 02/03/2038 मिथु 02/04/2038	मेष 02/05/2038 मीन 02/06/2038 कुंभ 02/07/2038 मक 02/08/2038 धनु 01/09/2038 वृश्चि 02/10/2038 तुला 01/11/2038 कन्या 01/12/2038 सिंह 01/01/2039 कर्क 31/01/2039 मिथु 03/03/2039 वृष 02/04/2039
कर्क - मेष 02/04/2039 01/04/2040	कर्क - मीन 01/04/2040 02/04/2041	कर्क - कुंभ 02/04/2041 02/04/2042	कर्क - मक 02/04/2042 02/04/2043	कर्क - धनु 02/04/2043 01/04/2044
वृष 03/05/2039 मिथु 02/06/2039 कर्क 02/07/2039 सिंह 02/08/2039 कन्या 01/09/2039 तुला 02/10/2039 वृश्चि 01/11/2039 धनु 02/12/2039 मक 01/01/2040 कुंभ 01/02/2040 मीन 02/03/2040 मेष 01/04/2040	मेष 02/05/2040 वृष 01/06/2040 मिथु 02/07/2040 कर्क 01/08/2040 सिंह 01/09/2040 कन्या 01/10/2040 तुला 31/10/2040 वृश्चि 01/12/2040 धनु 31/12/2040 मक 31/01/2041 कुंभ 02/03/2041 मीन 02/04/2041	मीन 02/05/2041 मेष 02/06/2041 वृष 02/07/2041 मिथु 01/08/2041 कर्क 01/09/2041 सिंह 01/10/2041 कन्या 01/11/2041 तुला 01/12/2041 वृश्चि 01/01/2042 धनु 31/01/2042 मक 02/03/2042 कुंभ 02/04/2042	धनु 02/05/2042 वृश्चि 02/06/2042 तुला 02/07/2042 कन्या 02/08/2042 सिंह 01/09/2042 कर्क 02/10/2042 मिथु 01/11/2042 वृष 01/12/2042 मेष 01/01/2043 मीन 31/01/2043 कुंभ 03/03/2043 मक 02/04/2043	वृश्चि 03/05/2043 तुला 02/06/2043 कन्या 02/07/2043 सिंह 02/08/2043 कर्क 01/09/2043 मिथु 02/10/2043 वृष 01/11/2043 मेष 02/12/2043 मीन 01/01/2044 कुंभ 01/02/2044 मक 02/03/2044 धनु 01/04/2044



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	1
मित्र अंक	2, 7, 8, 1
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20, 29, 38, 47, 56
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल



FUTUREPOINT
Astro Solutions

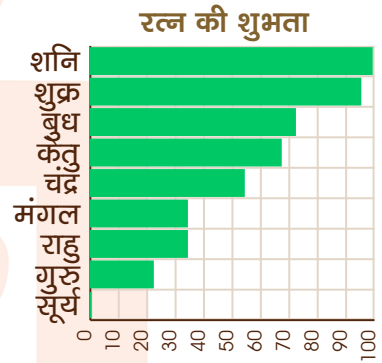


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	99%	धन, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	95%	पराक्रम, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	72%	धन, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	67%	सन्तति सुख, पराक्रम
मोती	चंद्र	54%	दम्पति
मूंगा	मंगल	34%	शत्रु व रोग, ग्रह कलेश, हानि
गोमेद	राहु	34%	हानि, शत्रु व रोग
पुखराज	गुरु	22%	नेष्ट भाग्य, व्यय, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	पराक्रम हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	11/06/2001	0%	34%	9%	78%	22%	100%	100%	47%	55%
बुध	11/06/2018	0%	34%	34%	84%	22%	100%	99%	34%	67%
केतु	11/06/2025	0%	34%	47%	72%	22%	100%	86%	9%	80%
शुक्र	11/06/2045	0%	34%	34%	78%	22%	100%	100%	47%	73%
सूर्य	11/06/2051	12%	61%	47%	72%	34%	83%	86%	9%	55%
चंद्र	11/06/2061	0%	67%	34%	78%	22%	95%	99%	9%	55%
मंगल	11/06/2068	0%	61%	55%	59%	34%	95%	99%	9%	73%
राहु	11/06/2086	0%	34%	9%	72%	22%	100%	100%	55%	55%
गुरु	12/06/2102	0%	61%	47%	59%	47%	83%	99%	34%	67%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना, लहसुनिया एवं मोती रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा व गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

पुखराज व माणिक्य रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आपको शनि का रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धनी, कुटुंब तथा लाभवान बनायेगा। आपके पास धनागमन का प्रवाह बना रहेगा। नीलम रत्न आपको सुख संपदा, समृद्धि, मान-प्रतिष्ठा तथा धन की प्राप्ति देगा। यह रत्न आपके पारिवारिक व्यवसाय के लिए भी सुखद फलदायक होगा। यह आपको लघु उद्योग व शिक्षा आदि के क्षेत्रों में भी सफलता देगा। नीलम रत्न पैतृक सम्पत्ति की वृद्धि करेगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वितीयेश है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप शनि के सभी शुभफल प्राप्त कर सकते हैं। यह नीलम रत्न आपको स्वभाव, शरीर आरोग्यता, आयु, यश एवं प्रतिष्ठा दे सकता है। इस रत्न को धारण करने से आपके संचित धन में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से स्वास्थ्य शुभ, व्यक्तित्व उज्ज्वल, अचल संपत्ति, कुटुंब, उत्तम भोजन, पारिवारिक सुख, वाणी की मधुरता एवं आरम्भिक शिक्षा उत्तम हो सकती है। नीलम रत्न प्रभाव से आपके परिवार में बढ़ोतरी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। आपके लिए शुक्र रत्न हीरा शुभदायक रहेगा। शुक्र रत्न हीरा आपको संगीत एवं कला के क्षेत्र में रुचि बना सकता है। रत्न की शुभता से आपकी श्रवण क्षमता का विकास होगा। यह हीरा रत्न धन व वैभवता देगा। हीरा रत्न आपको पराक्रमी, विद्वान, भाग्यवान एवं पर्यटनशील बना सकता है। रत्न की शक्तियां आपको साहसी व समर्थक बनायेगी। आप भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहेंगे। दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि के लिए भी हीरा रत्न उत्तम रहेगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं दशमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपको माता-पिता से सुख, शारीरिक सौंदर्य की वृद्धि, भू-संपत्ति

का सुख दिला सकता है। इस रत्न को धारण कर आप वाहन, राज्य व आजीविका क्षेत्र से शुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। लाभ व प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। यह रत्न पंचमेश का होने के कारण आपको विद्या, बुद्धि एवं संतान सुख को अनुकूल करने में सहयोग कर सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वितीय भाव में स्थित है। इसलिए आपके लिए बुध रत्न पन्ना धारण करना उत्तम फलदायक रहेगा। पन्ना रत्न धारण करने से आपकी नियोजन क्षमता बेहतर होगी। आपकी कार्य योजनाएं सुव्यवस्थित होंगी। रत्न पन्ना आपकी वाकशक्ति, धन, विद्या, कुटुम्ब सुख की वृद्धि करेगा। सभा में अपनी बात कहने की योग्यता का विकास होगा। इसे धारण करने पर आप लोगों को अपनी बातों से प्रभावित करने में सफल हो पायेंगे। रत्न पन्ना आपको सुविचारक या वक्ता बनाने में सहयोग करेगा। बुद्धि से धनार्जन में पन्ना रत्न उपयोगी साबित होगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व षष्ठेश है। बुध रत्न पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण कर आप अपने भाग्य को प्रगतिशील बना सकते हैं। धर्म, कर्म और आध्यात्मिक विषयों से सहज जुड़ सकते हैं। पन्ना रत्न धारण से आप शत्रुओं को बुद्धिमानी से परास्त कर पायेंगे। यह रत्न आपको यथायोग्य सम्मान दिलाएगा। रत्न शुभता से आपके बाधित कार्य फिर से बनने लगेंगे। पन्ना रत्न की शुभता से आप अपने ऋणों का समय पर भुगतान करने में सफल रहेंगे। दैनिक व्यवसाय की कठिनाईयां रत्न शुभता से दूर हो सकती हैं।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार

धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण कर आप वाहन सुखों में बढ़ोतरी कर सकते हैं। यह रत्न आपको तीर्थयात्रा एवं विदेश प्रवास देगा। रत्न की शुभता से आपके पराक्रम और नौकरी क्षेत्र में सफलता देगा। आपको अनेक सेवकों का सुख प्राप्त होगा। आप छल-कपट से दूर रहने का प्रयास करेंगे। केतु रत्न लहसुनिया आपको आंशिक धैर्यहीन बना सकता है। इसकी शुभता से आपके नकारात्मक विचारों का अंत होगा। सगे भाईयों से विवाद समाप्त होंगे।

केतु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का 9 माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न धारण से आपके स्वभाव की चंचलता की कमी होगी। यह रत्न आपकी नेतृत्व करने की क्षमता बढ़ायेगा। रत्न शुभता से आपको अनेक यात्राएं करनी पड़ सकती है। मोती रत्न आपकी स्फूर्ति बढ़ायेगा। जीवन साथी से आपके संबंध आत्मीय रहेंगे। मोती रत्न आपको

आपके व्यवसाय में अच्छी सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपको एक से अधिक बार व्यापार क्षेत्र में बदलाव करने पड़ सकते हैं।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में चंद्र सप्तम भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए विशेष शुभ रहेगा। मोती रत्न धारण करने से आपका अपने जीवन साथी से विशेष स्नेह बना रहेगा। मोती की शुभता से दांपत्य जीवन स्नेह और सौहार्द भाव से परिपूर्ण हो सकता है। यह रत्न आपके स्वाभिमान भाव में बढ़ोतरी कर सकता है। मोती रत्न से आपको क्रय-विक्रय से संबन्धित क्षेत्रों में उत्तम लाभ देकर मनोकूल सफलता दे सकता है। रत्न शुभता से आप ग्रहस्थ जीवन में स्थिरता आयेगी। यह रत्न आपको विनोदी स्वभाव देकर आपको विपरीत परिस्थितियों का मुस्करा कर मुकाबला करने की शक्ति दे सकता है। ससुराल से लाभ, सम्मानित, व्यवसाय में लाभ व मानसिक शांति प्राप्ति के लिए भी मोती रत्न धारण किया जा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल छे भव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको प्रसिद्धि की प्रतिकूलता, विद्वानों से शत्रुता, तकनीकी विषयों में अरुचि हो सकती है। अत्यधिक साहस, जोखिम लेने का स्वभाव आपको शारीरिक कष्ट दे सकता है। विरोधियों से कष्ट आपके लिए बने रहेंगे। यह रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति को बाधित कर सकता है। प्रतियोगिताओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। मूंगा रत्न आपको अधीनस्थों के द्वारा पीड़ित कर सकता है। माता के सुख में कमी के योग बन सकते हैं। मूंगा रत्न आपको रक्त प्रवाह से संबंधित रोग दे सकता है। शक्ति का दुरुपयोग आपके द्वारा हो सकता है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं एकादशेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर भूमि-भवन के विषय सहजता से पूर्ण नहीं होंगे। मूंगा रत्न आपको संपत्ति के क्रय-विक्रय से संबंधित कार्यक्षेत्रों में हानि दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपको जन्मस्थान से दूर रहना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी माता, वाहन एवं समाज का सुख मार्ग

बाधित कर सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद आप अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। उच्चाभिलाषा की कामना आपको आंशिक रूप से स्वाथी भी बना सकती है। मूंगा रत्न आपको जोश, साहस और जोखिम पूर्ण क्षेत्रों में आय व लाभार्जन की प्रवृत्ति आपको दे सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद धारण करने पर आपमें पारिश्रामिक क्षमता की कमी हो सकती है। यह रत्न स्वास्थ्य में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपको विलासी और भावुक स्वभाव अधिक दे सकता है। यह रत्न आपको वाचाल बना सकता है। आप समाज में योग्यतानुसार स्थान प्राप्त नहीं कर पाएंगे। आपके द्वारा धन लाभ कुछ अनैतिक तरीकों से हो सकते हैं। धन-लाभ प्राप्ति के लिए आप बुद्धि और चातुर्य का प्रयोग अधिक कर सकते हैं। आगे बढ़ने के लिए आप आंशिक रूप से स्वाथी भी हो सकते हैं। यह रत्न दूर स्थानों से आपकी लाभ प्राप्ति को बाधित कर सकता है। आप कुछ हद तक अभिमानी हो सकते हैं। आय क्षेत्र के बढ़ते विवाद आपकी ऊर्जा और समय शक्ति का ह्रास कर सकते हैं।

राहु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल छठे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपके लिए कार्यों को अंजाम तक पहुंचाना कठिन हो सकता है। यह रत्न आपमें आलस्य भाव ला सकता है। पुखराज रत्न आपको मित्रों एवं सेवकों का सहयोग प्राप्त करने में बाधाएं दे सकता है। सरकारी कार्यों के लिए भी रत्न की प्रतिकूलता बनी हुई है। यह रत्न आपको अविवेकी कर आपके सदाचार भाव में कमी ला सकता है। इसके प्रभाव से आप अत्यधिक धार्मिक परायण हो सकते हैं। देवताओं, ब्राह्मणों और गुरुजनों को अधिक से अधिक समय दे सकते हैं। इस रत्न से आपका कानूनी क्षेत्र, कलर्क का काम और दूर प्रवास में आजीविका कार्य बाधित हो सकते हैं।

आपकी मकर लग्न के कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं द्वादशेश है। गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पुखराज रत्न पहनने पर अनिद्रा रोग प्रभावी होकर आपके स्वास्थ्य में कमी कर सकते हैं। कार्यों को पूर्ण करने के लिए आपको अधिक प्रयास करने पड़ सकते हैं। जिसके कारण आपको आराम के अवसर कम मिलेंगे। यह

भी आपको अस्वस्थ करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप चिंता और अपमान से पीड़ित हो सकते हैं। मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को यह रत्न बाधित कर सकता है। पुखराज रत्न आपके विदेश भाव को प्रबल कर आपको व्यर्थ की यात्राएं दे सकता है। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आपको आर्थिक दंड के रूप में टैक्स (कर) देने पड़ सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य आपको रेल यात्रा की अवधि के दौरान कष्ट दे सकता है। छोटे भाई-बहनों का अभाव आपको हो सकता है। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपमें धैर्यहीनता, पुरुषार्थ एवं स्वाभिमान की गुणों की कमी आ सकती है। आपमें कठोरता और अनुशासनप्रियता की भावना अधिक हो सकती है। रत्न प्रभाव से आपमें चारित्रिक दोष आ सकते हैं। कुछ बुरी आदतें भी आपमें आ सकती हैं। चोरी का भय अथवा मामा या पड़ोसियों को कुछ कष्ट हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारियों का सहयोग कम मिलेगा। सूर्य रत्न माणिक्य आपमें उदारता की कमी, आत्मा व चित्त की शुद्धि की कमी भी कर सकता है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में सूर्य अष्टमेश है। अष्टमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। इस रत्न में शुभता की कमी के कारण आप पदोन्नति के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करने का प्रयास कर सकते हैं। सरकारी क्षेत्रों से अपना काम निकलवाने के लिए भी आप अन्य स्रोतों का सहयोग लेने से पीछे नहीं हटेंगे। रत्न प्रभाव से आप अपनी अधिकारिक शक्तियों का आंशिक दुरुपयोग कर सकते हैं। रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं है। इसलिए यह रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आपको दीर्घकालीन रोग दे सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र

(11/06/2025 - 11/06/2045)

शुक्र की दशा में आपका हीरा, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, मोती व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य

(11/06/2045 - 11/06/2051)

सूर्य की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र

(11/06/2051 - 11/06/2061)

चन्द्र की दशा में आपका नीलम, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, गोमेद व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल

(11/06/2061 - 11/06/2068)

मंगल की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, मोती, पन्ना व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और गोमेद व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु

(11/06/2068 - 11/06/2086)

राहु की दशा में आपका हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु

इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

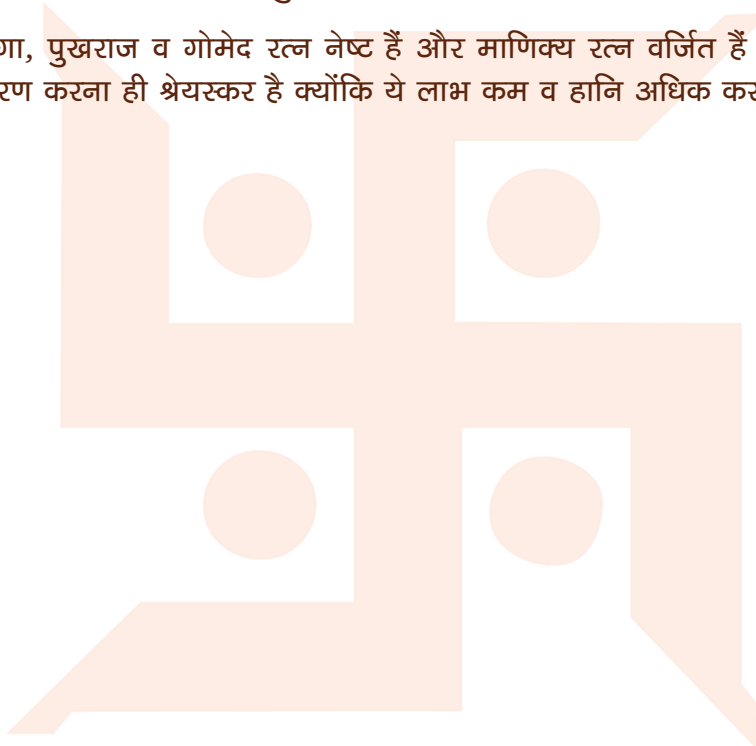
मोती रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(11/06/2086 - 12/06/2102)

गुरु की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, मोती व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

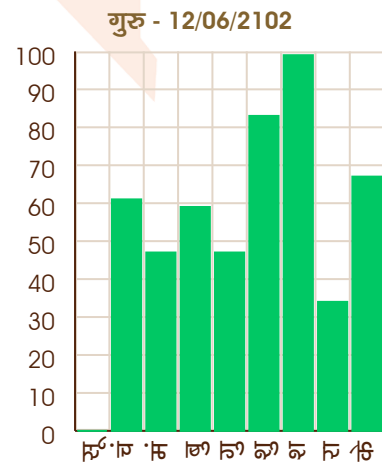
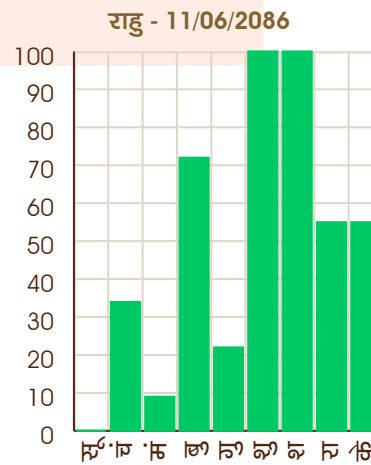
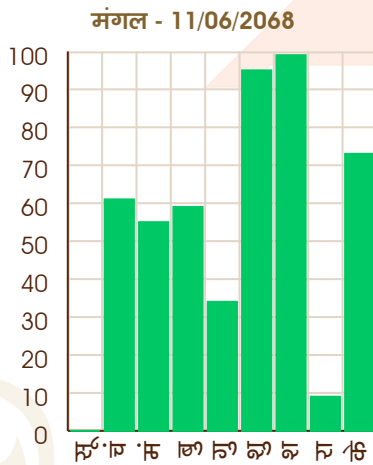
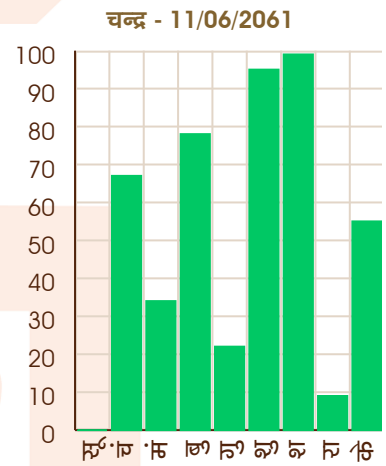
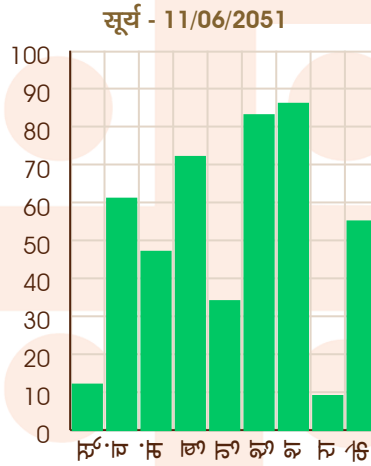
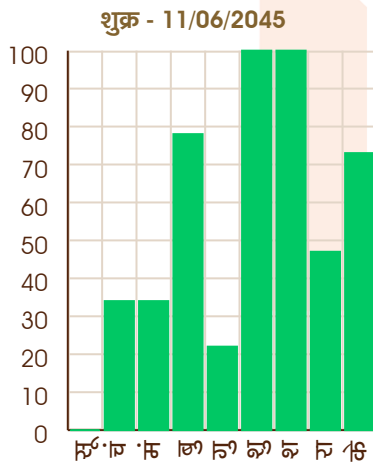
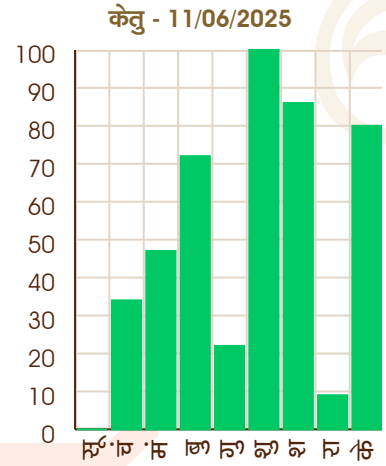
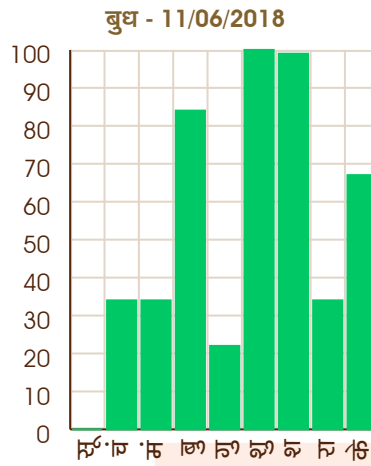
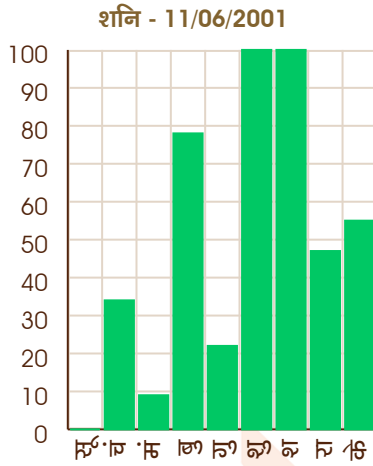
मूंगा, पुखराज व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा ग्राफ



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - लापीज

आपका जन्म मकर राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में न्याय का प्रतीक व न्यायप्रिय माना जाता है तथा शनि को ज्योतिष में आध्यात्मिक ज्ञान के लिये शुभ माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मकर राशि के लग्न वाले जातकों को मकर राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये लापीज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शनि न्यायप्रिय एवं नौकरी का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को समाज में सम्मान तथा नौकरी पेशा लोगों के लिये अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग व सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा सेवकों का सहयोग भी प्राप्त होता है। शनि ग्रह एकाग्रता तथा आत्मिक शक्ति का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको कोर्ट कचहरी मुकदमे आदि से संबंधित परेशानी हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से समस्याओं से मुक्ति दिलवाता है।

लापीज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। लापीज रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल सूर्यास्त के पश्चात होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त से एक घंटे के समय के अंदर इसको धारण करना होता है। लापीज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ. भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लापीज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सरसों का तेल, सवा मीटर काले कपड़े का दान करें तो लापीज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और शनि देव की उपासना करें तो यह लापीज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव जी की उपासना करें तथा शनिदेव जी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मकर लग्न वाले जातक यदि लापीज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहु ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रुके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यों में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति रखते हैं। साथ ही आप हंसमुख हैं। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता है। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हँसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप

अपनी समझदारी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रुचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते हैं। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते हैं। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते हैं। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता है। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। कुंडली के षष्ठ भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती है। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। अष्टमेश का किसी भी भाव-भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता है। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

बुध आपके षष्ठेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन-हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। मंगल का रोग भाव में होने से आपके जीवन साथी से सुखों में न्यूनता, मित्रों से धोखा, संतान सुख में न्यूनता, स्वजनों से झगड़ा, रक्त-विकार, धन-नाश का कारण बन सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 4, 5 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/04/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
सम
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

धन
शत्रु व रोग
दाम्पत्य कलह
दुर्घटना
व्यावसायिक उन्नति



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

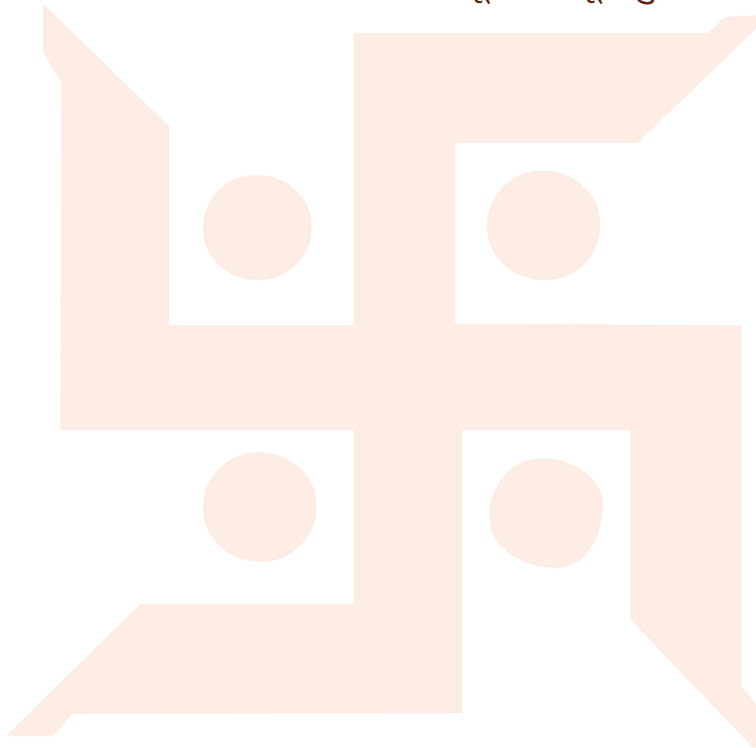
आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यवंशेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक दो होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक दो होता है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। जिसके प्रभाववश आप एक कल्पनाशील, कलाप्रिय एवं स्नेहशील स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे। आपकी कल्पनाशक्ति उच्च कोटि की रहेगी, लेकिन शारीरिक शक्ति आपकी बहुत अच्छी नहीं रहेगी। आपका बुद्धि चातुर्य काफी अच्छा होगा एवं बुद्धि विवेक के कार्यों में आप दूसरों से बाजी मार ले जायेंगे। जिस प्रकार से आपके मूलांक स्वामी चन्द्रमा का रूप एकसा नहीं रहता समयानुसार घटता-बढ़ता रहता है, उसी तरह आप भी अपने जीवन में एक विचार या योजना पर दृढ़ नहीं रहेंगे।

आपकी योजनाओं में बदलाव होता रहेगा एवं एक योजना को छोड़कर दूसरी को प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति आपके अन्दर पाई जायेगी। धीरज एवं अध्यवसाय की आप में कमी रहेगी। इससे आपके कई कार्य समय पर पूर्ण नहीं होंगे। आत्म विश्वास की मात्रा आप के अन्दर कम रहेगी एवं स्वयं अपने ऊपर पूर्ण भरोसा नहीं रख पायेंगे, जिससे कभी-कभी आपको निराशा का सामना करना पड़ेगा।

आपकी सामाजिक स्थिति उत्तम दर्जे की रहेगी एवं मानसिक रूप से जिसे आप अपना लेंगे वैसे ही लाभ आपको प्राप्त होंगे। जनता के मध्य आप एक लोकप्रिय व्यक्ति रहेंगे, तथा स्वयं की मेहनत से अपनी सामाजिक स्थिति निर्मित करेंगे।

आपको अवस्थानुसार नेत्र, उदर, एवं मूत्र संबंधी रोगों का सामना करना पड़ेगा, मानसिक तनाव तथा शीतरोग भी परेशान करेंगे। जल से उत्पन्न रोग कफ, सर्दी-जुकाम, सिरदर्द की शिकायतें भी यदाकदा होंगी।

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाले स्पष्ट वक्ता होंगे। आप स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाले यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाले शूरवीर व्यक्ति के रूप में पहचान स्थापित करेंगे। आपका जीवन चक्र एक राजा की भाँति संचालित होगा अर्थात् आप हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचार धारा पर निर्भीक चलेंगे। अहं या स्वाभिमान आपमें कूट-कूट कर भरा होगा।

आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, आपकी मेहनत से होगी। अधिकारों में वृद्धि होगी। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से आपका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। जीवनी शक्ति आप में अच्छी रहेगी। एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहेंगे। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से आप एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करेंगे। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से आपको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगेगा और ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगे, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

आपका मूलांक 2 है तथा भाग्यांक 1 है। मूलांक 2 के स्वामी चंद्रमा का भाग्यांक 1

के स्वामी सूर्य से सम संबंध है। इस कारण आपको इन दोनों ही अंकों के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। आपका जीवन चक्र एक ओर सूर्य कि तरह चमकेगा, वहीं दूसरी तरफ चंद्रमा के समान घटता-बढ़ता रहेगा। कभी आपका भाग्य उच्चतम शिखर पर पहुंचेगा, तो कभी आप अंधकार में जीवन जीने को बाध्य होंगे। चंद्रमा के गुणों के कारण आपमें अच्छी कल्पनाशीलता रहेगी एवं यदि आप अपने विचारों को दृढ़ इच्छा शक्ति से पूर्ण करेंगे, तो आपको निश्चित ही सफलता प्राप्त होगी। रुकावटों, कठिनाइयों को धैर्यपूर्वक पार करने की हमेशा कोशिश करें।

मूलांक 2 तथा भाग्यांक 1 के प्रभाववश आपका भाग्योदय 19 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होकर 28 वर्ष के अवस्था पर उच्च स्थिति तथा 37 वें वर्ष में पूर्ण भाग्योदय का लाभ प्राप्त होगा।

आपके मूलांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 7, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, फरवरी, अप्रैल, जुलाई, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटना क्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 7, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

- 1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
- 2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
- 4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
- 7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
- 8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
- 9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। कर्क राशि चंद्रमा की स्वयं की राशि है। 13 मई से 14 जून तक सूर्य वृष राशि में होता है, जो कि चंद्रमा की उच्च राशि है। अतः यह समय मूलांक दो के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए कोई भी नया या शुभ कार्य करने हेतु सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार के दिन अच्छे सिद्ध हो सकते हैं। यदि इन्हीं वारों में आपके मूलांक की तारीख भी हो तो ऐसा दिन सभी कार्यों के लिये अच्छा रहेगा।

शुभ तारीखें

जब कभी आपको कोई महत्वपूर्ण कार्य करना हो, नया कार्य या व्यापार प्रारंभ करना हो, अथवा किसी को विशेष पत्र लिखना हो या किसी से विशेष कार्यवश मिलने जाना हो तो आप किसी भी मास की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को ये सारे कार्य करें। यदि इन तारीखों में आपका अनुकूल वार भी रहता है तो ऐसा दिन आपके कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी मास की 5, 8, 14, 17, 23 एवं 26 तारीखें कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए ठीक नहीं रहेंगी। अतः इन तारीखों में सोच-समझ कर ही कोई शुभ कार्य करें।

मित्रता या साझेदारी

किसी से भी मित्रता करते समय यह देखना आपके हित में रहेगा कि यदि उसका जन्म अंग्रेजी मास की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति आपके लिए हितकारी सिद्ध हो सकते हैं।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आपके लिए मूलांक 2, 7 एवं 9 प्रभावित महिलाएं अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। आपको चाहिए कि आप इन्हीं मूलांक वाली महिलाओं से मित्रता इत्यादि रखें, या ऐसी महिलाएं जिनका जन्म किसी भी मास की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसी महिलाएं हमेशा आपके अनुकूल रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपको अपने वस्त्रों का चुनाव करते समय सफेद, काफूरी, हरा एवं अंगूरी रंगों का उपयोग अधिक मात्रा में करने पर वांछित लाभ प्राप्त होंगे। हो सके तो आप अपने कमरे के पर्दे, चादर, तकिया इत्यादि में इन रंगों का इस्तेमाल कर सकते हैं। इन रंगों का रुमाल तो हमेशा अपने पास रखना आपके लिए विशेष लाभप्रद रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उत्तर-पश्चिम में वायव्य कोण स्थान में रहना शुभ रहेगा। जिस क्षेत्र में आप रहते हों, यदि वह वायव्य कोण में स्थित होगा तो अधिक अनुकूल रहेगा। मकान के नंबर का योग यदि 2, 7, या 9 आता हो तो ऐसा भवन आपके लिए अधिक सुविधाजनक रहेगा।

शुभ वाहन नं

आपके वाहन के पंजीकरण हेतु अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना अच्छा रहेगा। आपका मूलांक 2 होने से आपके शुभ अंक 2, 7, 9 रहेंगे। यहां आपके वाहन इत्यादि के पंजीकरण क्रमांक के शुभ अंक भी रहेंगे, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5231=2 इत्यादि। यात्रा के वाहनों में भी इन अंकों का उपयोग करें, जिसके फलस्वरूप आपकी यात्रा सुखमय रहेगी। अगर आप होटल आदि में कमरा इत्यादि लेते हैं तो उसके लिए भी यही नंबर 2, 7, 9 इत्यादि लें, जैसे कमरा 101 = 2। तभी आपके लिए वह कमरा अच्छा साबित होगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको कमजोरी, क्षीणता, उद्वेग, मस्तक पीड़ा, छोटी-छोटी दुर्घटना, हृदय रोग, संवेदनशीलता, भावुकता, स्नायु दुर्बलता, कब्ज, आंत रोग, मूत्र रोग, गैस रोग इत्यादि होंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शिव उपासना पर बल देना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए रोजगार-व्यापार हेतु ये क्षेत्र अनुकूल रहेंगे, जैसे द्रव्य पदार्थ, तैलीय कार्य, समुद्र यात्रा, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, पशु व्यवसाय, चीनी मिल, अन्न का व्यवसाय, तैराकी, रसपूर्ण पदार्थ, दूध, दही, घृत, कागज, जल, कृषि एवं चीनी के व्यवसाय एवं औषधि विक्रेता, भ्रमण कार्य, एजेंट, प्रतिनिधित्व, संपादन, लेखन, संगीत, अभिनय, नृत्य, भूप्रबंध, मकानों की ठेकेदारी, चिकित्सा, मोती, हार, मणि, माणिक्य, रत्न इत्यादि का क्रय विक्रय, पत्थर व भूगर्भ इत्यादि के कार्य।

व्रतोपवास

जिस दिन सोमवार को चित्रा नक्षत्र हो उस दिन से चंद्रमा का व्रत प्रारम्भ करें। विधान के अनुसार 54 सोमवार तक अथवा न्यूनतम सात सोमवार व्रत आवश्यक है। व्रत के

दिन श्वेत वस्त्र धारण करें एवं श्वेत वस्तुओं का दान करें तथा चंद्रमा के मंत्र का यथा शक्ति, मोती की माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

पांच रत्ती मोती आपके लिए प्रमुख रत्न है। यदि आप मोती धारण ना कर सकें तो मूनस्टोन, चंद्रमणि, दूधिया हकीक, सोमवार की सुबह दायें हाथ की कनिष्ठा अंगुलि में, चांदी की अंगूठी में जड़वा कर लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में धारण करें।

अनुकूल देवता

आप चंद्रोपासना करें अथवा भगवान शिव की आराधना करें। भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र ओम् नमः शिवाय का नित्य जप करें। प्रति सोमवार को कम से कम इक्कीस या एक सौ आठ बेल पत्र भगवान शिव को अर्पित करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों से समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान शिव के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपको चंद्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु चंद्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

चंद्र गायत्री मंत्र - अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात् ॥

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप चंद्र का ध्यान करें, मन में चंद्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्यव संभवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोमुकुटभूषणम् ॥

ग्रह जप मंत्र

अशुभ चंद्र को अनुकूल बनाने हेतु चंद्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ॐ श्रौं श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः ॥ जप संख्या 13000 ॥

वनस्पति धारण

आप सोमवार के दिन एक इंच लंबी खिरनी की जड़ ला कर, सफेद ऊन के धागे में लपेट कर, गले या दाहिने हाथ में बांधे, स्वर्ण या तांबे ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे चंद्र ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वनस्पति स्नान

आपके प्रत्येक सोमवार को एक बाल्टी या बर्तन में पंच गव्य-चांदी, मोती, शंख, सीप और कुमुद आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ चंद्र का प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

चंद्र की शांति हेतु योग्य व्यक्ति के लिए चंद्र के पदार्थ, चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चांदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चंदन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दधि, मोती आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

चंद्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु चंद्र यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, चांदी की जंजीर या लाल धागे में, सोमवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न फल

आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में मकर लग्न में हुआ था। ज्योतिषीय आकृति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर मकर लग्न के साथ-साथ कन्या राशि का नवमांश एवं कन्या राशि का द्रेष्काण भी उदित था। इस संबंधित लग्नादि संयोजनों से ऐसा दृश्य हो रहा है कि आप पर्याप्त साधन संग्रह करने के मामले में बहुत बड़े भाग्यशाली प्राणी हैं। परंतु आपके लिए यह निर्देश अत्यंत ग्राह्यनीय है कि आपकी मनोवृत्ति यह हो सकता है कि शीघ्रतापूर्वक धनी बनने के लिए जूआ, सट्टा आदि खेल कर सफलता पूर्वक धनवान बन सकता हूं। परंतु उत्तम तो यह है कि आप अपनी इस मनोवृत्ति को इस भावना के प्रति मोड़ दे। तथापि आप यदा-कदा लाटरी का टिकट खरीद कर कुछ लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

आप किसी भी विषय को सुदृढ़तापूर्वक समझ जाते हैं। आप अपने लक्ष्य को निर्देश अनुसार प्रेरित होकर किसी भी कार्य कलाप के पीछे साहस पूर्वक दृढ़ संकल्पित होकर संलग्न हो जाते हैं। आपमें ऐसी क्षमता है कि आप स्पष्ट रूप से विचार कर के अपनी कार्य योजना की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं तथा किसी भी प्रकार की भूमिका की सफलता प्राप्ति हेतु छलांग लगाकर प्रयास नहीं करते हैं।

आप सपत्नीक किसी कार्य को विवेकपूर्वक करके अपने कार्य-कलाप की सफलता प्राप्ति हेतु सक्षम हैं। आप अपने जीवन के उत्तम समयावधि में सुमधुर समय पर सावधानी पूर्वक लाभांशित हो सकते हैं। जब आपकी आयु 15 वें वर्ष से 23 वर्ष के मध्य एवं 29 वें वर्ष तक की होगी। वह समय आपके लिए भाग्यशाली प्रमाणित होगा।

इन तीन वर्षों के अंतर्गत आप अपनी संतुष्टि हेतु किसी प्रकार का अनैतिक एवं दुःसाहसिक कार्य न करें। आप इस समय सहजता पूर्वक सुखी एवं संतुष्ट हो जाएंगे।

आप अपने लिए कार्य व्यवसायों में जनरलिस्ट एवं संचार मिडिया का कार्य धर्म एवं दर्शन के कार्य, पुलिस, प्रतिरक्षा की सेवा, खनिज व्यवसाय, चर्मोद्योग कृषि कार्य एवं सामान्य औद्योगिक प्रतिष्ठान की स्थापना आदि कार्यों में से अपनी इच्छानुसार किसी भी कार्य व्यवसाय का चयन कर सकते हैं।

आपमें विद्वेष एवं उच्चाकांक्षा रहती है, जो क्षणिक कार्यकलाप का घोटक है। आप अपने परिवार से अत्यधिक संबद्ध रहने वाले प्राणी हैं। आप अपनी पत्नी एवं बच्चों के प्रति श्रद्धावान होंगे।

उन लोगों की मनोवृत्ति आपसे अधिक आदान-प्रदान करने की रहती है, वे अधिक मात्रा में आपसे अपेक्षा करते हैं। इन बातों को आप महसूस करते हैं। सामान्यतः आप अपने पिता (अभिभावक) भाई एवं बहनों के प्रति बहुत स्नेहशील रहने वाले व्यक्ति होंगे।

आपको अपने जीवन में संगीत कला अर्थात् गायन-वादन से युक्त रहना एक अच्छा आनंददायक माहौल रहेगा। आपके बहुत मित्रगण होंगे, जो आपके साथ अपना

आनंददायक समय व्यतीत करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परंतु अधिक उम्र में ऐसे अवसर आ सकते हैं। जिस समय आपको हृदय संबंधी समस्याएं मूर्छा (बेहोशी) लगातार कफ-सर्दी, जुकाम आदि रोग से आक्रांत हो जाएं। अतः आप समय-समय पर चिकित्सक से जांच-पड़ताल कराते रहें।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग, सफेद, काला, लाल एवं नीला रंग उत्तम है। परंतु आपके लिए क्रीम एवं पीला रंग अनुपयुक्त एवं अव्यवहारणीय है।

आपके लिए अंकों में अनुकूल एवं निर्भरात्मक अंक 6, 8 एवं 9 अंक लाभदायक प्रमाणित होगा। जबकि आपके लिए अंक 3 सर्वथा त्याज्य एवं अव्यवहारणीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन शुभ दर्शनीय एवं महत्वपूर्ण कार्य संपादन हेतु अनुकूल है। परंतु रविवार, सोमवार एवं गुरुवार का दिन आपके लिए अनुपयुक्त है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराकमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभान्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढ़ाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोड़कर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप

हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, क्रोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान्, बलवान् शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा आपको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संहि, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान्, बुद्धिमान्, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान् एवं सन्तोषी होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराकमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान्, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। ये विचारशीलता एवं गंभीरता के भाव से युक्त रहते हैं तथा अत्यंत ही परिश्रमी एवं कार्यशील होते हैं फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता अद्वितीय होती है तथा यही गुण जीवन में इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा परायणता का भाव भी रहता है तथा देश एवं समाज सेवा के कार्यों में प्रवृत्त रहते हैं। ये साहसी एवं निर्भीक होते हैं तथापि मन में यदा कदा उदासीनता की भावना विद्यमान रहती है जिससे सुख में खुशी तथा दुःख में कष्ट की अनुभूति कम होती है। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण कम ही रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के ये इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये अनुसन्धान, विज्ञान एवं शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में आदरणीय रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ एवं बलवान व्यक्ति होंगे आपमें आदर्शवादिता का भाव भी होगा तथा अपने आदर्शों पर स्वतंत्र रूप से विचार करेंगे। साथ ही आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगे तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्द्वियों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव रहेगा फलतः वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अतः सदगुणों से सभी लोगों के मध्य आप आदरणीय रहेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे फलतः आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप रहेगी। कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपकी कर्तव्य परायणता तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी वर्ग या सहयोगी सन्तुष्ट होंगे। फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा परस्पर सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। उत्तम कार्यों को करने में भी आप रुचिशील होंगे फलतः समाज में एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी छवि रहेगी।

स्वव्यवसाय के प्रति आपकी इच्छा होगी तथा इसको सम्पन्न करके इसमें आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति मिलेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी उत्तम रहेगी जिससे धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे। साथ ही सुख संसाधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करेंगे। इससे लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे परन्तु यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्य कलाप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार परिश्रमी एवं

पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुराईयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगे। साथ ही आप एक स्पष्ट वक्ता होंगे तथा जो कुछ भी मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगे। आपकी प्रवृत्ति निस्वार्थी रहेगी तथा इसी भाव से आपके सांसारिक कार्य कलाप सम्पन्न होंगे परन्तु अन्य जनों की बातों से आप शीघ्र ही सहमत हो जाएंगे इससे यदा कदा अनावश्यक परेशानियां भी हो सकती हैं। आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार के प्रति आपका अत्यधिक लगाव रहेगा। साथ ही घर को भी आप हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पसंद करेंगे।

आप परिवार के ओर से सर्वदा चिन्तित रहेंगे तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से पारिवारिक सदस्यों से जुड़े रहेंगे। आप किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगे तथा अनावश्यक चंचलता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी। आपकी वाणी मधुर रहेगी तथा अन्य लोग वाणी से पूर्ण प्रभावित रहेंगे तथा आप स्पष्ट रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे। आपको विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना प्रिय लगेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा पारिवारिक जनों के साथ धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहेंगे इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित धनार्जन करेंगे तथा सज्जनों एवं महात्माओं का आदर सत्कार करते रहेंगे। साथ ही अवसरानुकूल परोपकार संबंधी कार्यों को भी आप सम्पन्न करते रहेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा स्मृति भी तीव्र होगी एवं गहन से गहन विषय को भी स्मरण रखने में समर्थ रहेंगे। आप दर्शन शास्त्र, विज्ञान में उच्चशिक्षा या शोध कार्य के प्रति रुचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में यत्नपूर्वक सफलताएं अर्जित करते रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके प्रति वे आज़ाकारी कर्तव्य परायण तथा सहानुभूति से युक्त रहेंगे तथा उन्नति के क्षेत्र में आपका परस्पर सहयोग रहेगा। लेकिन यदा कदा वैचारिक मतभेद हो सकता है फिर भी पारिवारिक शान्ति एवं प्रसन्नता के लिए एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आपमें नेतृत्व के गुण विद्यमान रहेंगे अतः सामाजिक मान सम्मान तथा ख्याति समय समय पर प्राप्त होती रहेगी। साथ ही परिवार का स्तर बढ़ाने में भी प्रयत्नशील रहेंगे। आप में संगठन शक्ति भी रहेगी तथा किसी भी कार्य को लाभदायक देखकर आप तुरंत ही उस कार्य को करने के लिए तत्पर हो जाएंगे तथा भौतिकता की प्राप्ति के लिए किसी भी वस्तु का सदुपयोग करने में समर्थ रहेंगे। संचार साधन टेलीफोन, टेलीविजन या वाहन आदि से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा कला में भी रिक्त समय प्रदान करेंगे। साथ ही दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ प्राप्त होता रहेगा। आप धार्मिक, सूचना संबंधी लेख या अच्छी पुस्तकों को पढ़ने के शौकीन रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धनवान, पुण्यात्मा, अतिथि सेवक तथा सर्वजनों के प्रिय होकर सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। आप सांसारिक सुखों को अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगे। लेकिन सुखों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इनमें विलम्ब भी होगा। लेकिन आप परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति है। अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर होंगे।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपको मिल सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समय समय पर धन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको कोई भी संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के भी योग बनेंगे।

आपका आवास स्थान मध्यम होगा परंतु आवश्यक सुख-सुविधाओं से भी सुसज्जित होगा। घर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से इच्छुक होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगे तथा संबंधों में औपचारिकता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें अनुकूलता आएगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकतवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे परंतु आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं से आप स्वपरिश्रम से कुछ अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे परंतु स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तथा केतु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप समान्यतया एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने अधिकांश कार्य-कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करके उनमें यथोचित सफलताएं अर्जित करेंगे परन्तु आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की क्षमता में अल्पता होगी फलतः विशिष्ट अवसरों पर वांछित लाभ एवं सफलता अर्जित करने से वंचित रह जायेंगे। आपको तात्कालिक समस्याओं का समाधान करने में भी काफी असुविधा का सामना करना पड़ेगा। अतः आपको महत्वपूर्ण निर्णय अत्यन्त ही सोच-समझ कर लेने चाहिए। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म में आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान साहित्य एवं पाश्चात्य साहित्य में आपकी विशेष रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इन क्षेत्रों में ज्ञानार्जन करने में तत्पर होंगे।

पंचमभाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा ऐसे प्रसंग स्थापित करके आप मनोरंजन एवं दिल-बहलाने की कोशिश करेंगे परन्तु यदि आप प्रेम के क्षेत्र में मर्यादा, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण नहीं अपनाएंगे तो इससे आपको अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा एवं आपको समाजिक सम्मान भी प्रभावित हो सकता है। अतः ऐसी स्थिति की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

संतति भाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपको पुत्र संतति की प्राप्ति में विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा लेकिन संतति प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं व्यवहार कुशल होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी। माता-पिता के प्रति उनका सामान्य आदर भाव होगा तथा स्वच्छन्द प्रवृत्ति होने के कारण शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अपनी ही इच्छा से सम्पन्न करेंगे तथा माता-पिता की सलाह एवं सहयोग कम ही लेंगे। उनमें आज्ञापालन के भाव की भी कमी होगी परन्तु आपको उनके विषय में विशेष चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि वे व्यवहार कुशल होंगे तथा अपनी आजीविका अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप भी वृद्धावस्था में यथोचित मात्रा में धन संग्रह करके रखें तथा बच्चों पर निर्भर न रहें तभी आप शान्ति पूर्वक रह सकते हैं।

विद्याध्ययन में वे अत्यधिक परिश्रम से ही सफलताएं प्राप्त करेंगे यद्यपि आप अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं रखेंगे तथा आधुनिक संस्थाओं में उन्हें शिक्षा प्रदान करालेंगे तथापि वे अपनी निपुणता पराक्रमी तथा व्यावहारिकता से वांछित धन ऐश्वर्य अर्जित करके आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे लेकिन तेजस्वी प्रवृत्ति होने के कारण यदा-कदा अन्य जनों से उनका विवाद होता रहेगा। जिससे आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। अतः बच्चों का सुख आप मध्यम रूप से ही प्राप्त करेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप को रक्त सम्बन्धियों तथा घनिष्ठ मित्रों से विरोध का सामना करना पड़ेगा। आपके शत्रु वर्ग उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति भी होंगे तथा समाज में कई क्षेत्रों में आपके शत्रु या विरोधी विद्यमान रहेंगे। वे आपकी प्रसिद्धि को पसन्द नहीं करेंगे तथा आपकी वैभवशालीनता को देखकर मन में ईर्ष्या का भाव रखेंगे। साथ ही वे समाज में मान हानि तथा अन्य प्रकार से आर्थिक हानि करने के लिए तत्पर रहेंगे। परन्तु आप एक बुद्धिमान चतुर प्रतिभाशाली तथा ईमानदार व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्यकलापों से शत्रु एवं विरोधी पक्ष को पराजित करने में समर्थ रहेंगे तथा अपनी समस्याओं तथा परेशानियों का समाधान करेंगे।

आप दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में भी लिप्त रहेंगे। इस कार्य को आपको चतुराई से करना चाहिए अन्यथा आर्थिक हानि की संभावना रहेगी। चूँकि आप अपने ही तरीके से किसी भी कार्य को क्रियान्वित करते हैं तथा दूसरों को इसमें कोई महत्व नहीं देंगे तथापि अन्त में आपको इनमें सफलता मिलेगी तथा ख्याति भी अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपके सेवक अच्छे होंगे तथा आपकी ईमानदारी से सेवा करेंगे साथ ही आपके आज्ञाकारी भी होंगे लेकिन यदा कदा वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य लोगों के समक्ष उजागर करेंगे जिससे आपकी मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः सेवक वर्ग के सम्मुख व्यक्तिगत मतभेदों को गुप्त ही रखें क्योंकि वे उनकी प्रवृत्ति बातूनी होगी। साथ ही नौकरों की पहुँच से कीमती सामान भी दूर रखें।

कई बार आप भौतिक उपकरणों तथा आराम पर अनावश्यक रूप से अधिक व्यय कर देंगे फलतः आपको ऋण आदि लेना पड़ेगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको उपेक्षा करनी चाहिए। आपके मामा मामी तथा अन्य संबन्धी आपके लिए अनुकूल रहेंगे। आपकी मामी कोधी स्वभाव की होंगी तथा सामान्यतया अस्वस्थ रहेंगी। लेकिन मामा से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आपको वे आवश्यकतानुसार इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। वृद्धावस्था में चिन्ता या रक्त चाप संबन्धी परेशानी भी हो सकती है अतः युवास्था से ही खान पान पर नियंत्रण रखना चाहिए।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा चन्द्रमा भी स्वराशि में स्थित होकर सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति जातक का सहयोगी सुशील चंचल बुद्धिमान और धनाढ्य होता है तथा चन्द्रमा के प्रभाव से वह शिक्षित विनम्र विद्वान कला एवं संगीत प्रिय होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की बुद्धिमती महिला होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। स्वभाव से वह यदा कदा चंचलता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। सुंदरता के प्रति उनके मन में आकर्षण होगा तथा कला के प्रति भी रुचि का प्रदर्शन करेंगी। स्वराशिस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से वह एक कर्तव्य परायण महिला होंगी तथा परिवार एवं समाज के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना की दृष्टि से वह आकर्षक होंगी तथा शरीर के सभी अंग पुष्ट एवं सुडौल होंगे। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग करेंगी। चन्द्रमा के प्रभाव से आयु के साथ साथ उनके शरीर में स्थूलता भी आ सकती है। अतः इसके लिए पहले से ही सतर्क रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त साहित्य एवं कला में भी वे रुचिशील होंगी तथा इस क्षेत्र में सफलताएं अर्जित करने में समर्थ होंगी।

सप्तम भाव में चन्द्रमा के प्रभाव से आपका विवाह किसी भी संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा इसमें भी महिला संबंधी का मुख्य योगदान होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा परस्पर प्रेम एवं आकर्षण का भाव होगा सांसारिक महत्व के कार्यों को आप दोनों आपसी सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे जिससे समानता एवं विश्वास का भाव बना रहेगा। इस प्रकार दाम्पत्य संबंधों में मधुरता रहेगी तथा जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा। में विवाह के बाद सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे यथोचित सम्मान एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी उन्हें उचित सम्मान प्रदान करेंगे तथा महत्वपूर्ण कार्यों में उनसे नैतिक सहयोग तथा सलाह लेंगे इससे आपसी संबंधों में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का पूर्ण सेवा एवं श्रद्धा का भाव होगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा करेंगी एवं अपने ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगी देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार तथा मृदुवाणी से प्रसन्न रखेंगी एवं वे भी उन्हें वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा साझेदारी

से पूर्ण लाभ तथा उन्नति होगी। यदि महिला साझेदार के साथ कार्य किया जाए तो उसमें वांछित सफलता मिलेगी एवं आपस में विश्वास का भाव भी बना रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म या ज्योतिष आदि विषयों में श्रद्धा रखेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही इन विषयों में शोध कार्य करने के लिए भी तत्पर होंगे फलतः इस क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सफलता प्राप्त होगी एवं आपका अधिक से अधिक समय इस पर व्यतीत होगा। आपके पास अपनी सम्पत्ति रहेगी तथा पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होगी। अतः आपके पास विस्तृत भूमि तथा कई आवास स्थल हो सकते हैं। साथ ही जमीन जायदाद संबंधी कार्य से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी हो सकता है। इस प्रकार चल अचल सम्पत्ति के स्वामी होकर समाज में आप आदरणीय समझे जाएंगे।

यद्यपि शादी के समय स्वयं किसी प्रकार के दहेज की मांग नहीं करेंगे परन्तु आपके ससुराल के लोग आपसे अत्यंत प्रभावित रहेंगे तथा आपको कुछ न कुछ धन उपहार स्वरूप आभूषण आदि अन्य बहुमूल्य वस्तुएं भेंट करेंगे जो आप मना नहीं कर पाएंगे। यह दहेज आपके दाम्पत्य जीवन के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होगा। साथ ही बीमा आदि से भी आपको समय समय पर न्यूनाधिक मात्रा में लाभ होता रहेगा। अतः आप अपना तथा अपनी बहुमूल्य वस्तुओं का बीमा कर सकते हैं। यह बीमा आपका सुरक्षित पूंजी निवेश होगा तथा इससे आपको उचित लाभ मिलेगा। आपकी कुंडली में कोई विशेष चोरी या दुर्घटना का योग नहीं है लेकिन यदि कोई ऐसी घटना होती है तो उससे कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आदर्श एवं दयालु प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों का पालन करेंगे। साथ ही ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा। धार्मिक प्रवृत्तियों का भी अनुपालन करेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में मन्दिर या तीर्थ स्थानों में जाएंगे। आप उपवास आदि भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। धर्म गुरुओं एवं महात्माओं का आप हार्दिक सत्कार करेंगे तथा धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करने में भी तत्पर रहेंगे।

आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी। अतः भविष्य वाणियां करने में भी आप समर्थ हो सकते हैं। आप आध्यात्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा के लिए तत्पर रहेंगे। आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए आप सामूहिक रूप से लोगों को संबोधित करेंगे तथा इसमें आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही भजन कीर्तन या अन्य कार्यकलापों को भी सम्पन्न करेंगे। आपकी व्यक्तिगत कार्यों की सिद्धि तथा इच्छित लाभार्जन के लिए लम्बी दूरी की यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा अपने धर्म के पवित्र ग्रंथों का भी अध्ययन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति उदार रहेगी तथा दीन दुःखियों की सेवा कार्य करने में तत्पर रहेंगे तथा दान आदि कार्य भी सम्पन्न करेंगे परन्तु ये सब कार्य आप धन की अपेक्षा तन मन से करना अधिक पसंद करेंगे। आपको पौत्र सुख प्राप्त होगा तथा वे आपको अपना पूर्ण सहयोग तथा सुख प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अपना दैनिक पूजन नित्य सम्पन्न करेंगे तथा मध्यआयु में आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। पूजा या ध्यान करने से आपको शान्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होगी तथा जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तुला राशि वायुतत्व युक्त राशि है अतः उसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही इसमें आप समय समय पर परिवर्तन भी करते रहेंगे तथा ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होगा तथापि अधिक परिवर्तनशीलता की आपको उपेक्षा करनी चाहिए।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र कला संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रॉनिक्स, फिल्म निर्देशन, कम्प्यूटर, एयर लाइंस आदि विभाग शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इनमें कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा आपका भविष्य उज्ज्वल रहेगा। साथ ही उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का भी सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त विभागों में ही कार्य का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सोना, चांदी, हीरा आदि धातु एवं रत्नकार्य, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, सौन्दर्य प्रसाधन एवं आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, रेशमी या मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार या आयात निर्यात, कीमती मदिरा, इलैक्ट्रॉनिक्स या कम्प्यूटर कनसलटेंसी एवं फिल्म निर्माण आदि के कार्य में भी आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ भी अर्जित होगा। अतः उपरोक्त वस्तुओं या क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करें।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में भी आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था के सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी हो सकते हैं एवं क्लबों आदि में भी आप आदर की दृष्टि से देखे जाएंगे। अतः अपनी उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता शिक्षित बुद्धिमान प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगे जिससे उन्हें सामाजिक सम्मान की प्राप्ति होगी। आपकी उच्च शिक्षा के प्रति वे पूर्ण जागृत होंगे तथा इसका उच्चस्तर पर प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाएं। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशिष्ट योगदान होगा। आप भी स्वपरिश्रम एवं योग्यता से प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृत्ति किसी भी क्षेत्र में अन्त तक संघर्ष करने की रहेगी जब तक की आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति न हो जाये। आप अपनी इसी संघर्षशील प्रवृत्ति तथा पराक्रम से जीवन में अधिकांशरूप से अपनी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे इस प्रकार आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से ही जीवन में उन्नति करेंगे तथा किसी अन्य के सहयोग की अल्पता रहेगी।

आर्थिक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए आप सौभाग्यशाली रहेंगे। आप होटल व्यवसाय, सोने सुनारी का व्यवसाय अथवा भाइयों के द्वारा जीवन में लाभ अर्जित कर सकते हैं। इनसे आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करके धनऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगे। बड़े भाइयों का आपको पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा तथा जीवन में समय समय पर वे आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप पराक्रमी, सक्रिय, बुद्धिमान एवं शिक्षित लोगों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगे। यद्यपि आपकी प्रवृत्ति स्वच्छन्द रहेंगी तथापि अन्य जनों के साथ मिल कर कार्य करना पसन्द करेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र या समाज में एक प्रतिष्ठित पुरुष होंगे तथा सभी लोग आपको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अन्य जनों की सेवा तथा परोपकार संबंधी कार्यों को सम्पन्न करने में भी तन मन धन से अपना योगदान प्रदान करेंगे। लेकिन मूलतः व्यापारी वर्ग से आपको विशेष सामाजिक संबध बने रहेंगे। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में नाम, मान, सम्मान ख्याति तथा धन अर्जित करने के लिए सर्वदा इच्छुक रहेंगे। इसके लिए चाहे आपको कितना ही परिश्रम एवं संघर्ष क्यों न करना पड़े लेकिन आप निरन्तर अपने उद्देश्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहेंगे तथा इसमें आप किसी भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगे। आप धन के महत्व को जानेंगे अतः इसका अत्यंत सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक उपयोग करेंगे। साथ ही धन के विषय में आप कोई भी खतरा उठाना पसन्द नहीं करेंगे। अर्जित धन से भविष्य में लाभ किस प्रकार प्राप्त किया जाता है इसको भी आप अच्छी तरह जानते हैं अतः इसका सदुपयोग किसी आदर्श कार्य या बड़ी कम्पनी में पूंजीनिवेश के रूप में करेंगे साथ ही जायदाद संबंधी कय विकय पर भी व्यय कर सकते हैं आपकी प्रवृत्ति धार्मिक होगी। अतः धार्मिक कार्य कलापों दान तथा दीन जनों की भलाई पर भी समय समय पर व्यय होता रहेगा। आप मध्यम अवस्था में धनवान बनेंगे तथा सर्वत्र आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। साथ ही अपनी दानशीलता तथा दयालुता के कारण भी आपको प्रसिद्धि प्राप्त होगी यदा कदा आवास की साज सज्जा तथा अन्य भौतिक उपकरणों पर भी व्यय करेंगे।

आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेंगी तथा इनमें व्यय के साथ आपको लाभ या सम्मान भी प्राप्त होगा। आप व्यापारिक या अन्य कार्यों से विदेश संबंधी यात्रा भी करेंगे जिससे आपको यथोचित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आप सामान्यतया सुखी ही रहेंगे।

नक्षत्रफल

आप पुष्य नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी मध्य, देव गण, वर्ण विप्र, वर्ग मेष तथा योनि मेष होगी। नक्षत्र के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "हो" अक्षर से होगा।

आप अपने जीवन में देवार्चन से प्राप्त धन से युक्त रहेंगे। आप अत्यन्त ही बुद्धिमान होंगे तथा बुद्धिमतापूर्ण ढंग से अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों को आप जानने वाले होंगे। आप देखने में सुन्दर रूपवान तथा जीवन में समस्त सुखों के उपभोग कर्ता होंगे। साथ ही आप सभी लोगों के स्नेह पात्र या प्रिय भी रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप की कफ से युक्त प्रकृति होगी।

देवकर्म धनैर्युक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः।

पुष्ये जायते लोकः शीतश्च सुभगः सुखीः।।

जातक दीपिका

अर्थात् पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवार्चन से प्राप्त धन से युक्त, बुद्धिमान, कफ प्रकृति तथा सुख से परिपूर्ण होता है।

धार्मिकता के भाव से आप नैसर्गिक रूप से युक्त रहेंगे। ईश्वर में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा शान्तचितवृत्ति से ही अपने कार्य कलापों को सुसम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आप पुत्र संतति से भी युक्त रहेंगे जिनकी संख्या अल्प रहेगी।

देवधर्म धनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः।

पुष्ये जायते लोके शान्तात्मा सुभगः सुखीः।।

मानसागरी

अर्थात् पुष्य नक्षत्र का पुरुष देवता तथा धर्म को मानने वाला, धन से युक्त, पुत्रयुक्त, विद्वान्, शान्त, सुन्दर तथा सुखी होता है।

ब्राह्मण तथा देवताओं के आप अनन्य भक्त रहेंगे। इनके प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा आदर का भाव विद्यमान रहेगा। धन का आपको जीवन में कम ही अभाव रहेगा। आप राज्य अर्थात् उच्चाधिकारी या मंत्रियों के प्रिय रहेंगे तथा इनसे पूर्ण सम्मान तथा सहयोग को प्राप्त करेंगे। साथ ही आप बंधुवर्ग के भी हितैषी रहेंगे तथा उनसे भी सहयोग प्राप्त करते रहेंगे।

शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंभृतः पुष्ये।

बृहज्जातकम्

अर्थात् पुष्य नक्षत्र का बालक हृदय से शान्त प्रकृति वाला, सर्वप्रिय, सुन्दर, विद्वान् धन से सम्पन्न तथा धर्माचरण में तत्पर रहता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शरीर आपका सुन्दर दर्शनीय तथा सामान्य रूप से स्वस्थ रहेगा एवं सामान्य तथा रोगों का भी अभाव रहेगा। माता पिता के प्रति आपका पूर्ण सेवा तथा श्रद्धा भाव रहेगा तथा नित्य उनकी सेवा करने में यत्नशील रहेंगे। धर्म के अनुसार भी आप कार्य सम्पन्न करते रहेंगे एवं समाज में आप विनयशील स्वभाव के माने जाएंगे। समाज से आपको पूर्ण मान तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही आप नाना प्रकार के धन वाहनादि से भी युक्त रहेंगे।

**प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः ।
भवेन्मनुष्यः खलु पुण्यजन्मा सम्माननानाधनवाहनाढ्यः ।
जातकाभरणम्**

अर्थात् पुण्य नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरुष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

कर्क राशि में जन्म लेने के कारण आप का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आपके समस्त कार्य चतुराई से सम्पन्न होंगे तथा समाज में आप धनाढ्य पुरुष कहलाएंगे। वीरता तथा निर्भयता के गुणों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सभी लोग न्यूनाधिक आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। धार्मिक भावना से परिपूर्ण आप जीवन में धर्मानुपालन में भी तत्पर रहेंगे। गुरुजनों के आप विशेष स्नेहपात्र होंगे तथा उनसे आपको नित्य सहयोग तथा आशीर्वाद मिलता रहेगा। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी। कभी कभी आपके मन में क्रोध के भाव की बहुलता भी दिखाई देगी तथा आप अपने को दुःखी भी अनुभव करेंगे। आपके समस्त मित्र अच्छे तथा सद्गुणों से युक्त रहेंगे। आप कई कार्यों अथवा कलाओं में भी निपुणता प्राप्त करेंगे। आपका शारीरिक बल भी मध्यम ही होगा। अपने घर से बाहर अन्यत्र स्थाई या अस्थायी रूप से रहना पसन्द करेंगे।

**कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरुवत्सलः ।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः ।।
प्रवासशीलः कोपाद्योऽबलो दुःखी सुमित्रकः ।
अनासक्तो गृहे वक्कः कर्कराशौ भवेन्नरः ।।
मानसागरी**

आप वात तथा कफ मिश्रित प्रकृति के पुरुष होंगे तथा आपका रूप भी सुन्दर एवं

अलौकिक तेज से युक्त रहेगा। आप अपने परिश्रम से अधिक मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा धनवान कहलाने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे। ब्राह्मण तथा देवताओं के आप पूर्ण भक्त होंगे तथा इनके प्रति श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रखेंगे। कुलीन जनों के प्रति आप विशेष सहयोग तथा सेवा भाव रखेंगे एवं इसको व्यावहारिक रूप में परिणित करेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः ।

स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः ।।

कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये ।

भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः ।।

जातक दीपिका

वेदादि शास्त्रों के अध्ययन में भी आपकी रुचि जागृत रहेगी तथा परिश्रम से इन के ज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। अन्य कार्यों तथा कलाओं में भी आप प्रवीण हो सकते हैं। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा तथा फूलों की सुगन्ध एवं जल विहार से आप अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। इसके अतिरिक्त आप समाज के एक ख्याति प्राप्त पुरुष भी होंगे।

शुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः ।

किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः ।

जातकाभरणम्

स्त्री के पूर्ण रूप से वश में रहेंगे। आपके पास मित्रों की बहुलता रहेगी तथा जलक्रीड़ा के आप प्रिय होंगे। आप बहुत से भवनों का निर्माण करवाएंगे या बहुत से मकानों का स्वामित्व भी प्राप्त कर सकते हैं। आपका कद समान्य होगा तथा आप वक्रगति से शीघ्र चलने वाली होंगे। साथ ही पुत्र संतति भी आपकी अल्प मात्रा में ही होगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकटिर्धनाढ्यः ।

ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोळ्प पुत्रः ।।

फल दीपिका

आप नाना प्रकार के द्रव्यों व सम्पत्तियों को प्राप्त करने वाले होंगे तथा आप ज्योतिष शास्त्र के भी ज्ञाता होंगे। आप अपने जीवन में सुख दुःख उत्थान पतन तथा उन्नति अवनति से युक्त रहेंगे। इस प्रकार चन्द्रमा की कलाओं के समान क्षयवृद्धि को प्राप्त करेंगे। आप केवल स्नेह के द्वारा ही वश में किये जा सकेंगे तथा दबाव तथा बल से आप कोई भी कार्य सम्पन्न करने को तैयार नहीं होंगे। आप मित्रों को हादिक सम्मान प्रदान करेंगे अतः मित्र वर्ग के मध्य प्रिय रहेंगे। आप जीव पालने, उद्यान बगीचों तथा जलाशय के निर्माण में सदा तत्पर एवं रुचिशील रहेंगे।

आवकद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद् ।

देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुज्यतेः चन्द्रवत् ।।

ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः ।

तोयोद्यानरतः स्ववेशमसहितै जातः शशाळङ्कैः नरः ।।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



बृहज्जातकम्

सौभाग्य हमेशा आपका साथ देगा तथा आपके समस्त कार्य चंचलता से नहीं अपितु धैर्यपूर्वक सम्पन्न होंगे एवं आप मकान के स्वामी भी होंगे। आप अपने समय को अधिकांशतः भ्रमण तथा यात्राओं में ही व्यतीत करेंगे। विनयशीलता आपके स्वभाव का प्रमुख गुण रहेगा।

आप कृतज्ञता के गुण से भी सम्पन्न रहेंगे तथा अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर उनका हार्दिक आभार मानेंगे। इसके साथ ही आप उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। आप सत्य के पालनकर्ता तथा प्रिय एवं मधुर वचन बोलने के लिए अपने समाज में प्रख्यात रहेंगे।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैर्गृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः ।

कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी । ।

सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरुचि हर्निवृद्धयानुयातः ।

प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे । ।

सारावली

देव गण में पैदा होने के कारण आपकी वाणी श्रेष्ठ तथा मधुरता से युक्त रहेगी जिसे सुनकर दूसरे लोग प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त सरल होगी तथा आप सुगमता से अपने विचारों को प्रकट करने में समर्थ रहेंगे तथा अन्य जनों के विचारों को भी सुगमतापूर्वक ग्रहण करेंगे। आप अल्प शुद्ध तथा सात्विक भोजन के प्रेमी होंगे। गुणों के विषय में आपका ज्ञान विस्तृत रहेगा तथा अपने आप भी विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

शारीरिक दृष्टि से आप सुन्दर तथा स्वस्थ चित्त रहेंगे तथा दानशीलता की प्रधानता भी आपके स्वभाव में विद्यमान रहेगी एवं समयानुसार यथा शक्ति आप इस भावना का प्रदर्शन भी करते रहेंगे। आपकी प्रकृति सादगी से पूर्ण होगी तथा दिखावटीपन तथा भौतिकता से आप दूर ही रहेंगे। इसके साथ ही आप एक श्रेष्ठ विद्वान भी हो सकते हैं।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च ।

जायते सुरगणे ङणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः । ।

जातकाभरणम्

अर्थात् देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मेष योनि में उत्पन्न होने के कारण उत्साह का भाव नैसर्गिक रूप से आपमें विद्यमान रहेगा। आप युद्धविद्या में निपुण तथा पराक्रमी होंगे तथा समाज में अपना प्रभाव प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे तथा आजीवन इनसे युक्त रहेंगे। आप हमेशा अन्य जनों के हितकार्यों को करने के लिए तन, मन, धन से तत्पर रहेंगे। जिससे समाज में आपको उचित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होगी।

**महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः ।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः ।
मानसागरी**

अर्थात् मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराकमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढ़ाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोड़कर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना

सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियां, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार तृतीय प्रहर तथा सिंह राशि का चन्द्रमा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी तक 2,7,12 तिथियों, अनुराधा नक्षत्र, व्याघातयोग तथा नागकरण में कोई भी शुभकार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कयविक्रय आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही बुधवार तृतीय प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय विल्वपत्र चढ़ाने चाहिए तथा सोमवार का उपवास भी करना चाहिए। साथ ही सफेद मोती, चांदी, सफेद वस्त्र, मिश्री चावल इत्यादि पदार्थों को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। इसके साथ ही चन्द्रमा के तांत्रिय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे अशुभ फल कम होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ॐ श्रां श्रीं श्रो सः चन्द्रमसे नमः।

मंत्र- ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उद्धृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते हैं। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता है। मातृ ऋण वाले जातक



FUTUREPOINT
Astro Solutions



के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्यमय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृ ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी पितृ ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात् दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-छीनी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर



FUTUREPOINT
Astro Solutions



काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालों की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी ईश्वरीय ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य, बेटा-बुआ आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर 100 कुत्तों को एक ही दिन में खिलाना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में तीसरे खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आपको परिवार की अधिक जिम्मेदारियों का बोझ पता चलता है और आपकी बहादुरी का आभास भी मिलता है, अर्थात् आप दूसरों की मदद जहां तक कर सकते हैं करेंगे तथा दूसरे लोगों के बर्ताव में आप जहां तक बहादुरी प्रकट करते हैं, करेंगे। आपके घर में आराम के पूरे साधन होंगे। आप उत्साही और फुर्तीले व्यक्ति हैं। आपकी दृष्टि की शक्ति अच्छी है। आप अपने घर में रखे पिस्तौल, बंदूक हथियार आदि सावधानी से रखें। आपके भाई-बंधु और रिश्तेदारों की आर्थिक दशा अच्छी रहेगी। आप अधिक धन खर्च करेंगे। आपके भाई-बहन कई होंगे। आपके साले की आर्थिक हालत अच्छी रहेगी। साले से अच्छा संबंध रहेंगे और उससे लाभ होगा। आप बाग-बगीचा और फलदार वृक्ष लगाएंगे। युवावस्था में आपको कलह से दूर रहना चाहिये। जवानी में बहुत तरक्की करेंगे। गणित और ज्योतिष विद्या में रुचि, सरकारी विभाग से लाभ, मुकद्दमें में जीत होगी।

यदि आपने परिवार वालों से झगड़ा किया, समाज में लोगों को गुमराह किया, ससुराल वालों को तंग किया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आपके घर में चोरी या बीमारी की आशंका रहेगी। आपके शत्रु भी अधिक होंगे। आपकी किस्मत में उतार-चढ़ाव भी आ सकता है। आपके घर का मुख्य दरवाजा दक्षिण दिशा होना अशुभ है। आपका धन आपकी आंखों के सामने चोरी हो सकता है। ननिहाल पर मंदा असर रहेगा। बिना लिखा-पढ़ी के आर्थिक लेन-देन से अशुभ फल होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोरी के माल से दूर रहें।
2. बुरे काम न करें।

उपाय :

1. माता-दादी का आशीर्वाद लेवें।
2. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा सातवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको सुंदर पत्नी का सुख प्राप्त होगा। आप नेता, वकील, व्यापारी बन सकते हैं। खेती की जमीन से भी लाभ मिलेगा। मध्यम पढ़ाई का योग है। आपके घर में जल तथा दूध की व्यवस्था हमेशा रहेगी। आप स्वयं लक्ष्मी अवतार होंगे। आपकी योगाभ्यास, शायरी और ज्योतिष विद्या में रुचि होगी। आप आस्तिक और ईश्वर भक्त होंगे। आप सरकारी सर्विस में होंगे तो प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। उत्तम वाहन सुख मिलेगा। दुनियादारी से मोहभंग हो जाएगा। आध्यात्म का फल श्रेष्ठ रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आप अपने पराक्रम से मिट्टी से सोने पैदा कर सकते हैं। धन-दौलत, जेवरात आदि की बरकत होगी। आपको सरकार से या किसी संस्था द्वारा सम्मान मिलेगा या आप विदेश में अधिक समय व्यतीत करेंगे। विदेश की यात्रा करेंगे। ईश्वर की भक्ति प्राप्त होगी। आपको जल से संबंधित चीजों से लाभ होगा। आप नये विषयों की खोज भी करेंगे।

यदि आपने परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, भूत-प्रेत की सिद्धि की, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया। माता या स्त्री से झगड़ा किया, 24-25 वर्ष आयु में विवाह हुआ तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से 2 वर्ष तक माता का स्वास्थ्य ढीला रहेगा या माता से अलग रहना पड़ सकता है। विवाह के बाद माता के सुख में कमी आ सकती है। माता का विरोध करना आपके लिए अशुभ होगा। आपको 24वें वर्ष में विवाह करना भावी संतान के लिए प्रतिकूल होगा। आपका चाल-चलन संदेहपूर्ण होगा। दूध और पानी को बेचने से संतान सुख में बाधा हो सकती है। आपकी पत्नी और आपकी माता का आपस में झगड़ा रहेगा, पत्नी से संबंध विच्छेद या दूरी का भय रहेगा या हो सकता है। मादक चीजों/द्रव्यों के प्रयोग से आपकी बर्बादी होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. दूध-पानी माल न बेचें।

उपाय :

1. दूध पानी का दान करें।
2. विवाह के बाद पत्नी की डोली आपके घर में आने से पहले पत्नी के वजन के बराबर चावल या दरिया का पानी कायम करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल छटे खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आपका जन्म बड़ी मिन्नतें-मन्नतें मांग कर हुआ होगा या आपके संतान देरी से पैदा होगी या बुढ़ापे में औलाद का सुख मिलेगा। आप मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। अच्छे उच्चाधिकारी होंगे। आपके भाग्य की रक्षा होगी। आप साधू-सन्यासी विचार के प्राणी हैं। आप धर्मवीर और ईश्वर पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति होंगे। आपको दूसरों से दोस्ती करना, पढ़ाई-लिखाई का काम करना, राग विद्या या अपने भाषण, प्रवचन से धन कमाना शुभ रहेगा। आपकी लेखन कला जानदार होगी। आपकी भाग्योन्नति होगी। आपकी औलाद पर किसी प्रकार का बुरा असर नहीं पड़ेगा। आप अपनी कमाई का हिस्सा छोटे भाइयों को दें तो अच्छा रहेगा। आपके दुश्मन कम होंगे या दुश्मन आप से दबे रहेंगे, ऐसी उम्मीद है। आप स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। विवाह के बाद तरक्की होगी। साहुकारी लाभ देगा।

यदि आपने भाई से शत्रुता रखी, मंदे राग गाने को शौक रखा, पशुओं से संबंधित

काम किया, परिवार में भाइयों में दूसरा नंबर हुआ तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपके भाई का नुकसान होने की आशंका है। आप शारीरिक दृष्टि से कमजोर होंगे। आपको अचानक हानि भी उठानी पड़ सकती है। संतान का सुख कम ही मिलेगा या बच्चा गोद लेना पड़ सकता है। आपकी मनोदशा दूषित रहेगी। आप खुद दुःख झेलेंगे परंतु दूसरे को तकलीफ नहीं देंगे। आपकी भाई से शत्रुता आपको हानि देगी। आपके भाई की माली हालात कमजोर होगी। आपको माता का सुख कम मिलने की शंका है। पशुओं से संबंधित व्यापार से हानि होगी। आपको सरकारी विभाग द्वारा परेशानी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. भाई से झगड़ा न करें।
2. खुशी के समय मीठा न बांटें, यदि मीठा बांटना हो तो साथ में नमक जरूर बांटें।

उपाय :

1. 9 मन (360 किलो) गेहूं हर समय घर में रखें।
2. भैंसे को चारा खिलायें या मजदूर पेशा आदमी की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप मेहनत से धन कमा कर, धनी होंगे। आप पत्नी भक्त, स्वार्थी, पुत्र सुख से वंचित तथा संगीत प्रिय हैं। धन-दौलत के मामले में आपका ससुराल पक्ष निर्बल रहेगा। आपके जीवन में राजयोग प्राप्ति के शुभ योग हैं। आपका विचार अस्थिर होता है। आप कुछ देर बाद या बातों-बातों में अपना विचार बदल लिया करते हैं। आपको कन्या संतान से अधिक सुख प्राप्त होने की संभावना है। आप ज्ञानी और उपदेशक भी हो सकते हैं। आप या आपके पिता दादा बहुत बड़े धनवान होंगे। आप स्वयं अपने भाग्य के निर्माणकर्ता हैं। आप स्वाभिमानी, परंतु संतान पक्ष से कमजोर होंगे। आपको राजपक्ष से लाभ होना संभाव्य है। आपकी आय अच्छी होगी। आप अपने जन्म स्थान से दूर निवास करेंगे। आप मतलब परस्त होंगे। आप हाजिर-जबाबी और उपयुक्त उत्तर देने वाले हैं। आप का स्वभाव योगी और राजा दोनों तरह का होगा। आपके संपर्क में जो आएगा वह लाभान्वित होगा।

यदि आपके परिवार में लड़कियां या औरतें अधिक होंगी, दुनियावी साधूओं के चक्कर में रहेंगे, जुआ-सट्टा खेलेंगे तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से पिता-सुख में अल्पता की आशंका है। आप पर लांछन लग सकता है या बदनामी भी हो सकती है। आप मांसाहारी होंगे तो यात्राएं बहुत होंगी। यात्रा से लाभ होने की उम्मीद कम है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और

उपाय करें।

परहेज :

1. तोता, भेड़-बकरी न पालें।
2. धागा-ताबीज, जल-भभूती आदि से दूर रहें।

उपाय :

1. दूध-चावल धर्म स्थान में दें।
2. फिटकरी से दांत साफ करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति नौवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनी होंगे अर्थात् बड़े भाग्यशाली होंगे। आप अपने धर्म पर अडिग और वचन के पक्के होंगे परंतु आपके जीवन में कभी भी धन की कमी महसूस नहीं होगी। आपको जौहरी या सर्राफी के काम करने से बहुत लाभ होगा। आपके घर की प्रतिष्ठा बनी रहेगी। आप तीर्थ स्थान की यात्रा के शौकीन होंगे। आप धर्मात्मा, ज्योतिषी, वैद्य, सिद्ध पुरुष होंगे। आप अपने पूर्वजों के माध्यम से प्रगति के पथ पर अग्रसर होंगे। भाग्य का श्रेष्ठ प्रभाव आपके ऊपर पड़ेगा यानि 36 वर्ष की उम्र में धन की प्राप्ति होगी। आप अच्छे, सम्मानित एवं अमीर खानदान में जन्म लेंगे। आप अपनी मेहनत से भी धन कमाएंगे। आपकी आदतें राजाओं जैसी होंगी। आप आध्यात्मिक तौर पर योगी स्वभाव के होंगे। आपकी सेहत अच्छी रहेगी। आपकी आयु के साढ़े सोलह वर्ष, 19, 33, 49 विशेष और धन प्राप्त करने वाले होंगे। आप तमाम दुनिया से लड़ कर अपनी किस्मत बना लेंगे अर्थात् आप स्वयं अपने भाग्य के निर्माता होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति को शुभ करने के लिए भाग्य पूरा साथ देगा। आपके गृहस्थ जीवन में सुख बढ़ेंगे। इसका शुभ असर पूरे परिवार पर अच्छा रहेगा।

यदि आपने धर्म छोड़ दिया या धर्म विरोधी कार्य किये, पिता से झगड़ा या विरोध किया, किया हुआ वायदा पूरा न किया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपके जीवन में बुरा समय आए उससे पहले आप दुनिया से कूच कर जाएंगे। आप अपनी औलाद से कई बार दुःखी होंगे। आपको दिल की बीमारी की आशंका है। आपका सोना गिर जाये, चोरी हो, लूटा जाये, गिरवी पड़े या बिक जाएगा, यह बहुत अशुभ लक्षण है। आलस्य करने से आपके महत्वपूर्ण कार्य अधूरे रह जाएंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. सोना गिरवी न रखें, गुम होने से बचायें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



उपाय :

1. गंगा स्नान करें (हर महीने में एक बार 9 महीने लगातार)।
2. धर्म की पालना करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपके घर में कभी चोरी नहीं होगी। आपकी पत्नी सच्चरित्र होंगी और आप स्वयं भाग्यवान रहेंगे। पत्नी जीवन भर आपका साथ निभाएगी। आप अपनी पत्नी से दब कर रहेंगे। आपकी संतान अधिक होंगी। आपको तीर्थ यात्राएं बहुत करनी पड़ेंगी। आप सभी के प्यारे होंगे। धन का व्यय अधिक करेंगे। कभी-कभी अधिक लाभ भी होगा। आपकी पत्नी आपके सभी कार्यों में हाथ बटाएंगी या पत्नी के नाम से किये कार्यों से लाभ प्राप्त होगा। स्त्री, लक्ष्मी, गाय की सेवा से अच्छा फल प्राप्त होगा। आप दूसरी औरत पर आशिक होंगे। शत्रु आपका नुकसान नहीं कर सकेगा। कोई भी औरत आप पर मोहित हो सकती है। आपको कम परिश्रम करके ही रोटी नसीब हो जाएगी। आपकी आमदनी अच्छी होगी। आप सभी सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे, परंतु सुख की नींद नहीं सो सकेंगे। माता-पिता का सुख लंबे समय तक मिलेगा। आपकी पत्नी कमाऊ होंगी जो आपके कंधे से कंधा लगाकर मुसीबत में साथ देगी।

यदि आपने एक से अधिक स्त्रियों से संबंध रखे, बुजुर्गी घर के मुख्य दरवाजे की दहलीज को नष्ट किया, राग-रंग में रुचि रखी तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपका कई स्त्रियों से संपर्क रहेगा। आप अपनी पत्नी का क्रोध एवं साहस देख कर हैरान होते होंगे। आपके जीवन में भवन सुख दूषित है। यदि मकान बनाएं भी तो वह घर उजड़ सकता है। माता के सुख में बाधा है यदि आपकी आयु के 34वें वर्ष तक मां जीवित रहेंगी तो उनकी दीर्घायु होगी। आप दुःखी लोगों और मुसीबतों से घिरे रहेंगे। धन-दौलत, उम्र बढ़ने के साथ-साथ घटती जाएगी। यदि सौतेली माता हुई तो उससे कोई लाभ नहीं होगा। ससुराल पक्ष से यदि कोई साझेदारी करें या वे लोग आपके काम में सहयोग करें तो हानि होगी। आपके भाई-बंधुओं के हाथों धन की हानि होगी। पैतृक संपत्ति आपके काम नहीं आएगी। आपके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बुजुर्गी घर की दहलीज को खराब न होने दें।
2. राग-रंग में रुचि न रखें।

उपाय :

1. स्त्री की सेवा करें।
2. मंगल की चीजों का प्रयोग करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको पैतृक संपत्ति और ससुराल से लाभ रहेगा। आप मान-प्रतिष्ठा से युक्त होंगे। आप ईश्वर भक्त और पूजा-पाठ करने वाले होंगे। आप आजन्म मुखिया बने रहेंगे। कमाई और खर्चा बराबर हो जाएगा। आप अपनी पहली कन्या का लालन-पालन ससुराल पक्ष को सौंप दें तो आपके लिए फायदेमंद होगा। आपको जीवन में जीने की इच्छा प्रबल रहेगी। आप बाहर से देखने में प्रभावशाली नहीं लगेंगे परंतु अपनी शक्ति और अक्ल में बहुत बलवान होंगे। कभी-कभी आप इस दुनिया से सन्यास लेने को भी उत्सुक हो सकते हैं। आपको माता का पूर्ण सुख मिलेगा। पिता के सुख में न्यूनता आ सकती है। आप में अक्ल की बारीकी और आध्यात्मिक शक्ति होगी। कोयला, चमड़ा, मकान-मशीनरी के कामों से अधिक लाभ होगा।

यदि आपने मादक चीजों-द्रव्यों का सेवन किया, सांप को मारा या सांप के जहर बेचने या प्रयोग करने से संबंधित कार्य किये या कानी भैंस पाली तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप विचारों के कच्चे, मुर्दादिल और पस्त हौसले वाले होंगे। 28वें 39वें वर्ष की आयु रोग और बीमारी में बीत सकती है। आपकी किसी के साथ दुश्मनी भी हो सकती है। आपका जुआं आदि खेलना आपके ससुराल के लिए बुरा हो सकता है। आपके विवाह के समय ससुराल में अग्निकांड हो सकता है। विद्या अधूरी रहे, ऐसी आशंका है। सगाई के दिन से ससुराल को हानि होना शुरू हो जायेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. माथे पर तिलक की जगह सरसों तेल न लगावें।
2. सांपों को न मारें।

उपाय :

1. नंगे पैर धर्म स्थान में जावें।
2. सांप को दूध पिलावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपका बचपन खुशहाली से बीतेगा। आपको उच्च शैक्षणिक संस्थान में विद्याध्ययन का मौका मिलेगा। आपको पिता का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप बिना माता-पिता के सहयोग के भी आगे बढ़ें रहेंगे। आप ताकतवर और न्यायप्रिय होंगे। आप अपनी कमाई पर ही जीवन बसर करेंगे। माता-पिता से मधुर संबंध में कटुता की संभावना है। विदेशी यात्रा या कार्यो द्वारा धन भी प्राप्त होगा। दूसरों पर भरोसा रखने से विश्वासघात होगा ऐसी शंका है।

यदि आपने बंदूक-पिस्तौल रखी, नीलम या नीला नग पहना, बिजली का खराब



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सामान या बिजली की तारें घर में पड़ी होगी, दराज या कैश बॉक्स खाली रखे तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके पिता को कष्ट होने की आशंका है। आपकी साढ़े दस-21-42 वर्ष आयु में पिता की मृत्यु होगी। पिता की मृत्यु गोली, जहर, ब्रेन हैमरेज से संभाव्य है। पिता की मौत के बाद बहुत क्षति होगी। आप ऐय्याश लोगों की संगति में रहेंगे, ऐसी आशंका है। अनुचित ढंग से धन कमाएंगे। आपकी परेशानी धातु संबंधी रोगों से बढ़ सकती है। आपकी संतान कमजोर और अपाहिज हो सकती है। आपकी जवानी गरीबी में कटेगी। पिता और दादा से नहीं पटेगी। आपके जन्म के पश्चात् आपके पिता की आर्थिक दशा तंग होने की संभावना है। आप काम में दक्ष होंगे और धूर्त लोग आपके साथ होंगे। फिजूल के झगड़े-फसाद होने की आशंका है। धन की हानि भी होती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. नीलम या नीला नग न पहनें।
2. घर में बंदूक/पिस्तौल न रखें।
3. बिजली का सामान ठीक रखें।

उपाय :

1. सिर पर चोटी रखें या सिर ढांप कर रखें।
2. 4 किलो सिक्के का चौरस टुकड़ा 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।
3. सिगरेट पीते हैं तो चांदी की पाइप में लगा कर पियें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पांचवे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको आकस्मिक रूप से धन प्राप्त होगी। आपको विलक्षण अतिद्विग्य शक्ति प्राप्त होगी। आप गुरु भक्त रहेंगे। 24 वर्ष की उम्र के बाद आपके जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। जीवन में 34 वर्ष आयु में पुत्र द्वारा, उसके पश्चात पौत्र द्वारा सुख प्राप्त होगा। 48 वर्ष की उम्र तक माता का सुख मिलेगा। पत्नी के साथ अच्छा संबंध रहेगा। आपके धर्म-ईमान के अनुसार ही आपकी संतान होगी। आप अपना चाल-चलन ठीक रख कर सुखी रह सकते हैं। आपकी आर्थिक हालत ठीक रहेगी। इच्छित संख्या के अनुसार संतान होगी। पुत्र संतान उत्पत्ति के पश्चात् आपकी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। यदि आप धर्माचरण करते रहें तो जीवन के अशुभ फल दूर हो जाएंगे।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया, किसी के पुत्र को या अपने पुत्र को कष्ट दिया कुत्ते को मारा या मरवाया या कुत्ता आपके वाहन से टकरा कर मर गया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 45 वर्ष तक आयु का समय बेकार रहेगा। पुत्र से कोई खास सुख प्राप्त नहीं होगा। संतान को कष्ट रहेगा। आपको श्वास संबंधी या दमे के रोग की आशंका है। 48 वर्ष की आयु का समय भी

ठीक नहीं रहेगा। सुख में कमी और बाधा उत्पन्न हो सकती है। आयु बढ़ने के साथ आप बुरे लोगों की संगति में रहेंगे। गुप्त रोग का भय, संतान को दमा रोग रहने की संभावना रहेगी। आपका पुत्र आपकी माता के लिए अशुभ रहेगा।

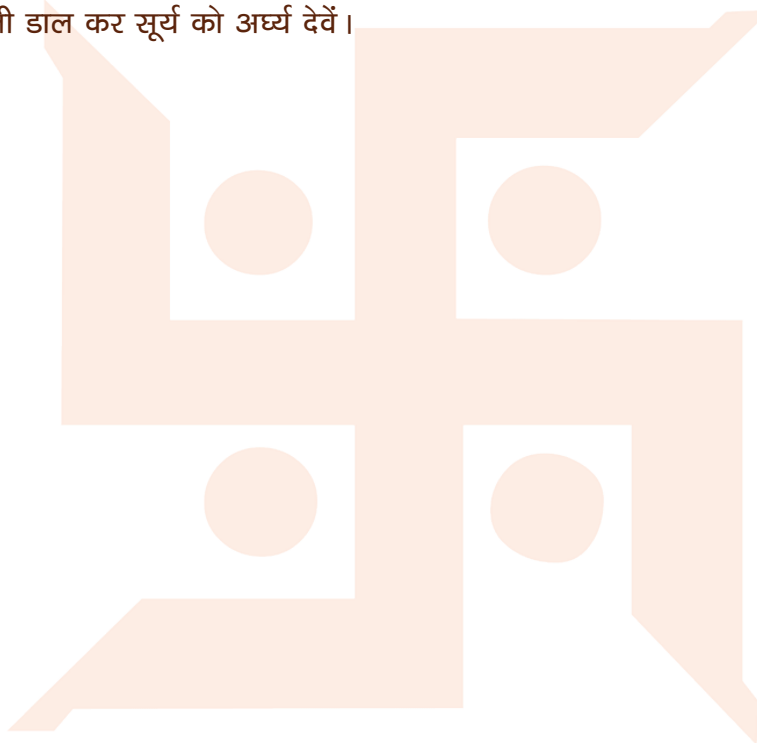
यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दुश्चरित्र लोगों की संगति न करें।
2. लोहे के संदूक में ताला लगाकर बंद न रखें। उन्हें कभी-कभी खोलते रहें।

उपाय :

1. गुरु-पिता दादा की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।
2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।
3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।
4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।
5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।
6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर दें।
7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।
8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।
9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें।
10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये।
11. बुजुर्गों के रीति-रिवाजों को न तोड़ें और संस्कार पूरे करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि तृतीय भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि छठे भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि छठे भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्य स्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

14 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बन रहे हैं। उस समय आपको अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

14 मई के बाद कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी पर आपका धन व्यय हो सकता है। किसी को ऋण न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी।

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से गर्भधान के लिए समय शुभ चल रहा है। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद आपको सामाजिक पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति

होगी। छोटे भाई-बहनों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा एवं बच्चों की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

14 मई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक रोग, सांस या पेट से संबंधित रोग हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्ति के इच्छुक विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षाधियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राएं कराते रहेंगे। नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक गतिविधियों तथा तीर्थ यात्रा के भी योग बन रहे हैं। 14 मई के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं नीली वस्तुओं का दान दें।
- माता-पिता, गुरु, साधू-संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप दुष्ट मनुष्यों की संगति को प्राप्त करेंगे तथा व्यय भी काफी होगा जिससे आर्थिक एवं मानसिक रूप से आप कष्टानुभूति होगी। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे। काफी परिश्रम के बाद भी आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अल्प सफलता ही प्राप्त कर सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राह्मणों को आप उचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। आपके मित्रों एवं सम्बन्धियों से तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे तथा नौकरी या व्यापारिक कार्यों में भी अनावश्यक रूप से बाधाएं या रुकावटें उत्पन्न होंगी। शत्रु पक्ष से भी आपके मन में भय तथा चिन्ता रहेगी तथा जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। अतः समय समय पर मन से बेचैनी भी रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त आदि से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट प्राप्त करेंगे तथा रक्तविकार का भी योग बनता है अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हो सकें तथा शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुखदायक एवं आनंदवर्द्धक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं का नाश होगा तथा लाभमार्ग भी नित्य उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे फलतः आर्थिक रूप से आप पूर्ण सुदृढ़ रहेंगे। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे। साथ ही समाजिक जनों से आप पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। यह मास आपकी भाग्योन्नति में भी सहायक रहेगा तथा कई ऐसे शुभ कार्य जो समय से सिद्ध न हो रहे हों इस समय सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्रों से संबंधों में मधुरता बढ़ेगी तथा सांसारिक कार्यों में पूर्ण सफलता मिलेगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे तथा इनसे आप अनुकूल सहयोग होता रहेगा।

साथ ही आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा सुख पूर्वक मास को व्यतीत करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

इस मास को सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। साथ ही आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेंगे। समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धुओं एवं मित्र वर्ग से आप आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा सहायता भी अर्जित करेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न का भी अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस समय शत्रु वर्ग भी आपसे भयभीत एवं चिन्तित रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यों के द्वारा भी धनार्जन होगा। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही आप स्त्री का पूर्ण सुख भी प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी उचित सहयोग तथा सहायता मिलती रहेगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाजिक जनों से भी पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम रहेगा तथा इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपको यश तथा सम्मान की भी प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में पूजा तथा सत्कार की भावना उत्पन्न होगी। आप अन्य जनों की भलाई के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं यत्नपूर्वक इसे सम्पन्न करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करके यश की प्राप्ति करेंगे। साथ ही आपकी मानप्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस मास भाइयों से आप पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे।

साथ ही अन्य शुभ फलों के प्रभाव में भी नित्य वृद्धि होती रहेगी। इससे शरीर में आरोग्यता मन में संतुष्टि एवं बुद्धि के प्रभाव में वृद्धि होगी। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक होगा एवं मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न रहेंगे।

मई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आपके लिए मिलेजुले शुभाशुभ फल होंगे। अतः शारीरिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही दुश्मनों से भी आपको भय तथा चिन्ता का वातावरण प्राप्त होगा। फलतः मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे। इस समय पारिवारिक जनों से भी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से आपसी सम्बन्धों में तनाव का वातावरण उत्पन्न होगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में इस मास हानि या मंदी आ सकती है साथ ही कोई परिवर्तन भी हो सकता है या संबधित कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य लोगों से भी आपके संबन्धों में कटुता उत्पन्न होगी। अतः सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन

की हानि होने की भी सम्भावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे जिससे आप उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त करेंगे एवं कार्यों में किंचित उन्नति का भी आभास होगा। आप इस समय दूर समीप की यात्रा भी करेंगे एवं नवीन वस्त्रादि की भी प्राप्ति होगी। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

जून 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का अभिवर्द्धन होगा तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही संतति पक्ष से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी हो सकता है। इस मास में आपका प्रभुत्व बढ़ेगा तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस माह में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों की भी प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों का आप पूर्ण सम्मान करेंगे तथा श्रद्धापूर्वक उनका पूजन भी करेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल सिद्ध होंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी एवं समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी जिससे आप मन से सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य कई प्रकार से भी आवश्यक सुखों को प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी। इस प्रकार आप इस मास को पूर्ण सुख शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों को अर्जित करेंगे। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ एवं दुर्बलता की अनुभूति करेंगे साथ ही शत्रुपक्ष से भी अनावश्यक भय एवं चिन्ता का वातावरण रहेगा जिससे मन में अशान्ति उत्पन्न होगी। इस समय आपके घर में या अन्यत्र चोरी आदि भी हो सकती है। अतः आपको चोरों से सावधान रहना चाहिए। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का उलंघन न करें अन्यथा आप दंडित भी हो सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे साथ ही धन का भी अनावश्यक व्यय होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी इस समय सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। सम्बन्धियों एवं मित्रों से भी आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा समाज से उपेक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आशाओं की पूर्ति में भी आप असफल ही रहेंगे।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे जिससे आप स्त्री से सुखी रहेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से अपने प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा एवं यत्नपूर्वक आप इसका अनुपालन करेंगे। इस प्रकार आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ एवं परेशानी उत्पन्न करने वाला होगा। इस समय आप स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं शत्रुओं की ओर से भी नित्य चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। आपके उत्साह में भी इस मास अल्पता रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक परेशानी हो सकती है। साथ ही आप शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे तथा मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। स्वबन्धुजनों से भी आपके सम्बन्धों में मधुरता का अभाव रहेगा एवं तनाव का भाव रहेगा जिससे मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे। अतः मानसिक तनाव से आप ग्रस्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाजिक जनों से विवाद या संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है अतः सावधानी पूर्वक समय अनुसार चलने का प्रयत्न करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी तथा पित्तजनित दोषों से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त सम्बन्धी विकार से भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा दुर्घटना से भी बचें। इस मास में अग्नि से भी किसी प्रकार की हानि हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया कष्टदायक रहेगा।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

सामान्य रूप से इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आप शत्रुओं से अनावश्यक रूप से भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार से चोरी आदि की घटना भी घटित हो सकती है। साथ ही आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से परेशानी का अनुभव करेंगे। धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में अल्पता आएगी तथा स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। इससे शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। साथ ही आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं। सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे एवं मुकद्दमे आदि के कार्य में भी आपका धन व्यय होगा। अतः सावधानी पूर्वक ऐसे समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री तथा पुत्र संतति से सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते हैं जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी एवं अन्य प्रकार से भी शान्ति की अनुभूति करेंगे।

अक्टूबर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्णरूपेण संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। साथ ही घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही धार्मिक क्षेत्र में

आपकी श्रद्धा में भी अभिवृद्धि होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप यथोचित सम्मान तथा पूजन करेंगे। समाज में इस समय आपके यश की वृद्धि होगी एवं भाग्योदय सम्बंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा एवं यात्रा से आप पूर्ण लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान अर्जित करेंगे। इस समय मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके सम्बन्धों में मधुरता रहेगी तथा सर्वत्र माननीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी होंगे। जिसके कारण आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं या किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी एवं बाद में आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानीपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में अर्जित करेंगे एवं अशुभ फल न्यून ही घटित होंगे। इसके प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे एवं वे सभी आपसे संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा उनसे सम्बन्ध भी मधुर रहेंगे। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा उनकी सेवा एवं पूजन के कार्य को आप अवश्य सम्पन्न करेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। साथ ही अपनी असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करके मानसिक शान्ति एवं प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभ फलदायक ही सिद्ध होगा।

साथ ही यदा कदा अशुभ फलों के प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा को आंच आएगी एवं आप उसके लिए पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा धन हानि का योग भी बनता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्व व्यतीत करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आप पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करेंगे। आपका स्वास्थ्य इस मास अच्छा रहेगा तथा किसी भी प्रकार से शारीरिक या मानसिक अस्वस्थता नहीं रहेगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रुचि बढ़ेगी तथा मित्र वर्ग से सम्बन्धों में मधुरता रहेगी एवं उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही वांछित द्रव्य पदार्थों का उपभोग करके आप प्रसन्नता को

प्राप्त करेंगे संतति पक्ष से भी आपको शुभ फल ही प्राप्त होंगे तथा किसी प्रकार से चिन्ता नहीं रहेगी। मित्रों तथा सम्बन्धियों में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित होगी। फलतः आप आनंदपूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

इसके साथ ही आप पुत्र एवं स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा विद्याध्ययन में भी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या द्रव्य आदि की भी आपको उपलब्धि हो सकती है। इस प्रकार आप शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक इस मास को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु छठे भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधिमें आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जायेगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की संभावना बनी रहेगी। द्वितीयस्थराहु के प्रभाव से धन संचित करने में बाधा उत्पन्न होगी और धनागम के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। आपको अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाना चाहिए। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

02 जून के बाद आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे जिससे आप की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों में पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कोई बड़ा निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। छठे स्थान केगुरु आपके मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध खराब कर सकते हैं।

02 जून के बाद जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप

अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। तृतीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

02 जून के बाद आपके बच्चे के लिए समय अच्छा हो रहा है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

02 जून के बाद का समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अनुकूल है। यदि कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपकी छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगापरन्तु 02 जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने

जीवनसाथी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा अर्थात् शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे अतः आप का व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति भी करेंगे। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी पूर्ण रूप से ठीक नहीं रहेगा इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य पराक्रम एवं परिश्रम के उपरान्त भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। मित्रों एवं सम्बन्धियों के मध्य आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा उनसे उचित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में भी इस मास में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा शत्रुओं से नित्य भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मिलेगी। साथ ही मन से भी अशान्त रहेंगे एवं बैचेनी की अनुभूति करेंगे।

इसके साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं उससे आपको अपेक्षित सहयोग भी प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा पूर्ण रूपेण धन लाभ तथा सुख प्राप्त करेंगे। साथ ही आप समाज में कीर्ति भी प्राप्त कर सकेंगे।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय शरीर से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा मन में सन्तुष्टि का भाव विद्यमान रहेगा। आपके पराक्रम में इस समय पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग को परास्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही आपके लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे फलतः इस मास में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे। इस मास आप भाग्योन्नति सम्बन्धी कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा ऐसे महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होंगे जिनको आप काफी समय से सिद्ध करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके दृढ़ एवं मधुर सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा सबसे आप यथोचित मान सम्मान अर्जित करेंगे। साथ ही सांसारिक कार्यों में भी आप सफलता अर्जित करेंगे राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण प्रतिष्ठा तथा आदर प्राप्त करने में सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ रहेगा।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने उत्साह द्वारा धन को अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आप अपने बन्धुओं तथा मित्रों के मध्य उचित प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा जिससे आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे। साथ ही मिष्ठानोपभोग भी आप अधिक मात्रा में करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं उनको पराजित करने में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। स्त्री से आप पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं व्यापारादि कार्यों में भी आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आपका यह मास सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

साथ ही इस मास में आप महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की भी अभिवृद्धि होगी तथा सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज एवं समाजिक जनों से पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में आपको सफलता मिलेगी।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज एवं समाजिक जनों के मध्य यशार्जन करने में भी आप समर्थ रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। साथ ही अन्य जनों का परोपकार करने के लिए भी आप उद्यत रहेंगे। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा किसी भी प्रकार से आप शारीरिक या मानसिक कष्ट प्राप्त नहीं करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनके आश्रय से समाज में ख्याति अर्जित करेंगे। मित्र एवं भाइयों से इस मास आपको उचित सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इस समय आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं जिससे आपको लाभ होगा। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र तथा द्रव्यों को भी आप प्राप्त करेंगे या इनसे युक्त होंगे। अतः यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं आनंददायक रहेगा।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ फलदायक नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शत्रु बलवान रहेंगे जिसके कारण आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही पारिवारिक जनों से सम्बन्धों में भी तनाव का वातावरण रहेगा।

जिससे परिवार में अशान्ति रहेगी। अतः मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या अजीविका संबंधी कार्यों में मंदी आएगी या आपका कोई कार्य छूट भी सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक जनों से आपका विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का योग भी बनता है एवं शरीर में कोई रोग भी हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री का आपको पूर्ण सुख मिलेगा तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा बुद्धि बल से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने के लिए उत्सुक होंगे।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस मास में आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आप अपनी बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र सुख भी आपको प्राप्त होगा। आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे। इस मास आपके शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा किसी शुभ समाचार को भी प्राप्त करेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा इनका आप यथोचित सम्मान एवं पूजन करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप यथोचित लाभ अर्जित करने में भी सफल सिद्ध होंगे एवं समाज से पूर्ण मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अतः मानसिक रूप से पूर्ण प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख अर्जित करेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से आवश्यक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में भी सफल रहेंगे। धर्मानुपालन में भी आपकी रुचि उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक कार्य कम का आयोजन करने में भी आप प्रवृत्त होंगे।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फल दायक रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी। आपके शत्रु इस समय अधिक प्रबल होंगे फलतः शत्रु पक्ष से भय तथा चिन्ता बनी रहेगी। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है। अतः सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। नौकरी या व्यवसाय में अपने उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित या जुर्माना प्राप्त कर सकते हैं। इस मास आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके साथ ही आप किसी कठोर कार्य को भी सम्पन्न कर सकते हैं। जिसका प्रभाव आपकी प्रतिष्ठा पर पड़ेगा तथा इससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी मित्रों तथा सम्बन्धियों से भी इस समय सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा आशाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त करने में भी असमर्थ रहेंगे।

साथ ही इस समय आप पित्तादि दोषों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रूधिर विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः इस मास शारीरिक सुरक्षा का भी आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए जिससे अल्प मात्रा में ही कष्ट हो।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री या बन्धु वर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा आपके बन्धु वर्ग तथा स्त्री को किसी प्रकार का कष्ट होगा। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आपको नित्य चिन्ता तथा भय बना रहेगा। आपमें इस मास उत्साह की अल्पता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी तथा अनावश्यक रूप से धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे आपके मन में लालच के भाव की भी वृद्धि होगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। बन्धु जनों से आपके सम्बन्धों में तनाव व्याप्त होगा तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आपको मानसिक रूप से असन्तुष्टि रहेगी। साथ ही अन्य पारिवारिक या समाजिक जनों से भी वादविवाद होते रहेंगे।

लेकिन इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इससे आपको स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा इनसे आप पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों तथा द्रव्य आदि को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। अतः शत्रु पक्ष से आप चिन्तित रहेंगे तथा ये आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। साथ ही आपके घर में चोरी भी हो सकती है। अतः चोरों से आपको सावधान रहना चाहिए। इस महीने में आपका अनावश्यक धन का व्यय होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा न ही आप इसका अनुपालन करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे फलतः आपकी शारीरिक शक्ति का ह्रास होगा। साथ ही इस महीने आप घर से दूर किसी यात्रा पर भी जा सकते हैं। सांसारिक कार्यों में भी आपको कष्ट होगा तथा मुकद्दमे आदि में भी आपके धन का व्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी आप सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी मान प्रतिष्ठा को आघात पहुंचेगा। इस समय अग्नि के द्वारा भी आप किसी प्रकार से हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

अक्टूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धन लाभ अर्जित करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न होंगे। इस मास में आप घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं। सन्तति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे तथा इनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनका पूजन एवं सम्मान करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। इस मास में समाज में आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में वृद्धि तथा उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता की प्रबलता रहेगी एवं दूर समीप की आप कोई लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न करेंगे। मित्र तथा बन्धुवर्ग से इस समय सम्बन्धों में घनिष्टता होगी। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

इसके साथ ही इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा वातोत्पन्न रोगों से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि का भी भय होगा जिससे हानि की आशंका बनी रहेगी। अतः संयम एवं सतर्कता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके उच्चाधिकारी या वरिष्ठ सहयोगी आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे फलतः आप कार्यक्षेत्र में प्रोन्नति प्राप्त करेंगे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी भलाई के लिए कार्यों को भी सम्पन्न करेंगे साथ ही आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सिद्ध होंगे। फलतः आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों में आपकी श्रद्धा होगी तथा इनकी पूजा एवं सेवा में भी आप तत्पर रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक फैलेगा। इसके साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभ योग बनते रहेंगे। इस समय आप नवीन स्थान या गृह आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त पिछली असफल आशाओं को पूर्ण करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

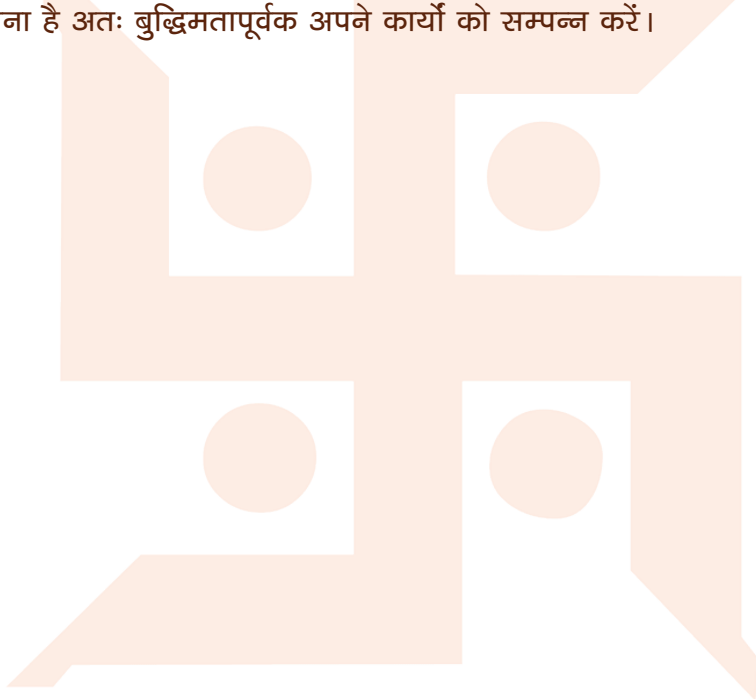
इसके साथ ही इस मास में आप पुत्र एवं स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की भी प्राप्ति हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ, महत्वपूर्ण एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा जिसमें आपको अपने असफल कार्यों में भी सफलता प्राप्त होगी।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से

आपको पूर्ण लाभ होगा तथा सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा मन से भी पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। ज्ञानार्जन में भी आप रुचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। आपको इस मास वांछित पदार्थों की भी प्राप्ति होगी तथा इनका आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। समाज तथा समाजिक जनों से आप पूर्ण आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे साथ ही विगत रुके हुए कार्यों में भी आप इच्छित सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

इसके साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित्त दोष से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार का योग भी बनता है। अतः दुर्घटना आदि से भी सावधान रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी धन हानि होने की सम्भावना है अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष लग्न स्थान में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। अपने भाई या किसी के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं, अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ धनार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

जून के बाद गुरु एवं शनि दोनों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है अतः कोई निवेश न करें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उस समय आप बहुत अच्छी बचत कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपका पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। अविवाहित जातकों का विवाह संस्कार होसकता है। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी जिससे विरोधाभास व वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकता है। माता-पिताका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

26 जून के बाद आपको संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। 26 नवम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं परन्तु लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित रखनी चाहिए। सुबह सुबह टहलना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

जून के बाद स्वास्थ्य के लिहाज से समय अच्छा नहीं रहेगा। शनि, राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कोई लम्बी बीमारी होने के संकेत मिल रहे हैं। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा मुश्किल भरा हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु जल तत्त्वराशि में होने कारण आप कफ, पाचन व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही आपके लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। 26 नवम्बर के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आप परिश्रम के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छा है।

जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको परिश्रम का फल नहीं मिलेगा, जिससे आपके करियर में सफलता की उम्मीद कम ही लग रही है। उच्च शिक्षा

प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 26 नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि की नवम भाव पर दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पत्नी के साथ हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। जून के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या लोहे के तवे का दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और व्रत रखें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा परन्तु फरवरी से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की चेष्टा करेंगे। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार होगा। कार्य-कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके संचित धन में कमी आ सकती है। आय के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ कमजोर हो सकती है। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान का शनि छोटे भाई-बहनों के लिए बहुत अच्छा है और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेगा। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आपके बच्चों के विवाह की संभावना भी बन रही है। फरवरी के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

24 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक माहौल को खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी जिसके कारण आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपको बच्चों के बारे में शुभ समाचार मिलेंगे। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे।

सन्तान इच्छुक जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाई महसूस करेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहना चाहिए क्योंकि राहु अचानक ही शारीरिक परेशानी देते हैं। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या को भी सुधारें।

24 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको करियर में सफलता पाने के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु पढ़ाई में व्यवधान भी बना रहेगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा। फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। 26 जून के बाद आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा परन्तु फरवरी के बाद मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई के बाद पंचम भाव



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। 29 मार्च के बाद भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में गुप्त शत्रु विघ्न उत्पन्न कर सकते हैं जिसके कारण आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजयी प्राप्त करे लेंगे और आपके कार्यों पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ परेशानी आ सकती है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बुद्धिमानी से काम लें। 05 अक्टूबर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। द्वादशस्थ राहु के कारण अचानक कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं। 29 मार्च के बाद अपने बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे।

25 अगस्त से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के

संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

25 अगस्त से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मार्च के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। शिक्षा-दीक्षा के प्रति इनकी रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

08 अगस्त के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता व सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

25 अगस्त से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है या मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। आपको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। 29 मार्च के बाद विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों को करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी। 29 मार्च के बाद छोटी यात्राएं होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल व उन्नति कारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा-पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। 25 अगस्त से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

प्रथम तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए श्रेष्ठतम रहेगा। जो आप चाहते हैं उसे पाकर ही रहते हैं यही बात आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। मई के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी में परिवर्तन चाहते हैं उनके लिए मई का महीना बहुत अच्छा रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपकी आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम माह छोड़ दिया जाए तो पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे और इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। मई के बाद रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आप कागजी कार्यवाही या फिर किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। नई योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंगे। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। शनि ग्रह के गोचर के बाद घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाएंगे। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



23 सितम्बर के बाद सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। समाज में पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपकी सन्तान की शिक्षा-दीक्षा में सुधार व पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से उन्नति भी होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का शनि गर्भवती स्त्रियों के लिए अच्छा नहीं है। संतान के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आ सकती है। संतान के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा।

स्वास्थ्य

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय रहेंगे। आप दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति हैं जिसके कारण आप स्वस्थ रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

17 अप्रैल के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके लिए समय कुछ तनावपूर्ण हो सकता है। अपनी चिंता और व्याकुलता विजय पाने के लिए आप ध्यान या योग का सहारा ले सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर ईर्ष्या, प्रतिशोध और विश्वासघात जैसी बुरी भावनाओं को खत्म कर आपके अन्दर सकारात्मकता प्रदान करेगा जिससे आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी। आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती ही रहेंगी साथ ही सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक प्रतिकूलता के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 17 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का पाठ आपके लिए लाभप्रद रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लालायित रहते हैं, वो काबिले तारीफ है। 18 फरवरी से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। हालाँकि जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा वैसे ही आपकी जिन्दगी एक तेज गति पकड़ लेगी और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा।

आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। राहु ग्रह का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए आप अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी। जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। फरवरी के बाद आपको अचानक धन लाभ भी होगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं का सुख प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य में भी आपका पैसा खर्च होगा।

15 अक्टूबर के बाद आपको आर्थिक मामलों में ज्यादा सावधान रहना चाहिए। निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लेनी चाहिए। अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से दूर रहें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में खुशहाली बनी रहेगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

गुरु का गोचर आपकी माता के लिए काफी शुभ रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहार दोनों में बदलाव आएगा। 14 जुलाई के बाद प्रेम संबंधों में भी सफलता मिलेगी। किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। आपको मित्रों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्षारम्भ आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेगा परन्तु 18 फरवरी से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान सुख में कमी कर सकता है। अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। 15 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। 18 फरवरी से द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल रहेगा जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा। 18 फरवरी से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहे तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु 18 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दार्शनिक स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में मन्त्र जाप या साधना के प्रति आपकी रुचि अधिक रहेगी। आपकी अपने ईष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरु दीक्षा भी लेंगे। अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं पंचम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरुद्वादश भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गशीर्ष होकर 23 अक्टूबर को मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नति के लिए सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। 5 मार्च के बाद अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्रों का पूरा सहयोग मिलेगा।

मई के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान बढ़ेगा। आप से बड़े अधिकारी आपके कामों से संतुष्ट रहेंगे। 23 अक्टूबर के बाद अचानक व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति होगी। इस समय के अंतराल में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है जिससे आप अपने व्यापार को ऊँचाई तक ले जाने में समर्थ होंगे।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिये जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक में वृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 31 मई से शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रशस्त होंगे।

12 अगस्त से गुरु का गोचर द्वादश स्थान में हो रहा है। उस समय आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए और किसी प्रकार के जोखिम भरे कामों में धन निवेश नहीं करना चाहिए। 23 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। चतुर्थस्थ केतु आपके पारिवारिक वातावरण में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे परन्तु चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि उस विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देगी। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर

सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा।

आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता-पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। आपके जीवनसाथी के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो उनकी संगत गलत हो सकती है। 5 मार्च से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ हो रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। बीच-बीच में आपको उनके मनोबल को बढ़ाते रहना चाहिए नहीं तो वे अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ या पेट संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। 5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

31 मई से छठे स्थान के शनि आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति का विकास करेंगे जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे परन्तु 23 अक्टूबर के बाद आप छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी या सर्दी-जुखाम से परेशान हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि वर्षारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

मई से छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करा सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

5 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं

होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

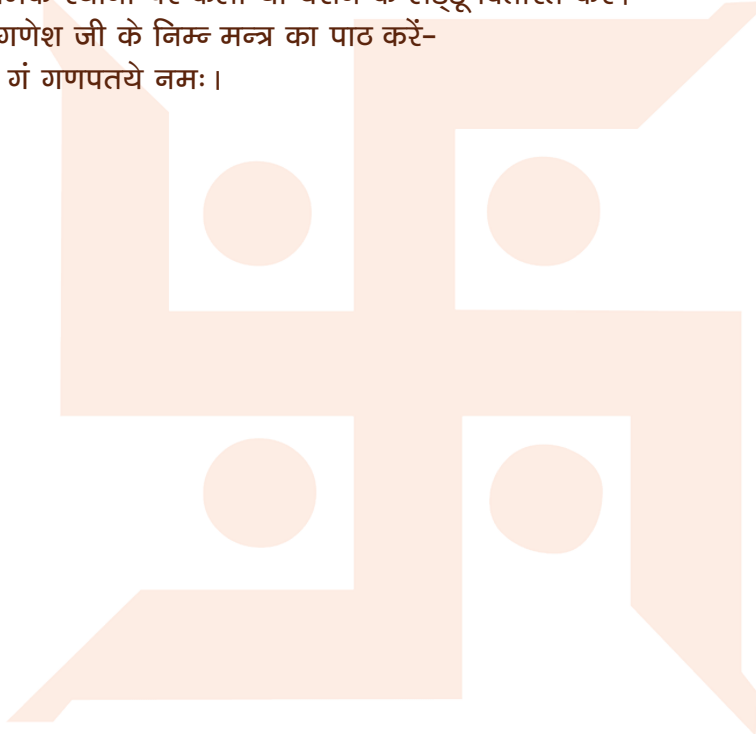
12 अगस्त से द्वादशपर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं और विदेशी संपर्कों से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन गणेश जी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

ॐ गं गणपतये नमः।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं दशम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्थिति के लिए यह वर्ष बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रहों का गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। आप अपने सभी अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

वर्ष के मध्य में द्वादश स्थान का मंगल आपके व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। परन्तु यह स्थिति जैसे ही समाप्त होगी, अचानक आपके कार्यों में उन्नति मिलना शुरू हो जाएगी। इस समय के अंतराल में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं। उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो व्यक्ति कार्यरत हैं उनको कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। समस्त आय के स्रोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 18 मार्च से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपकी धर्मपत्नी का मुख्य सहयोग रहेगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। अपनी पारिवारिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में सुखी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

तृतीयस्थ केतु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके छोटे भाई बहनों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके पिताजी के स्वास्थ्य में भी उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय उत्तम है।

बच्चों के साथ प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी, जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदुरुस्त व सेहतमंद रहने वाले हैं। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी ऊर्जा में वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नई गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना आदि।

व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपनी सेहत पर ध्यान नहीं देंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। परीक्षार्थियों को सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति अभी नौकरी की तलाश में है। उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी एवं बड़े अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। जो व्यक्ति व्यापार शुरू करना चाहते हैं। उनके लिए सुनहरा अवसर चल रहा है। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

नवम पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्रा या धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी।

वर्ष के मध्य में द्वादशस्थ मंगल पर शनि ग्रह की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मार्च के बाद आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है, जिससे आपके धार्मिक कार्यों में रुकावट उत्पन्न होगी।

- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें या अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र पूजाघर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्य उपासना करें या प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्य स्थल पर मान सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। इस समय को आप अपने जीवन का सबसे बेहतर समय बना सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु का संयुक्त गोचरीय प्रभाव व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अत्यधिक शुभ हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। यह उपलब्धी नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। आपके कार्य व्यवसाय में जीवनसाथी का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। जिससे पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्त होंगे। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों का सलाह अवश्य लें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक लेन-देन में जल्दबाजी न करें और बहुत सोच समझकर धन का उपयोग करें। आपको अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखना होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। कोई नया कार्य प्रारम्भ करने के लिए बेहतर समय नहीं है इसलिए कोई भी बड़ा निर्णय न लें। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परन्तु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में तत्पर रहेंगे। वाहन व भूमि



FUTUREPOINT
Astro Solutions



क्रय-विक्रय करते समय सावधान रहें क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि अच्छी नहीं होती।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 28 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का माहौल बनेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अनावश्यक वाद-विवाद बहुत अधिक होंगे। तर्क-वितर्क की प्रवृत्ति आवश्यकता से अधिक हो सकती है जिसका सीधा नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार वालों पर तथा आपके जीवनसाथी पर पड़ेगा, साथ ही उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं भी बढ़ सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न करा सकता है। बेहतर होगा की आप अपने विचारों पर नियंत्रण रखें और अपना आवेश या प्रेम दोनों ही दूसरों पर न जाहिर होने दें। घरेलू वातावरण में किसी प्रकार की विषम परिस्थिति उत्पन्न न हो, इस पर विशेष ध्यान दें।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगा। 28 मार्च के बाद गुरु ग्रह क गोचर आपके दूसरे बच्चे के लिए काफी शुभ है। बच्चों के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। यदि दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो इस वर्ष अवश्य विवाह हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है। आप तंदुरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जिससे आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलना आदि। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

13 जुलाई से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। मानसिक तनाव, उत्तेजना, अवसाद जैसी समस्याएं बहुत परेशान कर सकती हैं। लीवर और मधुमेह की समस्या भी बढ़ सकती हैं या प्रारम्भ हो सकती हैं। दिनचर्या अनियमित रहेगी और खान-पान पर नियंत्रण रखना मुश्किल रहेगा। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर अपने लक्ष्य में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नए-नए तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा।

मैनेजमेंट, प्रशासन, शिक्षण कार्य से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है। जो व्यक्ति व्यापार में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 28 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे। नवमस्थ राहु के कारण आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी।

13 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। किसी प्रकार की यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना इत्यादि का योग बना है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ राहु के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। मन्दिर जाना, धार्मिक कृत्य करना, दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर प्रसाद वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन करें। इसके प्रभाव से ग्रह जनित सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि सप्तम भाव में और सिंह राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण व्यापार में नए साझेदार मिल सकते हैं। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहने वाला है।

अष्टम भाव में राहु ग्रह का गोचर आपके व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके ला सकता है। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किए अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। किसी को लंबे समय से दिया हुआ धन वापस मिलने का योग है। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रही है। आयात-निर्यात करने वालों व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपके आय के स्रोतों में वृद्धि करेगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

6 अप्रैल के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ राहु के कारण धोखा या धन हानि का योग बन रहा है। अतः आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। माता पिता की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अनावश्यक तनाव और विवाद की स्थिति बनेगी। शत्रु भी सर उठायेंगे और उनके कारण आप अशान्त रह सकते हैं। साथ ही करीबी लोगों का उतना साथ नहीं मिलेगा जितना आप उम्मीद लगाए बैठे हैं। कोई साथ का व्यक्ति जो आपके कार्यस्थल से सम्बंधित है धोखा दे

सकता है या उसके कारण आपको कुछ परेशानी उठानी पड़ सकती है। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। परिवार में एक-दूसरे के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। आपके माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है। परन्तु सास-ससुर को शारीरिक कष्ट होगा। समाज में आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। नाम प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपका एक अगल व्यक्तित्व होगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। परन्तु दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। आपकी दूसरे बच्चे के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद आपके दूसरे बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। अतः इस समय के अंतराल में आपको उनके स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न कर सकती है, जिससे रक्तचाप, मधुमेह, एलर्जी या मस्तिष्क सम्बन्धी किसी बीमारी से परेशान हो सकते हैं। अतः अत्यधिक सावधानी बरतें और अपना ख्याल रखें। मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अनावश्यक यात्राएं होंगी और उसमें भी शारीरिक कष्ट की सम्भावना रहेगी। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान कर सकते हैं।

अप्रैल के बाद आपका स्वास्थ्य और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। अप्रैल के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिए समय काफी शुभ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं, तो यह समय आप के लिए श्रेष्ठ है। यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनसे आगे



FUTUREPOINT
Astro Solutions



निकलना चाहते हैं, तो आपको अपनी नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए बहुत अनुकूल रहेगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। आप अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप तीर्थ यात्रा व धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। मन्दिर निर्माण, धार्मिक उत्सव व भण्डादि कार्यों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। मार्च के बाद आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे। कर्म ही पूजा है इस उद्देश्य को मानेंगे और दूसरे को भी यही उपदेश देकर कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष शनिवार की प्रातः धारण करें। आपको राहु की शुभता प्राप्त होगी।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर सुबह-सुबह उसका दर्शन करें एवं ॐ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 15 अप्रैल से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह सब आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तम स्थान में राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अचानक आपके व्यापार में रुकावट उत्पन्न कर सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

27 अगस्त के बाद समय और भी ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आपके कार्यों में प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर अच्छा होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान के गुरु आपको भूमि, भवन, वाहन के साथ संचित धन की प्राप्ति करा सकते हैं। माता से धन लाभ होने का अच्छा योग बन रहा है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत तो बढ़ेंगे परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर भी ज्यादा खर्च होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे, जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। इस समय के अंतराल में आपका रुका हुआ या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। इस अवधि में कहीं से वसीयत प्राप्त होने की भी संभावना बन रही है। 27 अगस्त के बाद लेन देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। क्योंकि शनि ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। 15 अप्रैल से समय और भी अच्छा हो रहा है।

राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा, जिससे परिवार में किंचित नकारात्मक परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। बच्चों के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

15 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का बहुत ही शुभ समय चल रहा है। आपके बच्चे अनुकूल कार्य करेंगे। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। आर्थिक स्थिति को लेकर ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव से भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। 13 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। क्योंकि लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

27 अगस्त के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अष्टम स्थान का शनि कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है। अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापवाही न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 15 अप्रैल के बाद समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय बहुत अच्छा है। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। लेकिन 27 अगस्त के बाद करियर में उन्नति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। इस वर्ष आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

15 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्राएं भी अधिक होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी अधिक करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 15 अप्रैल के बाद आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी। साधना, योग व ध्यान आप अधिक करेंगे। अपने गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ायें और सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- बुधवार व शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें (तांबे की लोटे में चावल डालकर)।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। काम काज में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रु परेशान कर सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के कारण कुछ ऐसी परेशानी आ सकती है जिसका समाधान निकालने में अपने को असमर्थ समझेंगे। अप्रैल के बाद समय और भी प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

सितम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। फिर भी किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह के बिना महत्वपूर्ण फैसले न लें। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण सतर्कता बरतने की जरूरत है। निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। इस बात को न भूलें की जल्दबाजी में लिए गए फैसले अक्सर गलत ही होते हैं। आपका कोई करीबी या कोई अन्य आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकता है। कारोबार से संबंधित सभी कार्यों में एहतियात बरतें और जो भी लेन-देन करें लिखित रूप में ही करें तो ज्यादा बेहतर होगा।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी है। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु 26 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऐसे में आप लेन-देन के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अनुकूल करने में धन व्यय होगा। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

सितम्बर के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होगा। फिर भी जोखिम उठाना कदापि उचित नहीं होगा। शेयर बाजार से दूरी बनाना निश्चित तौर पर आपके लिए लाभदायक होगा। बिना सोचे-समझे कहीं भी निवेश करने से बचें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको बड़े भाई व बच्चों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके पिता के लिए यह समय काफी अच्छा है।

26 अप्रैल के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अपनी वाणी पर नियंत्रण रखते हुए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें नहीं तो स्थिति और प्रतिकूल हो सकती है। सितम्बर के बाद धर्म पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर रहेंगे। मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय शुभ है। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही अनुकूल है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी उम्मीद रखते हैं वे उससे भी अच्छा करने वाले हैं।

26 अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। उस समय उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। सितम्बर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। नियमित व्यायाम करते रहेंगे। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करेंगे, जिससे अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

26 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि अचानक कोई बड़ी बीमारी दे सकती है। इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। तुला दान या महामृत्यंजय जाप आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। पंचम स्थान का गुरु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। गुरु ग्रह का गोचर आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

26 अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आपकी उन्नति रुक सकती है। प्रतियोगिता में व्यवधान व करियर में रुकावटें आ सकती हैं। जिन लोगों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको सितम्बर तक इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि लम्बी यात्रा का योग बना रही है। धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे।

अप्रैल के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना इत्यादि। अप्रैल के बाद सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं। उस समय मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन नहीं लगेगा। आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें या मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें या सात मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित कर नित्य उसका दर्शन करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं है। इस अवधि में आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे। सप्तम स्थान पाप कर्तरी योग में होने से प्रत्यक्ष एवं गुप्त शत्रुओं की वृद्धि होगी। वे आपको किसी षड्यन्त्र में फंसाने का प्रयत्न करेंगे और आप उनके बीच फंसा हुआ महसूस कर सकते हैं। परन्तु 11 मई से समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके विरोधी एवं प्रतिद्वंदी शान्त होंगे तथा आपकी सफलता का मार्ग खुलेगा।

अक्टूबर के बाद आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। कुछ अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न होगा। यही आपकी व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपसे खुश रहेंगे। फिर भी किसी पर अत्यधिक विश्वास करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा क्योंकि अष्टम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। परिवार में रोग होने के कारण भी आपके व्यय अधिक होंगे, जिससे मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। परन्तु 11 मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। धनागम में निरंतरता होने के कारण पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

अक्टूबर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकते हैं। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे। बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लें। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से बचें।

घर-परिवार, समाज

मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम

लेना होगा। सप्तम स्थान पाप कर्तरी योग में होने से आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है। आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें। आपकी रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। वाद-विवाद करने से परहेज करें। 11 मई से मित्रों व पत्नी के साथ संबंधों में सुधार होगा।

तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे खुशनुमा माहौल बना रहेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। परन्तु अक्टूबर के बाद अचानक आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उनको किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

संतान

छठे स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ में आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव उनके शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। 11 मई से समय उत्तम हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय उत्तम रहेगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस वक्त बच्चों पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि 11 मई से समय किंचित अच्छा हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी, जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ बने रहेंगे।

7 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अष्टमस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य सुख में कमी आ सकती है। यदि आपने छोटी मोटी बीमारियों को अनदेखा किया तो यह बड़ी चिंता जनक बनकर सामने आ सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए समय समय पर चिकित्सक की सलाह का लाभ उठाना लाभकारी रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय शुभ नहीं है। परिश्रम के अनुसार परिणाम नहीं मिलेगा परन्तु आप अपने लक्ष्य के पथ

पर अग्रसर रहेंगे तथा सफलता की उम्मीद को लेकर आगे बढ़ते रहेंगे। 11 मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपका रुझान राजनैतिक, तन्त्र, यन्त्र, मन्त्र, विद्या, सिद्धि एवं चमत्कारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक होगा।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनके लिए यह समय शुभ है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अच्छी उन्नति करेंगे। अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप खुश नहीं रहेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। मई के बाद छोटी-माटी यात्राएं होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी अधिकांश यात्राएं अचानक होंगी।

सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यावसायिक यात्राएं होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अक्टूबर के बाद दुर्घटना या चोट चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्यता के कारण कर नहीं पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्म को ही पूजा समझेंगे। 11 मई से धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में शुभ ग्रह स्थित होने से मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वों को हंसी खुसी के साथ मनाएं।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं तथा ॐ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा काली वस्तु का दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में रुके हुए कार्य पूरे हो सकते हैं। व्यापार में मन्द गति से वृद्धि होने की संभावना बन रही है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय काफी शुभ है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 3 मार्च के बाद किसी के साथ मिलकर कार्य करने का प्रबल योग बन रहा है। लेकिन यह साझेदारी आपके लिए अच्छी नहीं रहेगी। अतः आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा।

5 अप्रैल से अष्टमस्थ शनि के कारण कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास नहीं करना चाहिए। उच्चाधिकारियों का सहयोग समय पर न मिलने के कारण परेशानियां बनी रहेंगी। आप अधिकारों व शक्तियों का दुरुपयोग करने से बचें। व्यावसायिक तथा सामाजिक स्तर पर उत्थान के लिए प्रयास अधिक लगन से करें। देर से ही सही आपको इस संबंध में सफलता अवश्य प्राप्त होगी। स्थितियों को सरलता से संभालने की आपकी कला का परिणाम, प्रशंसा तथा वित्तीय लाभ हो सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय अधिक अनुकूल हो रहा है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद बढ़ जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण कोई भी कार्य करेंगे तो उसमें सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्च आ सकते हैं। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। लेन देन व निवेश के मामले में सावधान रहें तथा इस समय के अंतराल में अपनी आत्मशक्ति बढ़ाएं। 3 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। एकादश स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेगी, जिससे आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक मामलों के लिए सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में अधिक व्यय होगा। पंचमस्थ राहु के कारण पुत्र के रोग-व्याधि में भी आपके पैसे खर्च होंगे। यदि आप कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो 4 नवम्बर के बाद समय शुभ हो रहा है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। पारिवारिक विषयों को लेकर चिंताएं बनी रहेंगी। नवमस्थ शनि के कारण पिता जी के स्वास्थ्य में कमी आ सकती है। परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद विवाद सामने आ सकते हैं। परन्तु 3 मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। आपके भाईयों की उन्नति होगी। जीवनसाथी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। परिवार का सहयोग आपके साथ पूरी तरह से बना हुआ है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

साल का उत्तरार्द्ध आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित परेशानी बढ़ेगी। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। जितना हो सके पारिवारिक मतभेदों से दूर रहें। 4 नवम्बर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों की पढ़ाई लिखाई व उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। 7 अप्रैल से समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय बच्चों के रहन सहन व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा।

पंचम स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों के लिए ज्यादा खराब है। उनको अपने खान पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा नहीं तो गर्भपात हो सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति की कमी होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। 4 नवम्बर के बाद आपके स्वास्थ्य में फिर से सुधार होगा। अर्थात् वर्षान्त आपके लिए श्रेष्ठ है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए साल का प्रारम्भ श्रेष्ठ है। छठे स्थान के राहु अचानक प्रतियोगिता में उन्नति के मार्ग खोलेंगे तथा आपको प्रतियोगिता में इच्छित सफलता मिलेगी। 7 अप्रैल के बाद विद्यार्थियों लिए समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। वर्ष का उत्तरार्द्ध उनके लिए काफी श्रेष्ठ है। यदि आप विदेश जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए यह समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु एवं राहु की संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। नवम स्थान के शनि लम्बी लम्बी यात्राएं कराते रहेंगे। 5 अप्रैल के बाद सामुद्रिक यात्रा का भी आन्दन लेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप संतुष्ट रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्यता व दीर्घसूत्रता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। 7 अप्रैल के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी आस्था एवं विश्वास में कमी कर सकता है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। गोपनीय विद्या, रहस्यमयी साधना के प्रति आप आकर्षित होंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे।

- प्रत्येक दिन चिड़ियों एवं चींटियों को दाना डालें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- वीरवार का व्रत करे एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलेगी तथा अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। आमदनी के स्रोत बढ़ेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद व्यावसायिक स्थिति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ गुप्त शत्रु परेशान कर सकते हैं। काम धंधे में भी रुकावटें आ सकती हैं, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। लेकिन 28 जून के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे तथा उन्नति के मार्ग पर फिर से अग्रसर होंगे।

लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि नवीन विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगी, जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सफल बनाएंगे। आय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलेगी तथा 3 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें क्योंकि 6 अप्रैल से आपका अनावश्यक खर्च बढ़ने वाला है। इस समय के अंतराल में आर्थिक हानि होने के प्रबल योग बन रहे हैं। लेन देन के मामले में सावधान रहें तथा जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए फिर से शुभता का संकेत ले कर आ रहा है। शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने की संभावना बन रही है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 3 दिसम्बर के बाद अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन का व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 6 अप्रैल के बाद आपके माता पिता जी

के लिए भी समय शुभ नहीं रहेगा। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। दोस्ती में भी दरार आ सकती है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

28 जून से समय अच्छा हो रहा है। पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। 3 दिसम्बर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा तथा परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए उत्तम रहेगा। वे अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है। संतान संबंधित चिंताएं बढ़ेंगी। आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

गर्भवती स्त्रियों को बड़े ध्यान से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है। 28 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो वर्षान्त में विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको अपने खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी होगी। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

28 जून से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में फिर से सुधार होगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच में भी वृद्धि होगी। जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह योगा व व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 28 जून के बाद नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ आपकी धार्मिक यात्राएं भी खुब होंगी।

इन यात्राओं के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता भी हो सकती है। यह

मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 3 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही श्रेष्ठ है। दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में भी आपका मन कम ही लगेगा। 28 जून से समय फिर से शुभ हो रहा है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- केला, बेसन के लड्डू व पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार को व्रत रखें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में प्रवाहित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं। ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष कार्य व्यवसाय के लिए अनुकूल रहेगा। व्यापारी बंधु अपनी कर्तव्य-निष्ठा व परिश्रम के कारण अपनी आमदनी बढ़ाने में सफल रहेंगे। लंबे समय से रुके हुए आपके कार्य अब तेज गति पकड़ेंगे। आप नए कार्यों में हाथ डालने के लिए आतुर रहेंगे। लेकिन जल्दबाजी करने से बचें व सोच-समझकर धन निवेश करें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है। यदि आप नौकरी में हैं तो वर्षारम्भ में कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। स्थानान्तरण का भी योग बन रहा है। भूमि, भवन व वाहन से जुड़े लोगों को 6 मई के बाद नुकसान हो सकता है। अतः खरीद-बेच करते समय कागजी कार्यवाही पर पूर्ण ध्यान दें।

मई से जुलाई तक अपने सहकर्मियों के साथ उचित तालमेल बना कर चलना आपके लिए फायदेमंद रहेगा। कार्यस्थल में व्यर्थ वाद-विवाद से बचें। वर्षान्त आपके लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। अपने उच्च अधिकारियों की तरफ से आपको मान-सम्मान, पुरस्कार या शाबाशी मिल सकती है। शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको वांछित पद की प्राप्ति होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। आय में निरंतरता बनी रहेगी परन्तु पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। 6 मई के बाद जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश करने व किसी को पैसे उधार देने से बचें। दीर्घकालीन निवेश के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा।

उत्तरार्द्ध में हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति करा सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। माता की बीमारी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान का राहु घर परिवार के लिए अच्छा नहीं है। कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को ठेस पहुंच सकती हैं तथा परिवार में कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर

प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार वैमनस्यपूर्ण भी रह सकता है। आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपके सम्बन्धों में खटास आ सकती है। मई से जुलाई तक का समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है।

यदि आपने निष्ठा के साथ संबंधों को सुधारने का प्रयास किया तो आपके संबंध संतोषप्रद रह सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। सामाजित पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनके दिल में स्नेह, आदर्श व सम्मान का भाव बढ़ेगा। आप लोगों के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। 6 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों की उन्नति में सहायक होंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्षान्त बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आलस्यता एवं दीर्घ सूत्रता के कारण उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकी शिक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं। अतः इस अवधि में उन पर विशेष ध्यान देना होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग पूरा वर्ष ही आपकी सेहत के लिए अच्छा है। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसमजनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही सुधर जाएगी। 6 मई के बाद आप योग क्रियाओं के द्वारा मन को एकाग्र करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी।

25 सितम्बर के बाद चोट व दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव भी रह सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 6 मई के बाद समय शुभ हो रहा है। इस अवधि में आपको इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो यह समय उत्तम है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 25 सितम्बर के बाद वांछित सफलता मिलेगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय उत्तम है।

यात्रा-तबादला

शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से इस वर्ष छोटी-बड़ी यात्राएं खूब होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

सितम्बर के बाद विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें तथा किसी के साथ मित्रता न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए श्रेष्ठ रहेगा। 25 सितम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन नीली वस्तु का दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के दृष्टिकोण से यह वर्ष अति उत्तम होगा। अच्छे मुनाफे मिलने के आसार हैं। हर हाल में आपको लाभ होने वाला है। चतुर्थस्थ राहु के कारण वर्ष के पूर्वार्द्ध में व्यावसायिक सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। जून के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे। कारोबार का विस्तार होगा तथा सरकारी ठेके मिलेंगे। इसके साथ ही कारोबार में पूंजी लगाने वाले लोग भी मिलेंगे। कुल मिलाकर आपके लिए समय अनुकूल है, उसका लाभ उठाएं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सेवारत लोगों को अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान-सम्मान बढ़ेगा। नई व बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। नौकरी से संबंधित आपकी सभी ख्वाहिशें पूरी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में चतुर्थस्थ राहु के कारण कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन 22 जून के बाद तीव्र गति से लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। आपकी राह की सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन निर्वाध रूप से होगा। लेकिन इसके लिए आपको अपनी दिनचर्या में कुछ आधारभूत बदलाव करने होंगे।

22 जून के बाद आपकी जमापूंजी में तेजी से वृद्धि होगी। कुल मिलाकर आर्थिक रूप से यह वर्ष बेहतर साबित होगा। शेयर बजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें। यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु अचानक पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। 22 जून तक परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। माता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

22 जून को राहु ग्रह के गोचर के साथ परिवार में आपसी सद्भाव का माहौल

बनेगा। पारिवारिक रिश्ते बेहतर होंगे तथा समय आनन्द के साथ व्यतीत होगा। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। जिन्दगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद भी करेंगे। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि सामाजिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

आपके बच्चे हर प्रकार की प्रतियोगिता परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। धन प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त होंगे। आपकी सन्तान को पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होने का पूर्ण योग बन रहा है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी सन्तान सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लेगी। उनके पराक्रम, प्रभाव तथा आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त वे परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपकी सेहत अच्छी रहने वाली है। कोई बड़ी समस्या नहीं की उम्मीद नहीं है। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा।

राहु के कारण मौसम संबंधित बीमारी परेशान कर सकती हैं, परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। रहन-सहन व दिनचर्या में सुधार करें तथा सुबह शाम व्यायाम करना भी आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर के लिए उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता के तैयारी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय अत्यधिक अनुकूल है। यदि आप कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं या शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है।

22 जून को तृतीय स्थान में राहु का गोचर प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं अधिक होंगी। जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको

इच्छित लाभ मिलेगा ।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षा व साक्षातत्कार के लिए यात्रा हो सकती है। आध्यात्म की प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थलों की यात्रा कर सकते हैं। देश विदेश घूमने के अवसर भी मिलेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप कोई विशेष पूजा अनुष्ठान करेंगे। जैसे अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण या अन्य कोई हवन इत्यादि, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी एवं आपका मान सम्मान बढ़ेगा।

दुर्गा बीसा यंत्र धारण करने से चतुर्थस्थ राहु के गोचर से उत्पन्न होने वाली परेशानियों के निदान हेतु सहायता मिलेगी।

- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं। ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य क्षेत्र में इस वर्ष आपको एक नई दिशा मिलेगी। आपकी कार्यक्षमता और रचनात्मक ऊर्जा बहुत अच्छी बनी रहेगी। इसका सदुपयोग करें। आय के नए स्रोत खुलेंगे। अवसर का पूरा फायदा उठाएं। कार्यक्षेत्र में आपके विचारों की सराहना होगी। बड़े अधिकारी आपके काम से प्रसन्न रहेंगे। यदि अपना व्यवसाय आरम्भ करना चाहते हैं तो यह उचित समय है। अवसर और साधन आसानी से प्राप्त होंगे। नए कारोबारियों से आपका संपर्क बनेगा। उनके साथ काम करके आप नई ऊँचाईयों को छूँगे। विशेषतः भविष्य में आर्थिक उन्नति के लिए अभी धन का निवेश करेंगे जिसका आने वाले भविष्य में अच्छा लाभ मिलेगा।

नौकरी करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। दशमस्थ शनि के कारण नौकरी बदलने के ढेरों नए अवसर मिलेंगे, मनचाही नौकरी मिलेगी और पदोन्नति भी होगी। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ परेशानियाँ आएंगी। लेकिन 30 जुलाई के बाद से समय आपके अनुकूल हो जाएगा। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं। इसे नजरअंदाज न करें तथा अपने शत्रुओं से सावधान रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्ध अधिक खर्च वाला होगा। इस समय धन का आगमन तो होगा परन्तु अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय भी होगा। साथ ही जो व्यक्ति मकान, भूमि या वाहन की सोच रहे हैं उनके लिए यह समय ज्यादा खर्च वाला है। ऋण के पुनर्निर्माण पर भी खर्च बढ़ेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक रूप से उत्तम रहेगा। धन की चिंता से मुक्ति मिलेगी तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। आपको बड़े भाई या मित्र से लाभ प्राप्त होगा। भौतिक सुख सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। निवेश के लिए यह समय काफी अनुकूल है। यदि इस समय आपने निवेश किया तो आपको इच्छित लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार

में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे तथा सभी कार्यों में उनका सहयोग मिलता रहेगा। विवाहित लोगों के लिए संतान प्राप्ति का योग बन रहा है। तृतीय स्थान का राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रभावित रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं आ सकती हैं। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा में व्यवधान आने की संभावना बन रही है तथा उनके उन्नति के मार्ग भी प्रभावित होंगे। इस समय के अंतराल में उनको सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

30 जुलाई के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च स्तरीय शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश होगा। आप अपने बच्चों पर गुरुर करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उत्तम समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण आपको पित्त या पेट संबंधित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद परिस्थितियां सामान्य हो जाएंगी।

आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि किसी कार्य में विलम्ब भी हो तो उसे ईश्वर के शुभ संकेत के रूप में स्वीकार करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सितम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में आपको विशेष सफलता नहीं मिलेगी, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है।

आप पढ़ाई-लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते

हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है तथा आप किसी भी प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की पूर्ण संभावना है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी। अपने कार्य में विस्तार हेतु या विद्यार्थी वर्ग उच्च शिक्षा की प्राप्ति हेतु विदेश जा सकते हैं।

आपके पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण के योग हैं। परिवार में किसी यादगार यात्रा एवं सुखमय यात्रा का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। विभिन्न व्यक्तियों एवं कार्यशालाओं जो धर्म पर आधारित हों उनमें भाग लेंगे। साथ ही वृद्धाश्रम एवं मंदिर के निर्माण हेतु दान भी करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण आप निःस्वार्थ भाव से पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे।

- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- अपने पूजाघर में श्वेतार्क गणपति स्थापित करें।
- पांच मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए वर्षारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 16 फरवरी के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आप अपने कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापार में आपको भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। इस अवधि में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है तथा इस ब्राण्ड नेम से आपको भविष्य में अत्यधिक लाभ मिलेगा। द्वितीय स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु उससे आपके सामान्य काम काज पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे।

नौकरी करने वाले लोगों की पदोन्नति का पूर्ण योग बन रहा है। समय समय पर आपको बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा तथा कार्यस्थल पर सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे।

धन संपत्ति

शुरु के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आर्थिक स्थिति के लिए अनुकूल बना रहेगा। एकादशस्थ शनि के कारण पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। आय के मार्ग की सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्य के प्रति सजग रहेंगे। 16 फरवरी के बाद आपकी आर्थिक स्थिति अधिक सुदृढ़ होगी। लेकिन आंख बंदकर किसी पर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है, क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु आपके लिए अच्छा नहीं है।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में इस वर्ष अधिक खर्च होगा। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप शेयर बाजार, लॉटरी व सट्टा इत्यादि से जुड़े हैं तो इस वर्ष ज्यादा सावधान रहने की आवश्यकता है। किसी तरह का जोखिम न लें।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। घरेलू मामलों में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं, टालने की कोशिश करें। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्टकारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद करने से

परहेज करें नहीं तो मानसिक अशान्ति बढ़ सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। पिता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद करेंगे। आपके भाई-बहन आपको आर्थिक रूप से सहायता कर सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए भी यह साल श्रेष्ठ है।

संतान

वर्ष के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपकी संतान के लिए श्रेष्ठ है। 16 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए शुभ है। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे तथा उनकी शिक्षा के स्तर में सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष विवाह होने का पूर्ण योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

वर्ष के दो माह जनवरी व फरवरी छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन प्रसन्नचित्त बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में खूब मन लगेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने के लिए आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे।

द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ शारीरिक कष्ट हो सकते हैं तथा बदलते मौसम के कारण भी आप बीमार हो सकते हैं लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। इस वर्ष आपकी वजन बढ़ने की संभावना लग रही है अतः मक्खन, घी और मिठाई का सेवन कम करें तथा नियमित रूप से व्यायाम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा कहा जा सकता है। तकनीक व विज्ञान से जुड़े विद्यार्थियों के लिए इस वर्ष सफलता के योग बने हुए हैं। करियर में आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे।

नौकरी व करियर में अधिकारी से तनाव होने की संभावना है। व्यापार में आप नई तकनीक, हुनर व मशीनरी का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा इसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

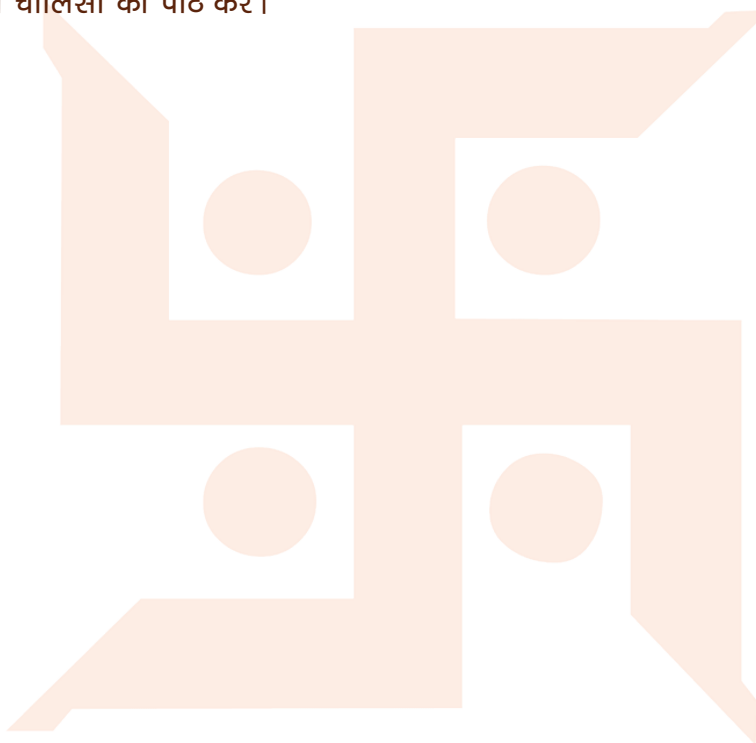
वर्षारम्भ में ही नौकरी करने वाले व्यक्तियों का तबादला होगा तथा यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि आप विदेश जाना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

16 के बाद धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। व्यापारिक या शैक्षणिक कार्यों हेतु आपकी यात्रा समीपवर्ती क्षेत्रों में होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

16 फरवरी के बाद आपका मन पूरी तरह से धार्मिक कार्यों में संलग्न होगा एवं इसमें आपको अपने परिवार का भी पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा।

- प्रतिदिन गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें तथा बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्गा (घास) चढ़ाएं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजन घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालिसा का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु
(11/06/2018 - 11/06/2025)

केतु की महादशा 11/06/2018 को आरम्भ और 11/06/2025 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु पंचम भाव में स्थित है जहाँ से ग्यारहवें भाव पर उसकी दृष्टि है। इसके पहले आपकी 17 वर्ष की बुध की दशा चल रही थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति और हर प्रकार का लाभ मिलेगा। और मनोकामना पूरी होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपकी आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी, तकनीकी ज्ञान प्राप्त होगा और पुत्री का जन्म होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप खुश और आशावादी होंगे। पित्त दोष संबंधी बीमारियाँ हो सकती हैं। आपकी पाचनशक्ति खराब हो सकती है और चर्मरोग बुखार, घाव आदि से पीड़ित हो सकते हैं। ये सभी मोसमी होंगे और कुछ सावधानी बरतकर इनसे बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा। केतु की ग्यारहवें भाव पर दृष्टि के कारण विभिन्न स्रोतों से लाभ और लक्ष्य की प्राप्ति होगी। जीविका और व्यवसाय के लिए विधि, शिक्षण, प्रबन्धन, लेखा, ज्योतिष, पेशेवर खेल, कम्प्यूटर, टेक्नॉलॉजी, पशुपालन तथा सिविल इंजिनियरिंग का चयन कर सकते हैं। चमड़े, खेल के सामान पशु, शस्त्रास्त्र, दवा, रत्न, कम्प्यूटर इलेक्ट्रॉनिक्स आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को सरकार से अनुग्रह मिलेगा और कुछ परिवर्तन तथा स्थानान्तरण होगा। सहकर्मि तथा सहायक कठिनाई उत्पन्न करेंगे और वरिष्ठ कर्मचारी सख्त होंगे। व्यवसाय-व्यापार से मिले लोगों का भी कुछ परिवर्तन तथा जीवन-वृत्ति में कुछ उतार-चढ़ाव आएंगे। दशा की प्रगति के साथ-साथ स्थिति में सुधार होगा। आप अपने कार्य अथवा व्यापार में परिवर्तन कर सकते हैं। अन्तर्दशा में प्रगति के अनुसार अचानक लाभ और हानि हो सकती है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का हर सुख प्राप्त होगा। आप कोई वाहन या मकान खरीद सकते हैं। आपको जायदाद से लाभ मिलेगा और जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपकी छोटी और लाभदायक यात्रा होगी जबकि चन्द्र की अन्तर दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी उत्तम तकनीकी शिक्षा होगी। कानून, गूढ़ विद्या, सिविल इंजिनियरिंग, दवा, पेशेवर खेल, शरीर-विज्ञान आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आप सक्रिय, उद्यमी तथा उत्साही हैं और अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और उन्हें सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपके जीवनसाथी को चौतरफा सफलता, विभिन्न स्रोतों से लाभ और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके साझेदार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपकी माता को परिवार से कुछ आराम मिलेगा किन्तु, कुछ मामूली समस्याएं भी हो सकती हैं। आपके पिता की अध्यात्म तथा यात्रा में रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उन्हें शत्रुओं पर विजय, ख्याति और सुख मिलेगा जबकि बड़ों को साझेदारों से लाभ मिलेगा, उनकी यात्रा होगी और उनके व्यापार का विस्तार होगा।

अन्तर्दशा :

केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको तकनीकी शिक्षा की प्राप्ति तथा सट्टे में लाभ होगा। शुक्र के कारण जीवन वृत्ति में प्रगति, सहायकों से सहायता और सफलता मिलेगी। सूर्य के कारण यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा, व्यय तथा मामूली स्वास्थ्य-समस्याएं होंगी। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान, सम्मान, आराम, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति होगी। राहु के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान कुछ परिवर्तन और सन्तान से सुख मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा में बाधाएं और यात्रा तथा व्यापार में रुचि होगी। बुध की अन्तर्दशा के दौरान लाभ, लक्ष्य तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**महादशा :- शुक्र
(11/06/2025 - 11/06/2045)**

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 11/06/2025 को आरम्भ होकर 11/06/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र तृतीय भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ- बृष और तुला हैं। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद, फैशन डिजाइनिंग तथा जीवन के आनन्द का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है तथा नवम भाव पर इसकी दृष्टि है और इस भाव पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है।

तृतीय भाव मानसिकता, बुद्धि, साहस, दृढ़ता, छोटे भाई-बहनों, छोटी यात्रा, गमनागमन, पत्राचार, अफवाह, हाथ, गले, कन्धों, हँसली तथा स्नायु तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है और इसके फलस्वरूप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करने में साहस की प्राप्ति होगी। आपको कोई बड़ी या मामूली स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और इस दशा के दौरान आपका जीवन

सामान्य रहेगा।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र के कारण आपको समृद्धि तथा संपत्ति की प्राप्ति होगी और आपमें कठिनाइयों का सामना करने का साहस उत्पन्न होगा। इस दशा के दौरान आपको कुछ अचल संपत्ति प्राप्त होने की संभावना है और आप भोग-विलास तथा आराम संबंधी वस्तुओं पर व्यय करेंगे। आपको उपलब्धियों की प्राप्ति और संपत्ति की वृद्धि में बाधा आएगी तथा आपके ऊपर ऋण का बोझ पड़ सकता है या नुकसान हो सकता है जिसके लिए आपको आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिए।

व्यवसाय :

आपकी मानसिक शक्ति अच्छी है इसलिए आप संगीत, गायन, नृत्य और ललित कला का आनन्द लेंगे। आप नाटकीय गतिविधियों या ललित कला से संबंधित गतिविधियों से धनोपार्जन और जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप व्यावसायिक दृष्टि से सुदृढ़ हैं और अपने पिता के व्यवसाय में शामिल हो सकते हैं क्योंकि आपकी जन्म कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित शुक्र की दृष्टि नवम् भाव पर है।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आपको बड़ों का आशीर्वाद मिलेगा किन्तु अपने भाई-बहनों के साथ मतभेद भी हो सकता है जिससे परिवार में तनाव उत्पन्न होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- शुक्र - शुक्र
(11/06/2025 - 10/10/2028)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/06/2025 को प्रारंभ होकर 11/06/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 11/06/2025 को प्रारंभ होकर 10/10/2028 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

शुक्र शुभ ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 9वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी मानसिक क्षमता उत्तम होगी, मगर शरीर कमजोर हो सकता है। कला ओर संगीत में रुचि होगी, रोमांटिक होंगे। आर्थिक स्थिति मध्यम हो सकती है। किसी कांड में फंसने से बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली रोटी गाय को खिलाएं।

**अंतर्दशा :- शुक्र - सूर्य
(10/10/2028 - 11/10/2029)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 11/06/2025 को प्रारंभ होकर 11/06/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 10/10/2028 को प्रारंभ होकर 11/10/2029 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

इस अवधि में आपके घर में प्रसन्नता का वातावरण व्याप्त रहेगा। अधिकारीवर्ग से संपर्क लाभदायी रहेगा। हर क्षेत्र में सफलता मिलेगी, साहसी बनेंगे। तृतीय भाव में स्थित सूर्य बहुत शुभ होता है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य के निम्न टोटके आजमायें।

- 1 दूध में शहद डालकर पियें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- 2 गरीबों को आटा, गुड़ और तांबा दान करें।
- 3 सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - चन्द्र
(11/10/2029 - 11/06/2031)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 11/06/2025 को प्रारंभ हुई थी और 11/06/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 11/10/2029 से प्रारंभ होकर 11/06/2031 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है।

चंद्रमा मष्तिष्क और माता का कारक है।

छठे भाव में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अंतर्दशा में आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा, रंग में निखार आएगा। समाज में लोकप्रिय होंगे: हर काम में सफल रहेंगे। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। व्यापार में साझेदार से उत्तम संबंध होंगे। कभी-कभी संवेदनशील होने और क्रोध के कारण हानि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का मोती चांदी की अंगूठी में दायें हाथ की कनिष्ठिका में सोमवार को प्रातःकाल अंगूठी को दूध में धोकर, चंद्र का मंत्र पढ़ते हुए धारण करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - मंगल
(11/06/2031 - 10/08/2032)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/06/2025 को प्रारंभ होकर 11/06/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 11/06/2031 को प्रारंभ होकर 10/08/2032 को समाप्त होगी।

मंगल ऊर्जा का कारक है। षष्ठ भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 9, 12, 1 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में रति में वृद्धि होगी, प्रत्येक क्षेत्र में सफलता और विजय प्राप्त होगी। शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होंगे, फिजूलखर्ची बढ़ेगी। त्वचा रोग से बचाव करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन ब्रह्मा गायत्री मंत्र के 108 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - राहु
(10/08/2032 - 11/08/2035)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 11/06/2025 को प्रारंभ होकर 11/06/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 10/08/2032 को प्रारंभ होकर 11/08/2035 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

एकादश भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

विदेश से उत्तम धनार्जन हो सकता है। आप अपने कार्यक्षेत्र में प्रसिद्ध होंगे और लोकप्रियता प्राप्त करेंगे। कान की व्याधि से बचाव करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु
(11/08/2035 - 11/04/2038)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/06/2025 को आरंभ हुई थी और 11/06/2045 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 11/08/2035 को प्रारंभ होकर 11/04/2038 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 1, 3, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सिद्धांत और परंपरावादी होंगे। दर्शनशास्त्र और कानून के विद्वान बन सकते हैं। संयमित जीवनयापन करेंगे, प्रभु के निकट पहुंचने का प्रयास रहेगा। व्याख्याता होकर देश-विदेश की यात्रा कर सकते हैं। अपने से बड़ों, पिता और भाइयों के आज्ञाकारी रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - शनि
(11/04/2038 - 11/06/2041)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/06/2025 को प्रारंभ हुई थी और वद 11/06/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 11/04/2038 को प्रारंभ होकर 11/06/2041 को समाप्त

होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आपकी आय में कमी आ सकती है; कष्ट बढ़ेंगे। परिश्रम अधिक करने पर भी आमदनी कम होगी। वाणी कटु होगी, समाज से कट कर रहेंगे, मुख पर दुख का भाव होगा, बिना उद्देश्य के इधर-उधर भटकेंगे। आपको तरक्की के कई अवसर मिलेंगे, मगर फायदा उठाने में असफल रहेंगे। पारिवारिक जीवन दुखी हो सकता है। धातु, भंडारण, खनन और श्रमिकों से संबंधित व्यवसाय में लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए नौमुखी रुद्राक्ष चांदी में जड़वाकर दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में शनिवार के दिन शिवजी की प्रार्थना और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - बुध
(11/06/2041 - 11/04/2044)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/06/2025 को प्रारंभ हुई थी और वद 11/06/2045 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 11/06/2041 जो आपके लिए 11/04/2044 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। द्वितीय भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 8वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बुद्धिमान होंगे। व्यापार में दक्षता बढ़ेगी। धनवान बनेंगे। धार्मिक और दार्शनिक विषयों का ज्ञान बढ़ेगा। दान धर्म में धन खर्च करेंगे लेकिन कमाई भी अच्छी होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 6 रत्ती का पन्ना सोने की अंगूठी में बुधवार के दिन प्रातःकाल मध्यमा अंगुली में प्रार्थना के बाद धारण करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - केतु
(11/04/2044 - 11/06/2045)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/06/2025 को प्रारंभ हुई थी और 11/06/2045 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 11/04/2044 को प्रारंभ होकर 11/06/2045 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक

उत्थान का परिचायक है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है।

पंचम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के 11वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको भावनात्मक कष्ट हो सकते हैं। आप अत्याधिक संवेदनशील हो सकते हैं। सगे-संबंधियों से आपका व्यवहार असामान्य रह सकता है। आप छोटी-छोटी बातों का बुरा मान सकते हैं। भावनाओं में बहकर आप गलत कदम उठाएंगे और बाद में पछताएंगे। कोई भी काम जल्दबाजी में न करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान जी की उपासना करें और मंगलवार, शनिवार को उपवास करें। उपवास को केवल मीठी वस्तुओं से तोड़ें और नमक का प्रयोग न करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



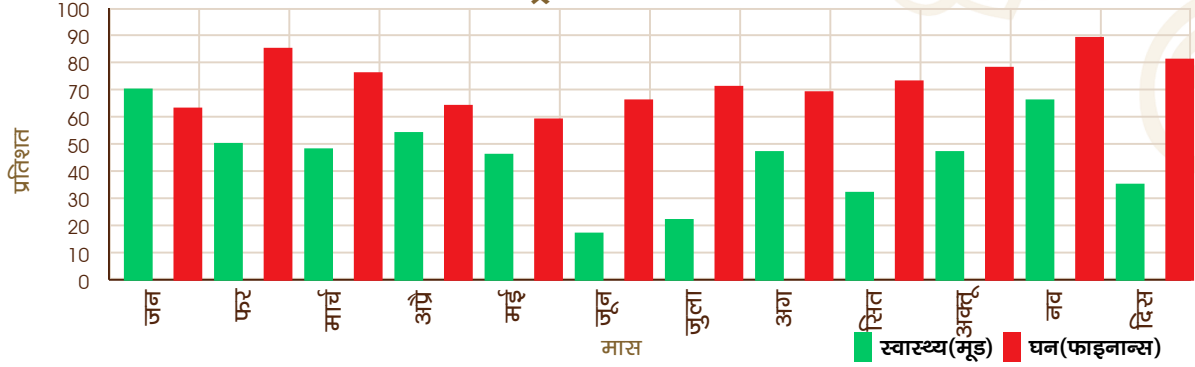
एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रुचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते हैं।

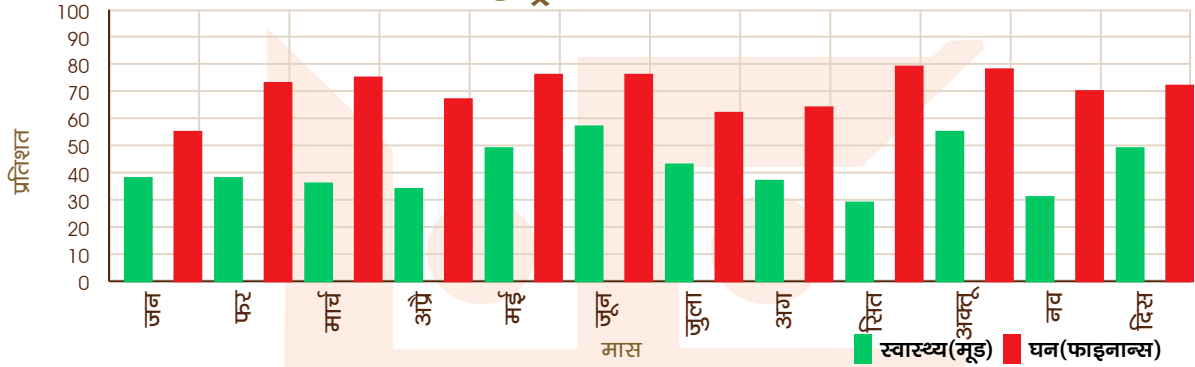
अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापकम के अनुसार हैं। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

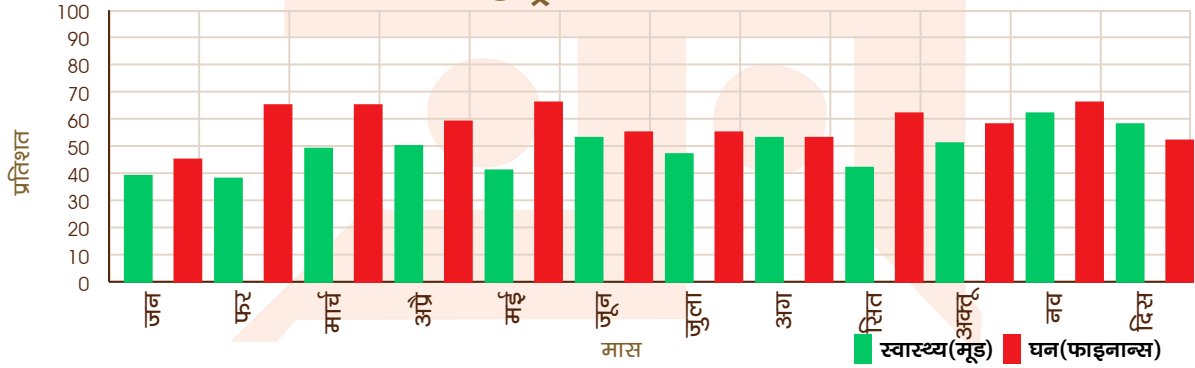
एस्ट्रोग्राफ - 2025



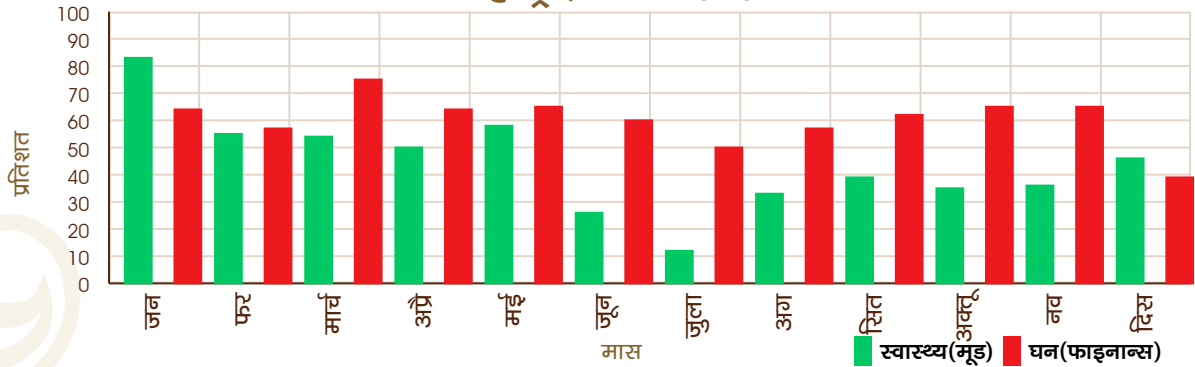
एस्ट्रोग्राफ - 2026



एस्ट्रोग्राफ - 2027



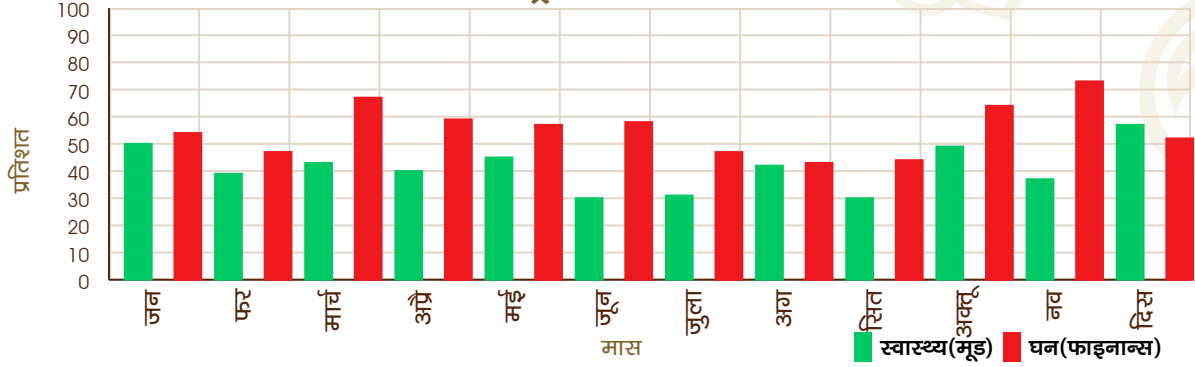
एस्ट्रोग्राफ - 2028



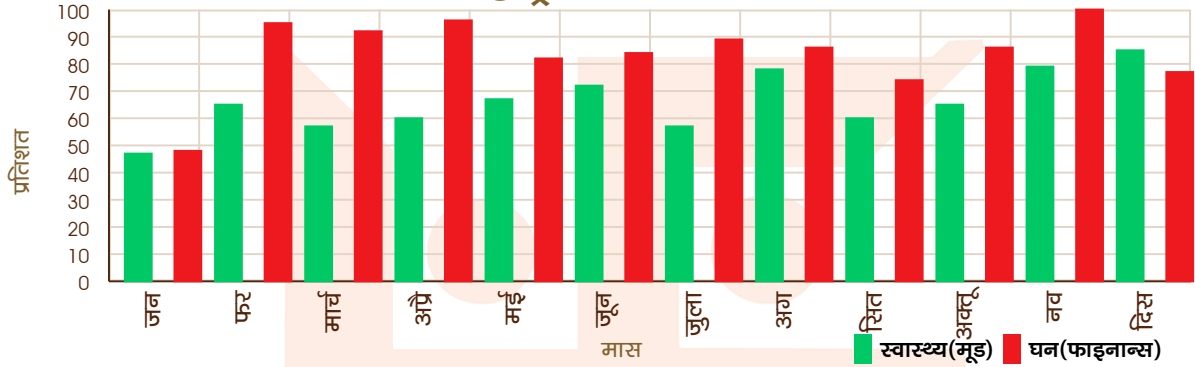
FUTUREPOINT
Astro Solutions



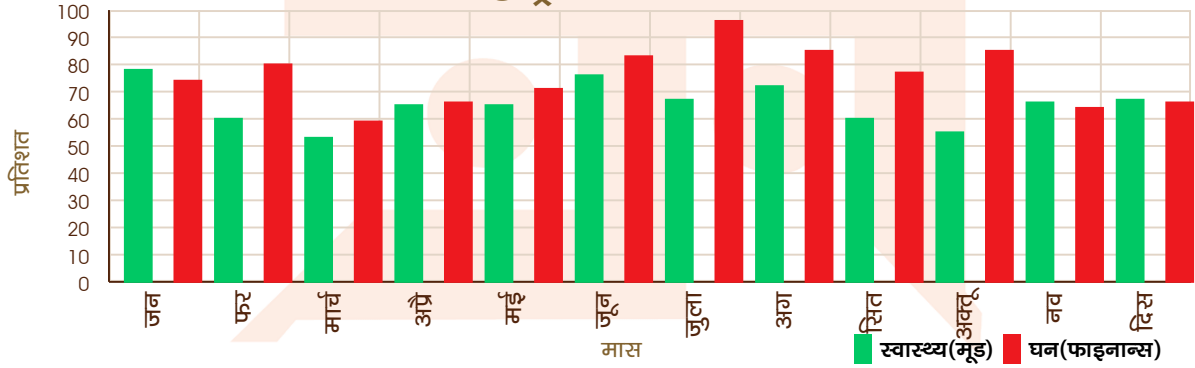
एस्ट्रोग्राफ - 2029



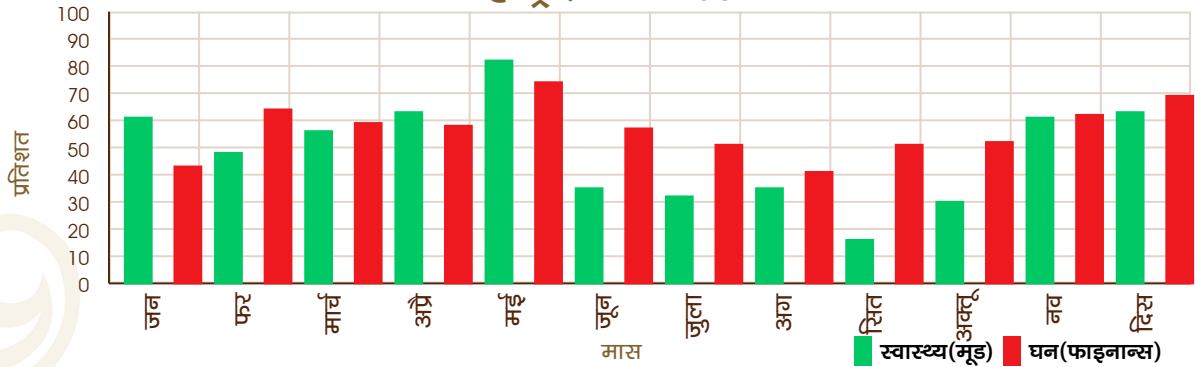
एस्ट्रोग्राफ - 2030



एस्ट्रोग्राफ - 2031



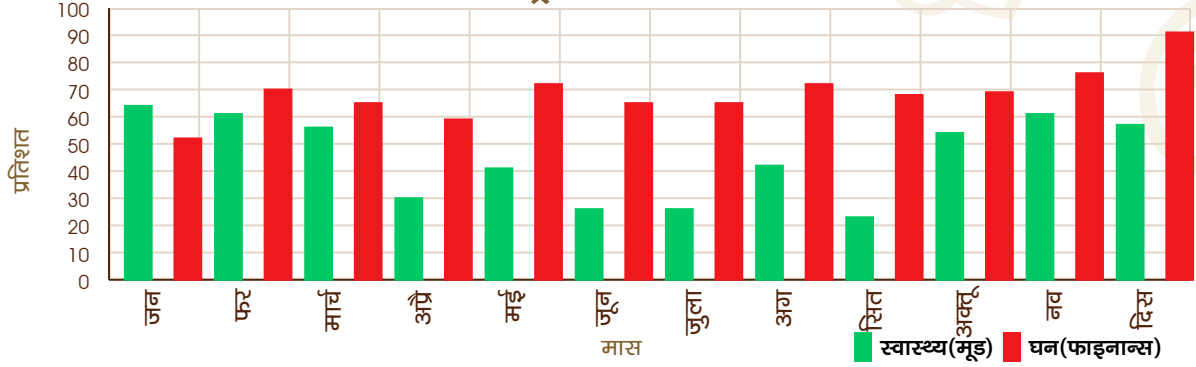
एस्ट्रोग्राफ - 2032



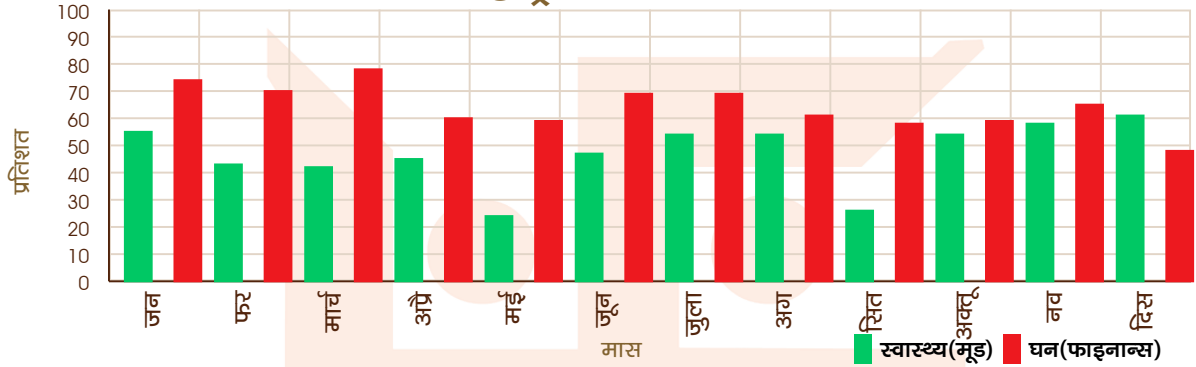
FUTUREPOINT
Astro Solutions



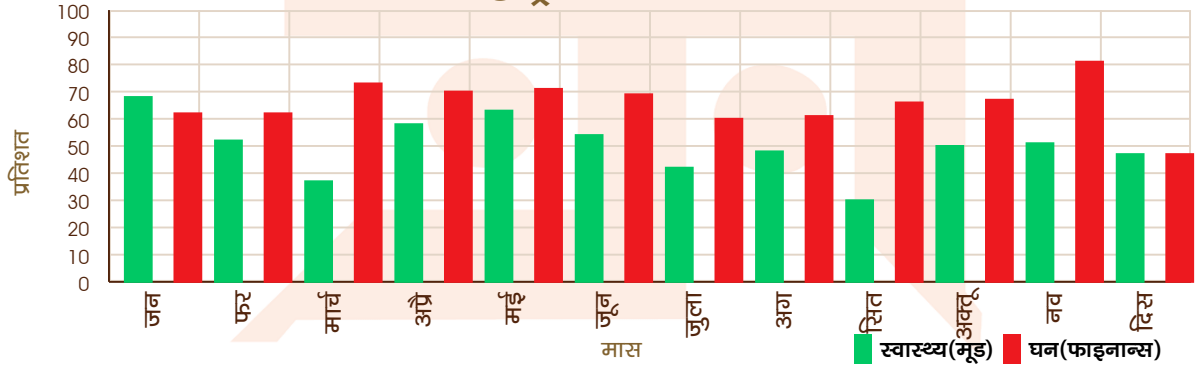
एस्ट्रोग्राफ - 2033



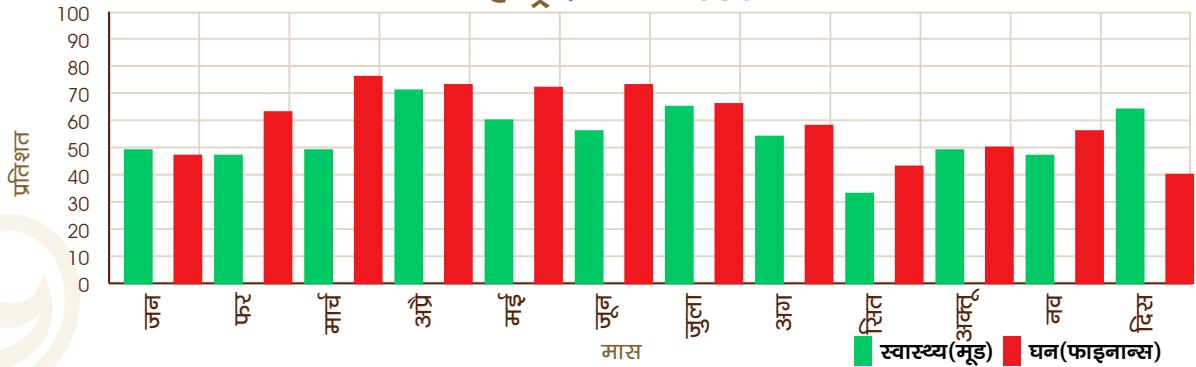
एस्ट्रोग्राफ - 2034



एस्ट्रोग्राफ - 2035



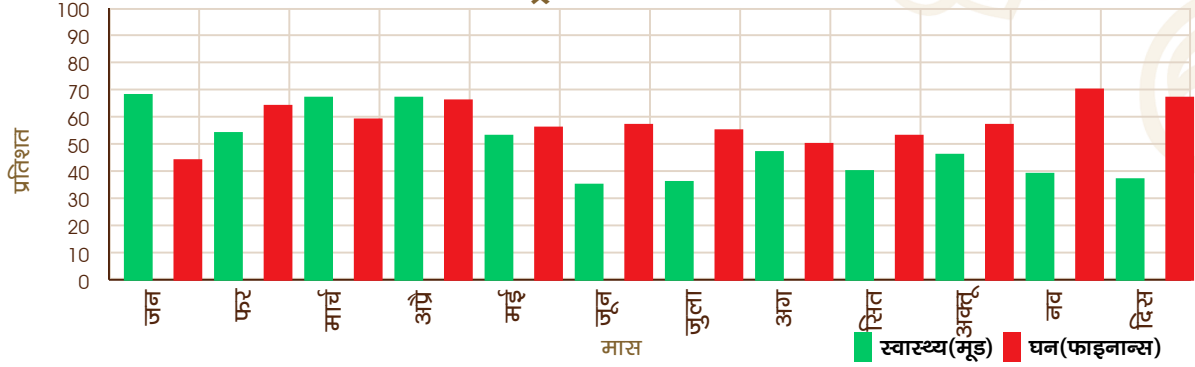
एस्ट्रोग्राफ - 2036



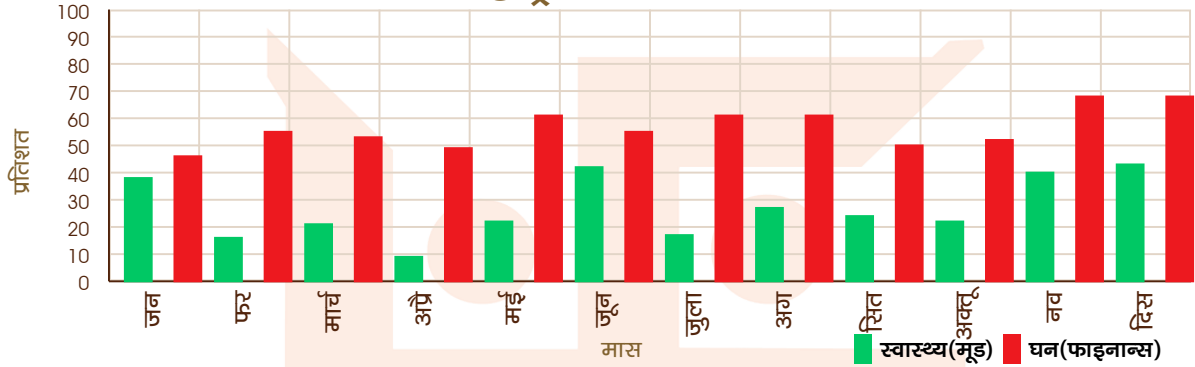
FUTUREPOINT
Astro Solutions



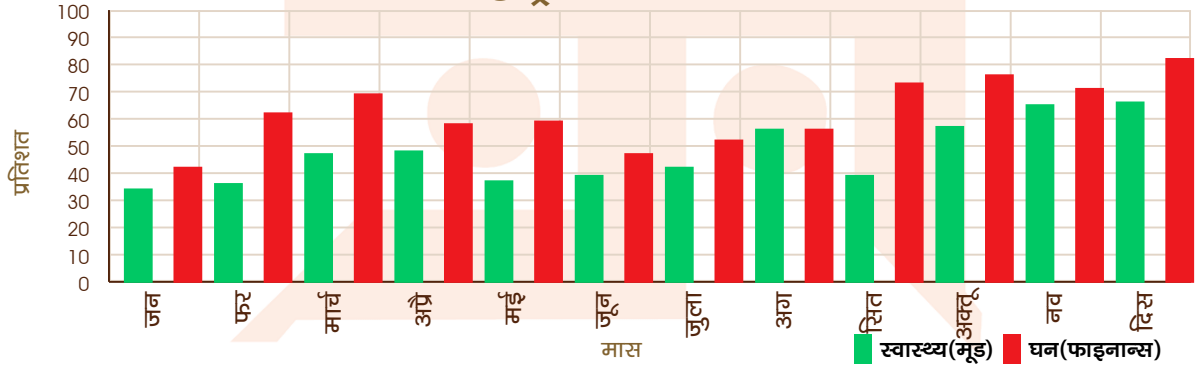
एस्ट्रोग्राफ - 2037



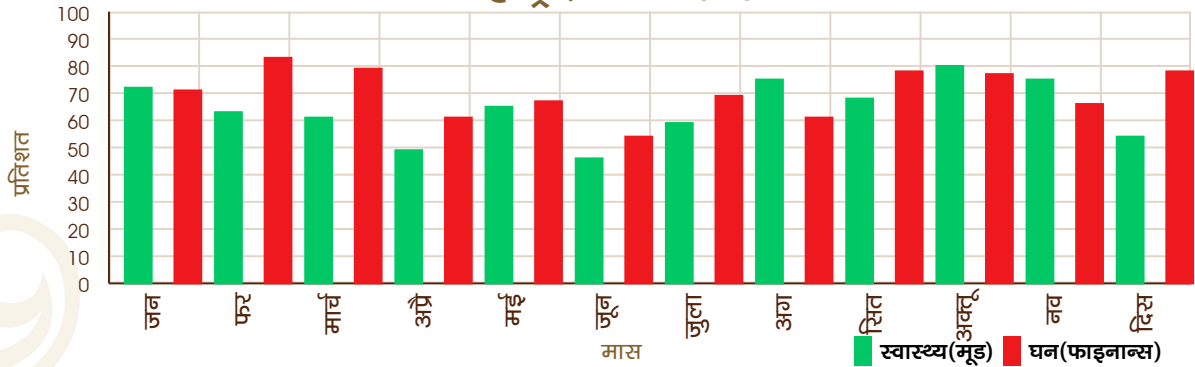
एस्ट्रोग्राफ - 2038



एस्ट्रोग्राफ - 2039



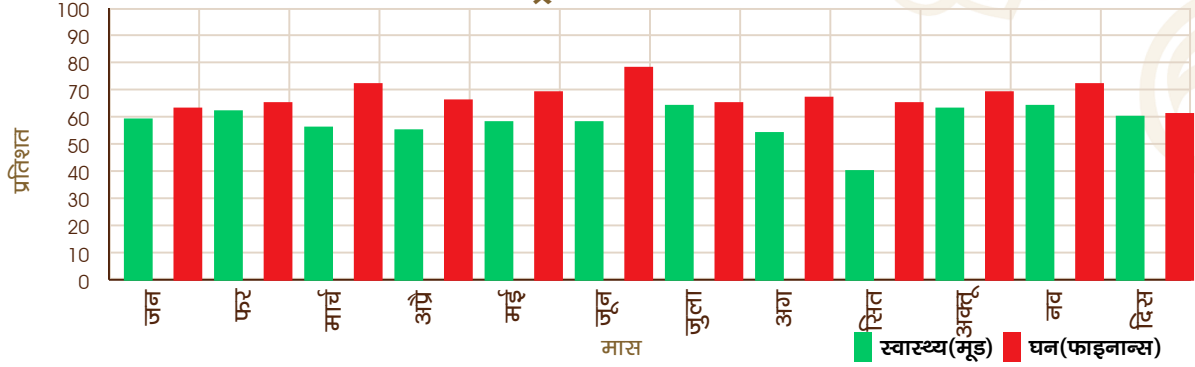
एस्ट्रोग्राफ - 2040



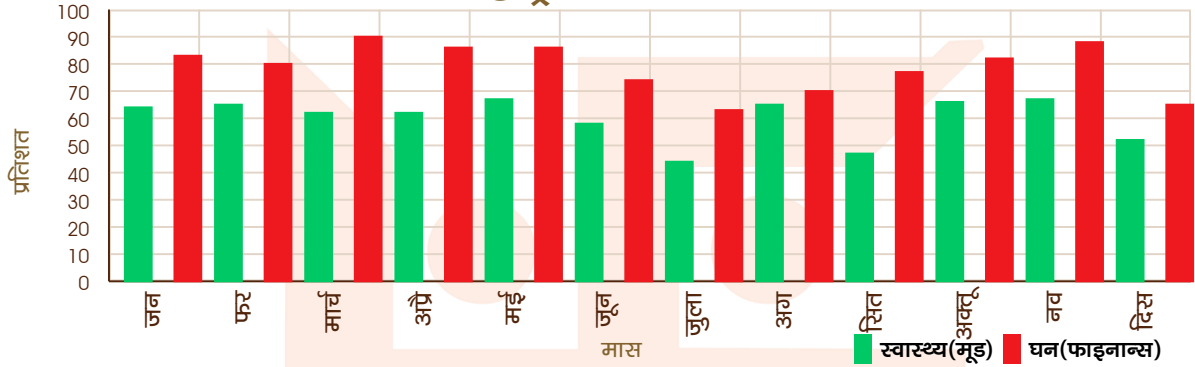
FUTUREPOINT
Astro Solutions



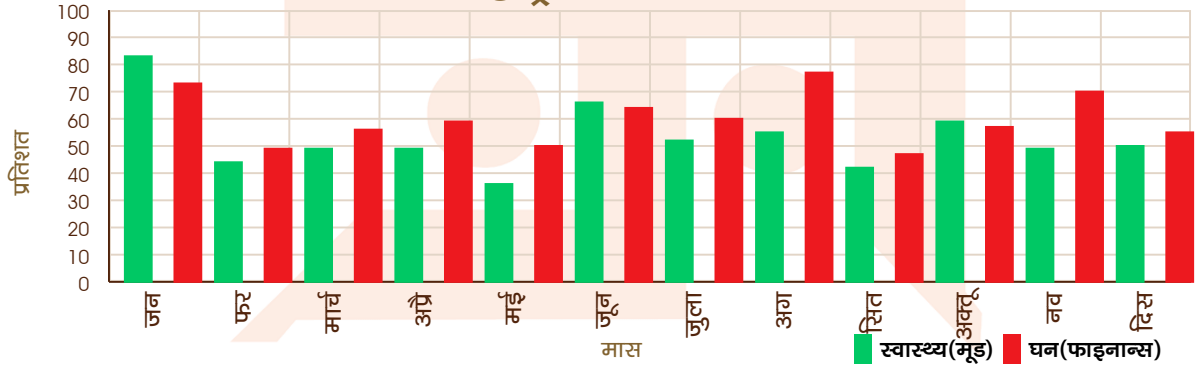
एस्ट्रोग्राफ - 2041



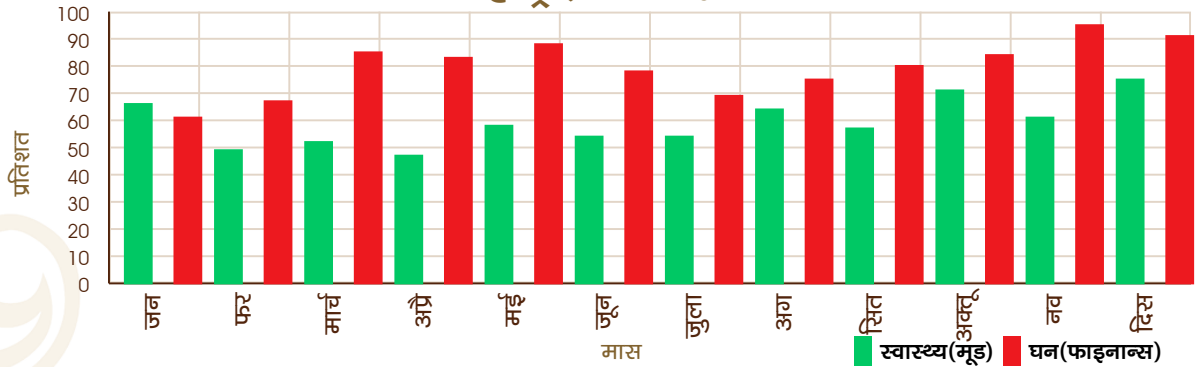
एस्ट्रोग्राफ - 2042



एस्ट्रोग्राफ - 2043



एस्ट्रोग्राफ - 2044



FUTUREPOINT
Astro Solutions



योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि ।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक् ।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ ॥

॥ सारावली ॥ अ.14/श्लोक 1, 6 ॥

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है ।

योग कारक ग्रह : बुध, शनि, सूर्य

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्त्विक प्रवृत्ति वाले होंगे ।

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्रयाद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः ।

॥ सारावली ॥ अ. 35/श्लोक 2 ॥

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है ।

योग कारक ग्रह : चंद्र, शुक्र, शनि

योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे ।

छत्रयोग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश ।
सुसंसारसौभाग्यसन्तानलक्ष्मी
निवासो यशस्वी सुभाषी मनीषी ।
अमात्यो महीशस्य पूज्यो धनाढ्यः
स्फुरत्तीक्ष्णबुद्धिर्भवेच्छत्रयोगे ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 4/श्लोक 44, 49 ॥



FUTUREPOINT
Astro Solutions



यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव में शुभग्रह हों या शुभ ग्रह से पंचम भाव निरीक्षित हो तथा पंचमेश अस्त न हो और वह स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो छत्रयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु, शुक्र

योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सौभाग्यशाली, पुत्रवान, धनवान, यशस्वी, बुद्धिमान, प्रखर वक्ता, तेज बुद्धिवाले और राजसुख से युक्त राजा के मंत्री होंगे। आप राजसरकार से सम्मानित होंगे। आपको पंचम भाव से संबन्धित सभी सुख प्राप्त होंगे।

काम योग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः

स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।

परदारपराङ्मुखो भवेद्दरदारात्मजबन्धुसंश्रितः।

जनकादधिकः शुभैर्गुणैर्महनीयां श्रियमेति कामजः॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6 / श्लोक 44, 51 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा सप्तम स्थान में शुभ ग्रह बैठे हो एवं सप्तम भाव का स्वामी स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो कामयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दूसरे के स्त्री में आसक्त नहीं होंगे और आपको उत्तम जीवनसाथी, सन्तान और बन्धुओं का सुख प्राप्त होगा। आप शुभ गुणों से युक्त लक्ष्मीवान् होंगे। आप अपने पिता से अधिक उच्च पद प्राप्त करेंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।

अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः॥

वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो

भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।

ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो

योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः॥

॥ सारावली ॥ अ. 13/श्लोक 1, 5 ॥

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-41 ॥

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान् एवं धैर्यवान् होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांघादियुते विशेषात् ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-47 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांघंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्ध्वरोगमत्र ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-49 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, मंगल, केतु, गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको

कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ.-285 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।

तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-59 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो तृतीये बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।

लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्य प्राकारसंयुतम् ॥

॥ जातकपारिजात ॥ अ.12/श्लो.-148 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, शनि, मंगल

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमात्रीतिमान् भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-32 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र

योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।

वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-35 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः ।

॥ जातकपारिजात ॥ अ. 13/श्लो.-9 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु,शुक्र

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एक पुत्र योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ.- 295 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



योग कारक ग्रह : केतु

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे ।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम् ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।

सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्तराशंशतः ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराशंशकेऽपि वा ।

पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-19 ॥

यदि जन्मकुंडली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,राहु

योग की संभावना : 3 में 1



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रस्तगे चोपचयान्विते वा ।

कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-62 ॥

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,शुक्र,बुध,गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरान्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

”सपारिजातद्युचरः सुखानि ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिसकी पत्रिका के “पारिजात” भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल,गुरु,राहु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “पारिजात” वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

”नीरोगतामुत्तमवर्गयातः ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सिंहासनांश योग

”सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका में “सिंहासनांश” भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “सिंहासनांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

वासि योग

”व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात् ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो “वासि” योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : बुध, शनि, सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वासि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।